

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ① الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ②
 الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ③ مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ④ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ
 نَسْتَعِينُ ⑤ أَهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ⑥ صِرَاطَ الَّذِينَ
 أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ⑦

Theme	
Supplication to Allah for guidance taught by Allah Himself.	अल्लाह ही की सिखाई हुई हिदायत के लिए अल्लाह से दुआ।
Tarjumanī	
In the name of Allah, the Compassionate, the Merciful. All praise is for Allah, the Rabb of the Worlds. The Compassionate, the Merciful. Master of the Day of Judgment. You Alone we worship and You Alone we call on for help. Guide us to The Right Way. The Way of those whom You have favored; not of those who have earned Your wrath, or of those who have lost The Way.	अल्लाह के नाम से जो बेइंतहा मेहरबान और रहम फ़रमाने वाला है तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जो तमाम कायनात का रब है, निहायत मेहरबान और रहम फरमानेवाला है, रोज़े-जज़ा का मालिक है हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं हमें सीधा रास्ता दिखा, उन लोगो का रास्ता जिनपर तूने इनआम फ़रमाया, जो मातूब नहीं हुए, जो भटके हुए नहीं हैं
Tafsir	
Praise be to Allah, the Lord of all the worlds, [1:1]	तमाम तआरिफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है। [1:1]
the All-Merciful, the Most	बड़ा मेहरबान, निहायत रहम

Merciful, [1:2]	वाला। [1:2]
the King of the Day of Repayment. [1:3]	बदले के दिन का बादशाह। [1:3]
You alone we worship. You alone we ask for help. [1:4]	हम सिर्फ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ तुझ ही से मदद मांगते हैं। [1:4]
Guide us on the Straight Path, [1:5]	हमें सीधा रास्ता दिखा। [1:5]
the Path of those You have blessed, [1:6]	उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इनाम किया। [1:6]
not of those with anger on them, nor of the misguided. [1:7]	न उन लोगों का जिन पर ग़ज़ब किया गया और न गुमराहों का। [1:7]
This Ruku (Surah Fatiha) contains four topics.	इस रुकू (सूरह फ़ातिहा) में चार मज़ामीन बयान हुए हैं।
Topic one: its virtues and names	पहला मौज़ू: इस की फ़ज़ीलतें और नाम
There are seven points in it.	इस में सात नुक्क़ात हैं।
At-Tirmidhi related from Ubayy ibn Kab that the Messenger of Allah ﷺ said, 'Allah has not revealed anything like the Mother of the Book either in the Torah or the Gospel. It is the Seven Mathani (Oft-repeated). "It is divided	तिर्मिज़ी ने उबय्य बिन कअब (रज़ि.) से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह ने उम्मुल-किताब जैसी कोई चीज़ न तौरात में नाज़िल की है और न इंजील में। यह सब्अ मथानी (बार-बार पढ़ी जाने वाली सात आयतें) हैं। 'यह मेरे और

between Me and My slave, and My slave has what he asks for.” Malik transmitted this from al-Ala ibn Abd ar-Rahman ibn Yaqub who said that Aba Said, the freedman of Abdullah ibn Amir ibn Kurayz, reported that the Messenger of Allah ﷺ called to Ubayy ibn Kab while he was praying; and he mentioned the hadith. Ibn Abd al-Barr said, ‘No further name is known for Abu Said. He is counted as one of the people of Madinah.’ He transmitted from Abu Hurayrah and this hadith is mursal. The hadith is also related from Abu Said ibn al-Mualla one of the Companions, whose name is also not known. Hafs ibn Asim and Ubayd ibn Hunayn related it from him. This is how it is stated in at-Tamhid. ‘His name is not found.’ He mentioned the disagreement about his name in the Book of the Companions. Al-Bukhari transmitted the hadith from Abu Said ibn al-Mualla: ‘I was praying and the Messenger of Allah ﷺ called	मेरे बंदे के दरमियान तक़सीम है, और मेरे बंदे को वही मिलेगा जो वह मांगेगा।” मालिक ने इसे अल-अला बिन अब्दुर्रहमान बिन याकूब से रिवायत किया, जिन्होंने कहा कि अबू सईद, जो अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन कुरैज़ के आज़ाद किए हुए गुलाम थे, ने बयान किया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने उबय्य बिन कअब (रज़ि.) को उस वक़्त पुकारा जब वह नमाज़ पढ़ रहे थे; फिर उन्होंने यह हदीस बयान की। इब्न अब्दुल-बर्र ने कहा: “अबू सईद का इसके अलावा कोई और नाम मालूम नहीं। उन्हें अहल-ए-मदीना में शुमार किया जाता है।” उन्होंने यह रिवायत अबू हुरैरा (रज़ि.) से नक़ल की है और यह हदीस मुरसल है। यह हदीस अबू सईद बिन अल-मुअल्ला (रज़ि.) से भी रिवायत की गई है जो सहाबा में से हैं, जिनका नाम भी मशहूर नहीं। हफ़्स बिन आसिम और उबैद बिन हुनैन ने उनसे यह रिवायत नक़ल की है। <i>अत-तमहीद</i> में इसी तरह बयान हुआ है: “उनका नाम मालूम नहीं।” उन्होंने किताबुस-सहाबा में उनके नाम के बारे में इख़्तिलाफ़ का भी ज़िक्र किया है। बुखारी ने अबू सईद बिन अल-मुअल्ला (रज़ि.) से यह हदीस रिवायत
--	--

me but I did not answer until I had finished praying. Then I went to him and he asked, "What kept you from coming to me? Does not Allah say, Respond to Allah, and to the Messenger, when He calls you?" Then he said to me, "I will teach you a surah which is the greatest of the surahs in the Quran before you leave the mosque." Then he took my hand. When the Prophet ﷺ was about to leave, I said to him, "Did you not say, 'I will teach you a surah which is the greatest of the surahs in the Quran?' He said, "Praise be to Allah, the Lord of all the worlds, it is the Seven Oft-Repeated ones and the Immense Quran that I have been given." Ibn Abd al-Barr and others said that Abu Said ibn al-Mualla was one of the esteemed men and masters of the Ansar. Al-Bukhari alone has him, and his name was Rafi. It is also said that it was al-Harith ibn Nufay ibn al-Mu'allā. It is also said that it	की है: "मैं नमाज़ पढ़ रहा था कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे पुकारा, मगर मैंने नमाज़ खत्म करने तक जवाब न दिया। फिर मैं आप ﷺ के पास गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: 'तुम्हें मेरे पास आने से किस चीज़ ने रोका? क्या अल्लाह ने यह नहीं फ़रमाया: अल्लाह और रसूल की पुकार का जवाब दो जब वह तुम्हें बुलाएँ?' फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: 'मैं तुम्हें मस्जिद से निकलने से पहले कुरआन की सबसे अज़ीम सूरत सिखाऊँगा।' फिर आप ﷺ ने मेरा हाथ पकड़ा। जब नबी ﷺ मस्जिद से निकलने लगे तो मैंने अर्ज़ किया: 'क्या आप ﷺ ने यह नहीं फ़रमाया था कि आप मुझे कुरआन की सबसे अज़ीम सूरत सिखाएँगे?' आप ﷺ ने फ़रमाया: 'अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन — यही सब्अ मथानी हैं और यही कुरआन-ए-अज़ीम है जो मुझे अता किया गया है।'" इब्न अब्दुल-बर्र और दीगर अहल-ए-इल्म ने कहा कि अबू सईद बिन अल-मुअल्ला (रज़ि.) अंसार के मुअज्ज़ज़ लोगों और सरदारों में से थे। बुखारी ने उनकी रिवायत तन्हा नक़ल की है, और उनका नाम राफ़ि था। यह भी कहा गया है कि उनका नाम अल-हारिस बिन नुफ़ै बिन
---	---

was Aws ibn al-Mualla and Abu Said ibn Aws ibn al-Mu'allā. He died in 74 AH at the age of sixty-four. He was the first to pray towards the qiblah when it was changed as will be mentioned. There is an isnad of the hadith of Abu Yazid ibn Zuray from Rawḥ ibn al-Qasim from al-Ala ibn Abd ar-Rahman from his father from Abu Hurayrah who said, 'The Messenger of Allah ﷺ came out to Ubayy while he was praying.' He mentioned the gist of the hadith.	अल-मुअल्ला था। यह भी कहा गया है कि वह औस बिन अल-मुअल्ला या अबू सईद बिन औस बिन अल-मुअल्ला थे। उनका इंतिकाल 74 हिजरी में चौसठ साल की उम्र में हुआ। क़िब्ला तब्दील होने के बाद क़िब्ला की तरफ़ नमाज़ पढ़ने वालों में वह सबसे पहले थे, जैसा कि आगे ज़िक्र आएगा। इस हदीस की एक सनद अबू यज़ीद बिन जुरै से भी मर्वी है, जो रौह बिन अल-क्रासिम से, वह अल-अला बिन अब्दुर्रहमान से, वह अपने वालिद से, और वह अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा: "रसूलुल्लाह ﷺ उबय्य के पास आए जबकि वह नमाज़ पढ़ रहे थे।" फिर उन्होंने इस हदीस का खुलासा बयान किया।
Ibn al-Anbari mentioned in his Kitab ar-radd from his father from Abu Ubaydullah al-Warraq from Abu Dawud from Shayban from Mansur that Mujahid said, 'Iblis, may Allah curse him, lamented four times: when he was cursed, when he fell from the Garden, when Muhammad ﷺ was sent, and when the Fatihah of the Book	इब्न अल-अनबारी ने अपनी किताब अल-रद्द में अपने वालिद के वास्ते से, वह अबू उबैद अल्लाह अल-वर्राक से, वह अबू दाऊद से, वह शैबान से, वह मंसूर से रिवायत किया कि मुजाहिद ने कहा: "इब्लीस, अल्लाह उस पर लानत करे, चार मर्तबा नौहा व फ़रियाद में मुब्तला हुआ: एक बार जब उस पर लानत की गई, दूसरी बार जब वह जन्नत से उतारा गया,

was revealed, and it was revealed in Madinah.’	तीसरी बार जब मुहम्मद ﷺ मबऊस किए गए, और चौथी बार जब फ़ातिहतुल किताब नाज़िल हुई, और वह मदीना में नाज़िल हुई।"
Scholars disagree about the relative excellence of some surahs and ayahs over others, and some of the Beautiful Names of Allah over others. Some people say that none of them are better than any other because all are the Speech of Allah, and the same lack of preference applies to His Names. Shaykh Abu-l-Hasan al-Ashari, Qadi Abu Bakr ibn at-Tayyib, Abu Hatim Muḥammad ibn Hibban as-Sibtī and a group of fuqaha believed this, and something to that effect is related from Malik. Yahya ibn Yahya said that it is an error to consider one part of the Quran better than other parts. Similarly Malik disliked the repetition of one particular surah rather than others. In reference to the words of Allah Almighty: ‘We bring one better than it or equal	विद्वानों के बीच इस बात में मतभेद है कि कुछ सूरतें और आयतें दूसरी के मुकाबले में ज़्यादा अफ़ज़ल हैं या नहीं, और इसी तरह अल्लाह तआला के कुछ अस्मा-ए-हुस्ना को दूसरे नामों पर फ़ज़ीलत हासिल है या नहीं। कुछ लोगों का कहना है कि इनमें से कोई भी किसी दूसरे से बेहतर नहीं, क्योंकि सब अल्लाह का कलाम हैं, और यही हुक्म उसके नामों के बारे में भी है। शैख अबू अल-हसन अशअरी, क़ाज़ी अबू बक्र इब्न अत-तय्यिब, अबू हातिम मुहम्मद बिन हिब्बान अस-सिब्ती और फुक़हा के एक समूह का यही मत था, और इसी अर्थ की बात इमाम मालिक से भी रिवायत है। यह्या बिन यह्या ने कहा कि कुरआन के किसी हिस्से को दूसरे हिस्से से बेहतर समझना गलती है। इसी तरह इमाम मालिक एक ही सूरत को बार-बार पढ़ने को, दूसरी सूरतों के मुकाबले में, नापसंद करते थे। अल्लाह तआला के इस कथन के बारे में: "हम उससे बेहतर या उसके

to it', Malik says that this means 'one containing judgment rather than one subject to abrogation.' Ibn Kinanah related the same as all that from Malik.	जैसी ले आते हैं", इमाम मालिक फ़रमाते हैं कि इससे मुराद है: "ऐसी आयत जो हुक्म रखती हो, न कि वह जिसे मंसूख किया गया हो।" इब्न किनाना ने भी इमाम मालिक से इसी तरह की रिवायत नक़ल की है।
Some of them use the following argument: 'The best is only recognised by comparison with what might be considered slightly the Speech of Allah and there can be no deficiency in the Speech of Allah. As-Sibt stated: 'The meaning of the words "Allah has not revealed anything like the Mother of the Quran either in the Torah or the Gospel" is that Allah Almighty does not give those who recite the Torah or the Gospel a reward like the one He gives to someone who recites the Mother of the Qur'an, since Allah has favoured this community over other communities and He has given a greater excellence to the recitation of His Words in His Revelation than He gave to others for reciting His Words.	"इन में से बा'ज़ लोग ये दलील देते हैं: "अफ़ज़लियत का त'य्युन सिर्फ़ उस सूरत में होता है जब किसी चीज़ का मुवाज़ना ऐसी चीज़ से किया जाए जिस में कुछ कमी हो, हालाँकि अल्लाह के कलाम में किसी क्रिस्म की कोई कमी नहीं हो सकती।" अस्सिब्ती ने कहा: "नबी ﷺ के इस फ़रमान का मतलब कि 'अल्लाह ने उम्मुल-कुरआन (सूरए फ़ातिहा) जैसी कोई चीज़ न तौरेत में नाज़िल की है न इंजील में ये है कि अल्लाह तआला तौरेत या इंजील पढ़ने वालों को वो अज़्र नहीं देता जो वो उम्मुल-कुरआन पढ़ने वाले को देता है, क्योंकि अल्लाह ने इस उम्मत को दूसरी उम्मतों पर फ़ज़ीलत दी है, और अपनी वही में अपने कलाम की तिलावत के लिए इस उम्मत को वो बरतरी अता की है जो दूसरों को नहीं दी। ये इस उम्मत पर अल्लाह का एक ख़ास फ़ज़ल है।" और नबी ﷺ के

It is a favour from Him to this Community. The words of the Prophet ﷺ, “the greatest of the surahs”, means that it is the greatest in reward. His words do not mean that some parts of the Quran are better than other parts.’	इस फ़रमान “सब से अज़ीम सूरत” का मतलब ये है कि वो अज़्र के एतिबार से सब से अज़ीम है। इस का ये मतलब नहीं कि कुरआन के बा'ज़ हिस्से दूसरे हिस्सों से बेहतर हैं।”
Some people have said that there is a certain kind of superiority which may be seen in such ayahs as in the words of the Almighty, ‘Your God is One God. There is no god but Him, the All-Merciful, the Most Merciful’, the Throne Verse, the end of Surat al-Hashr, and Surat al-Ikhlās, which are among the proofs of His Oneness and His attributes, and that does not exist, for instance, in such ayahs as ‘Perish the hands of Abu Lahab’. Superiority occurs through the wondrous meanings and how numerous they are, not in respect of the quality of the language. This is the truth. Those who said that there was preference included	”कुछ लोगों ने कहा है कि एक ख़ास किस्म की फ़ज़ीलत कुछ आयात में देखी जा सकती है, जैसे अल्लाह तआला के इस क़ौल में: “तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है” , आयतुल कुर्सी, सूरह अल-हश्र के आखिरी हिस्से, और सूरह अल-इख़लास में—जो उसकी वहदानियत और सिफ़ात के दलाइल में से हैं—जबकि ऐसी फ़ज़ीलत मिसाल के तौर पर इस आयत में नहीं पाई जाती: “अबू लहब के हाथ टूट जाएँ”। फ़ज़ीलत मआनी की गहराई और उनकी कसरत की वजह से होती है, न कि ज़बान के मयार के एतिबार से। यही दुरुस्त बात है। जिन लोगों ने फ़ज़ीलत को माना, उनमें इस्हाक़ बिन राहवयह के साथ दूसरे उलेमा और मुतकल्लिमून भी शामिल हैं।

Ishaq ibn Rahawayh as well as other scholars and mutakallimun. It is the position preferred by Qadi Abu Bakr ibn al-Arabi and Ibn al-Hassar who go by the hadith of Ubayy ibn Kab, in which he said, ‘The Messenger of Allah ﷺ asked me, “Ubayy, which of the ayahs of the Book is the greatest?” I replied, “Allah, there is no god but Him, the Living, the Self-Sustaining” [i.e. the Throne Verse.] He struck my chest and said, “May Allah give you joy, Abu-l-Mundhir!”’ Al-Bukhari and Muslim transmitted it. Ibn al-Hassar said, ‘I am surprised at those who differ when such texts exist.’	यही मौक़िफ़ क़ाज़ी अबू बक्र इब्न अल-अरबी और इब्न अल-हस्सार ने इख़्तियार किया है, जो उबै बिन कअब रज़ि. की हदीस पर एतमाद करते हैं। उन्होंने कहा: “रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे पूछा: ‘उबै! किताब की कौन सी आयत सबसे अज़ीम है?’ मैंने जवाब दिया: ‘अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िंदा है, खुद क़ायम रखने वाला है’ [यानी आयतुल कुर्सी]। आपने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया: ‘ऐ अबुल-मुन्ज़िर! अल्लाह तुम्हें इल्म की खुशी अता फ़रमाए!’” इसे बुखारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है। इब्न अल-हस्सार ने कहा: “मुझे उन लोगों पर तअज्जुब है जो ऐसे वाज़ेह नुसूस के बावजूद इख़्तिलाफ़ करते हैं।”
Ibn al- Arabi said, ‘He says, “Allah has not revealed its like in the Torah, the Gospel or the Quran.” He was silent about other Scriptures, like the Revealed Scrolls, the Psalms and other things because this mentions the best of them. When something is the best of	“इब्नुल-अरबी ने कहा: “वह फरमाते हैं: ‘अल्लाह ने इस जैसी कोई चीज़ न तौरेत में नाज़िल की है, न इंजील में और न कुरआन में।’ उन्होंने दूसरे सहीफ़ों, जैसे नाज़िल किए गए सहीफ़े, ज़बूर वगैरह का ज़िक्र नहीं किया, क्योंकि यहाँ उनमें से बेहतरीन का ज़िक्र किया गया है। जब कोई चीज़ बेहतरीन में भी सबसे बेहतरीन

the best, then it is the best of all. It is as you say, “Zayd is the best of scholars,” and so he is the best of all.’	हो, तो वह सब में सबसे बेहतर होती है। यह ऐसा ही है जैसे तुम कहते हो: ‘ज़ैद उलमा में सबसे बेहतर है’, तो वह सब में सबसे बेहतर हुआ।”
The Fatihah possesses attributes which other surahs do not possess, to the extent that it is said that the entire Quran is contained in it. It consists of twenty-five words which embrace all the sciences of the Quran. Part of its distinction is that Allah has divided it between Himself and His slaves, and the prayer is only valid with it, and no action is necessary to gain a reward for it. It is in this sense that it is the Mother of the Immense Quran. Surat al-Ikhlās is considered to be equivalent to a third of the Quran. The Fatihah contains tawhid, judgements and admonition and Surat al-Ikhlās contains all of tawhid. It also explains the words of the Prophet ﷺ to Ubayy, ‘Ubayy, which of the ayahs of the Book is the greatest?’ to which he replied, ‘Allah, there is no god	“सूरह फ़ातिहा में ऐसी ख़ुसूसियात पाई जाती हैं जो दूसरी सूरतों में नहीं मिलतीं, यहाँ तक कहा जाता है कि पूरा कुरआन उसी में समोया हुआ है। यह पच्चीस अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल है जो कुरआन के तमाम उलूम को अपने अंदर समेटे हुए हैं। इसकी एक इम्तियाज़ी शान यह है कि अल्लाह तआला ने इसे अपने और अपने बंदों के दरमियान तक्सीम किया है, और नमाज़ इसी के बग़ैर दुरुस्त नहीं होती, और इसके लिए अज़्र हासिल करने को किसी इज़ाफ़ी अमल की ज़रूरत नहीं। इसी मानी में इसे “उम्मुल-कुरआन अल-अज़ीम” कहा जाता है। सूरह अल-इख़लास को कुरआन के एक तिहाई के बराबर करार दिया गया है। सूरह फ़ातिहा में तौहीद, अहकाम और नसीहत तीनों शामिल हैं, जबकि सूरह अल-इख़लास मुकम्मल तौर पर तौहीद पर मुश्तमिल है। इसी से नबी ﷺ के इस फ़रमान की वज़ाहत होती है जो आपने उबै से फ़रमाया: “उबै! किताब

but Him, the Living, the Self-Sustaining.’ It is the greatest ayah because it contains every aspect of tawhid. In the same way the Prophet’s words, ‘The best of what I and the Prophets before have said is “There is no god but Allah alone with no partner”,’ indicate that that is the best form of dhikr because they are words which contains all the knowledge of tawhid. The Fatihah, on the other hand, contains tawhid, worship and admonition. That is not impossible in Allah’s power.	की कौन सी आयत सबसे अज़ीम है?" उन्होंने जवाब दिया: "अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िंदा है, खुद क़ायम रखने वाला है" । यह सबसे अज़ीम आयत इसलिए है कि इसमें तौहीद के तमाम पहलू शामिल हैं। इसी तरह नबी ﷺ का यह फ़रमान: "सबसे अफ़ज़ल कलाम जो मैंने और मुझसे पहले अंबिया ने कहा वह यह है: 'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं'", इस बात की दलील है कि यह सबसे अफ़ज़ल ज़िक्र है, क्योंकि यह ऐसे कलिमात हैं जो तौहीद के तमाम इल्म को समेट लेते हैं। इसके बरअक्स, सूरह फ़ातिहा में तौहीद, इबादत और नसीहत तीनों शामिल हैं। और यह अल्लाह की कुदरत में कोई नामुमकिन बात नहीं है।"
‘Ali ibn Abi Talib related that the Messenger of Allah ﷺ said, ‘The Fatihah of the Book, the Throne Verse, “Allah bears witness that there is no god but Him” and “Say: O Allah, Master of the Kingdom” : these ayahs are suspended from the Throne. There is no veil	"हज़रत अली इब्न अबी तालिब रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "फ़ातिहतुल-किताब, आयतुल-कुर्सी, और ये आयात: 'अल्लाह गवाही देता है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं' और 'कह दो: ऐ अल्लाह! बादशाही के मालिक', ये सब आयात अर्श से मुअल्लक हैं।"

between them and Allah.' Abu 'Amr ad-Dani has this in his Kitab al-bayan.	इनके और अल्लाह के दरमियान कोई हिजाब नहीं है।" अबू अम्र अद-दानी ने इसे अपनी किताब <i>किताब अल-बयान</i> में ज़िक्र किया है।
The Fātiḥah has twelve names:	"सूरह फ़ातिहा के बारह नाम हैं:"
1. Salat (the Prayer). Allah Almighty says in a hadith: 'I have divided the prayer between Myself and My slave.'	1. सलात (नमाज़): अल्लाह तआला एक हदीस में फ़रमाता है: "मैंने नमाज़ को अपने और अपने बंदे के दरमियान तक़्सीम कर दिया है।"
2. Surat al-Hamd (Surah of Praise), because praise is mentioned in it. This is similar in the way that other surahs are named, such as 'The Surah of the Battlements', 'Booty', 'Repentance' and the like.	2. सूरह अल-हम्द (तारीफ़ की सूरत), क्योंकि इसमें हम्द का ज़िक्र है। यह उसी तरह है जैसे दूसरी सूरतों के नाम रखे गए हैं, जैसे "सूरह अल-आराफ़", "अल-अनफ़ाल", "अत-तौबह" वगैरह।"
3. The Fatihah (Opener) of the Book. This name is undisputed among scholars. It is called that because it opens the recitation of the Quran and the writing of every copy of the Quran opens with it, and the prayers also open with it.	3. फ़ातिहतुल-किताब (किताब का आगाज़): इस नाम पर उलेमा के दरमियान कोई इख़िलाफ़ नहीं है। इसे यह नाम इस लिए दिया गया है कि कुरआन की तिलावत इसी से शुरू होती है, और कुरआन के हर नुस्खे की किताबत भी इसी से आगाज़ होती है, और नमाज़ भी इसी से शुरू की जाती है।
4. Umm al-Kitab (Mother of	4. उम्मुल-किताब (किताब की

the Book). There is some disagreement concerning this name. Some allow it while Anas, al-Hasan and Ibn Sirin disliked it. Al-Hasan said, ‘The Umm al-Kitab is the lawful and unlawful. Allah Almighty says, “Ayahs containing clear judgements — they are the Umm al-Kitab — and others are open to interpretation.”’ Anas and Ibn Sirin said that the Umm al-Kitab is the name of the Preserved Tablet. Allah Almighty says, ‘It is in the Umm al-Kitab with Us.’	अस्ल): इस नाम के बारे में कुछ इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। कुछ उलेमा इसे जायज़ करार देते हैं, जबकि हज़रत अनस रज़ि., हसन बसरी रह. और इब्र सीरीन रह. ने इसे नापसंद किया है। हसन बसरी रह. ने कहा: “उम्मुल-किताब से मुराद हलाल व हराम हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है: ‘वाज़ेह अहकाम वाली आयात—वही उम्मुल-किताब हैं— और दूसरी आयात मुतशाबेह हैं’ ।” हज़रत अनस रज़ि. और इब्र सीरीन रह. ने कहा कि उम्मुल-किताब महफूज़ लौह का नाम है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: “वह हमारे पास उम्मुल-किताब में है।”
5. Umm al-Quran (The Mother of the Quran). There is also disagreement about this. The majority allow it while Anas and Ibn Sirin dislike it. Firm hadiths refute these two opinions. At-Tirmidhi transmitted from Abu Hurayrah that the Messenger of Allah ﷺ said, “‘Praise belongs to Allah’ is the Mother of the Quran, the Mother of the Book and the Seven Mathani.’ He said that	5. उम्मुल-कुरआन (कुरआन की माँ): इस नाम के बारे में भी इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। जमहूर उलेमा इसे जायज़ करार देते हैं, जबकि हज़रत अनस रज़ि. और इब्र सीरीन रह. इसे नापसंद करते हैं। मज़बूत अहादीस इन दोनों रायों की तर्दीद करती हैं। इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत अबू हु़रैरा रज़ि. से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन उम्मुल-कुरआन है, उम्मुल-किताब है और

this hadith is hasan sahih. We find in al-Bukhari: 'It is called the Mother of the Book because it begins the writing of copies of the Quran and one begins with its recitation in the prayer.' Yahya ibn Yamar said, 'The Mother of Towns is Makkah, the Mother of Khorasan is Marv, the Mother of the Quran is the Surah of Praise.' It is said that it was called the Mother of the Quran because it is the beginning of it and contains all its sciences. It is for that reason that Makkah is called the Mother of the Towns because it was the first on the earth and the earth spread out from it. A mother is called 'mother' because she is the root of progeny. Earth is a 'mother'. Umayyah ibn Abi as-Salt said: <i>'The earth is our stronghold and our mother.</i> <i>Our graves are in it and we were born from it.'</i>	अस-सब्अुल-मसानी है।" उन्होंने कहा कि यह हदीस हसन सहीह है। इमाम बुखारी में है: "इसे उम्मुल-किताब इस लिए कहा जाता है कि कुरआन के नुस्खों की किताबत इसी से शुरू होती है और नमाज़ में भी तिलावत इसी से शुरू की जाती है।" यह्या बिन यअमर ने कहा: "उम्मुल-कुरा मक्का है, खुरासान की माँ मर्व है, और उम्मुल-कुरआन सूरह अल-हम्द है।" यह भी कहा गया है कि इसे उम्मुल-कुरआन इस लिए कहा जाता है कि यह कुरआन का आगाज़ है और उसके तमाम उलूम को अपने अंदर समेटे हुए है। इसी वजह से मक्का को उम्मुल-कुरा कहा जाता है, क्योंकि वह ज़मीन पर सबसे पहले वजूद में आया और ज़मीन उसी से फैली। माँ को 'उम्म' इस लिए कहा जाता है कि वह नस्ल की अस्ल होती है। ज़मीन को भी 'माँ' कहा जाता है। उमय्या बिन अबी अस-सल्ल ने कहा: "ज़मीन हमारी पनाहगाह और हमारी माँ है, हमारी क़ब्रें उसी में हैं और हम उसी से पैदा हुए हैं।"
A banner of war is called 'Umm' because it precedes it	"जंग के झंडे को भी "उम्म" कहा

and the army follows it. The root of umm is ummah which is why the plural is ummahat.	जाता है, क्योंकि वह आगे होता है और लश्कर उसके पीछे चलता है। "उम्म" की अस्ल "उम्मत" है, इसी लिए इसकी जमा "उम्महात" आती है।"
6. Al-Mathani (the Oft-Repeated). It is called that because it is repeated in every rakah of the prayer. It is said that it is called that because it is exclusively for this Community and it was not revealed to anyone before because it was a treasure stored up for this Community.	6. अल-मसानी (बार-बार दोहराई जाने वाली): इसे यह नाम इस लिए दिया गया है कि यह नमाज़ की हर रकअत में दोहराई जाती है। यह भी कहा गया है कि इसे यह नाम इस लिए दिया गया है कि यह खास तौर पर इसी उम्मत के लिए है और इससे पहले किसी पर नाज़िल नहीं हुई, क्योंकि यह इस उम्मत के लिए महफूज़ किया गया एक खज़ाना था।
7. The Immense Quran. It is called that because it contains all the sciences of the Quran. That is because it contains praise of Allah Almighty with the qualities of His Perfection and Majesty, the command to perform acts of worship and to be sincere in them, acknowledgement of the inability to do any of it except with Allah's help, entreaty to Him for guidance to the Straight Path and being spared	7. अल-कुरआन अल-अज़ीम (अज़ीम कुरआन): इसे यह नाम इस लिए दिया गया है कि इसमें कुरआन के तमाम उलूम शामिल हैं। इसकी वजह यह है कि इसमें अल्लाह तआला की हम्द उसकी कमाल और जलाल की सिफ़ात के साथ बयान की गई है, इबादात अदा करने और उनमें इखलास इख्तियार करने का हुक्म है, इस बात का इक़रार है कि अल्लाह की मदद के बग़ैर कुछ भी मुमकिन नहीं, उससे सीधे रास्ते की हिदायत तलब की गई है और उन

the states of those who violate the contract, and clarification of the final state of the deniers.	लोगों के अंजाम से बचने की दुआ है जो अहद तोड़ते हैं, और मुंकरिन के अंजाम की वज़ाहत भी की गई है।"
8. Ash-Shifa' (Healing). Ad-Darimi related from Abu Said al-Khudri that the Messenger of Allah said, 'The Fatihah of the Book is healing for every poison.'	8. अश-शिफ़ा (शिफ़ा): दारिमी ने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "फ़ातिहतुल-किताब हर ज़हर के लिए शिफ़ा है।"
9. Ar-Ruqyah (the Charm). This name is taken from a hadith of Abu Sa'id al-Khudri in which the Messenger of Allah ﷺ said to a man who had recited it as a charm for someone with a snake-bite, 'What taught you that it was a charm?' He replied, 'Messenger of Allah, something that came into my heart.' The imams transmitted it.	9. अर-रुक़््या (दम): यह नाम हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. की एक हदीस से लिया गया है, जिसमें रसूलुल्लाह ﷺ ने उस शख्स से फ़रमाया जिसने साँप के काटे हुए आदमी पर इसे दम के तौर पर पढ़ा था: "तुम्हें किसने सिखाया कि यह दम है?" उसने अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह! यह बात मेरे दिल में आई थी।" इस हदीस को इमामों ने रिवायत किया है।"
10. Al-Asas (the Core). A man complained to ash-Shab of abdominal pain and he said, 'You must have the Core of the Quran, the Fatihah of the Book. I heard Ibn 'Abbas say, "Everything has a core. The	10. अल-असास (बुनियाद): एक शख्स ने शाबी रह. से पेट के दर्द की शिकायत की तो उन्होंने कहा: "तुम्हें क़ुरआन की बुनियाद, यानी फ़ातिहतुल-किताब को लाज़िम पकड़ना चाहिए।" मैंने इब्न अब्बास रज़ि. को यह कहते हुए सुना: "हर

core of this world is Makkah because the world spread out from it. The core of the seven heavens is 'Arib, which is the seventh heaven. The core of the earth is 'Ajib, and it is the lowest of the seven earths. The core of the Gardens is the Garden of 'Adn, and it is the navel of the Gardens and on it the Garden is founded. The core of the Fire is Jahannam, which is the lowest level on which the other levels are based. The core of creatures is Adam. And the core of the Prophets is Nuh. The core of the tribe of Israel is Yaqub. The core of the Quran is the Fātiḥah and the core of the Fātiḥah is <i>In the Name of Allah, the All-Merciful, Most Merciful</i>. When you are ill, you should recite the Fātiḥah and you will be healed."	चीज़ की एक बुनियाद होती है। दुनिया की बुनियाद मक्का है क्योंकि ज़मीन उसी से फैली। सात आसमानों की बुनियाद 'अरीब' है, जो सातवाँ आसमान है। ज़मीन की बुनियाद 'अजीब' है, जो सात ज़मीनों में सबसे निचली है। जन्नतों की बुनियाद जन्नत-ए-अद्र है, जो जन्नतों का मरकज़ है और उसी पर जन्नत कायम है। आग की बुनियाद जहन्नम है, जो सबसे निचला दर्जा है और उसी पर बाक़ी दर्जे कायम हैं। मखलूक़ात की बुनियाद आदम हैं, और अंबिया की बुनियाद नूह हैं। बनी इस्राईल की बुनियाद याकूब हैं। कुरआन की बुनियाद फ़ातिहा है और फ़ातिहा की बुनियाद 'बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम' है। जब तुम बीमार हो तो फ़ातिहा पढ़ो, तुम्हें शिफ़ा मिलेगी।
11. Al-Wafiyah (the Complete). Sufyan ibn 'Uyaynah said that it is because it may not be halved or broken up. In the case of other surahs,	11. अल-वाफ़ियह (कामिल): सुफ़यान बिन उयैनह रह. ने कहा कि इसे यह नाम इस लिए दिया गया है क्योंकि इसे आधा या तक्रसीम नहीं किया जा सकता। दूसरी सूरतों के

if one reads half in one rak'ah and half in the other rak'ah, that is allowed. If the Fatihah is divided between two rakahs, that does not satisfy the legal requirement.	बरअक्स, अगर कोई शख्स किसी सूरत का आधा हिस्सा एक रकअत में और बाक़ी आधा दूसरी रकअत में पढ़े तो यह जायज़ है, लेकिन अगर सूरह फ़ातिहा को दो रकअतों में तक़सीम किया जाए तो यह शरई तक्राज़े को पूरा नहीं करती।"
12. Al-Kafiyah (the Sufficient). Yahya ibn Abi Kathir said that it is because it suffices for others while others do not suffice for it. This is indicated by what Muhammad ibn Khalid al-Iskandarani mentioned that the Prophet ﷺ said, "Umm al-Quran is a substitute for other than it but other than it is not a substitute for it." Al-Muhallab said, "The locus of the charm is in the words <i>'You alone we worship and You alone we ask for help.'</i>" It is also said that the entire surah is a charm, based on the words of the Prophet ﷺ to the man, 'What taught you that it is a charm?' He did not say that there is a charm in it. This indicates that the entire surah is a charm because it is	12. अल-काफ़ियह (काफ़ी): यहा बिन अबी कसीर रह. ने कहा कि इसे यह नाम इस लिए दिया गया है क्योंकि यह दूसरों के लिए काफ़ी हो जाती है, जबकि दूसरी चीज़ें इसके लिए काफ़ी नहीं होतीं। इसकी तरफ़ इस बात से इशारा मिलता है जिसे मुहम्मद बिन ख़ालिद अल-इस्कंदरानी ने ज़िक्र किया कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "उम्मुल-कुरआन दूसरी चीज़ों के क़ायम-मक़ाम हो सकती है, लेकिन कोई चीज़ इसका क़ायम-मक़ाम नहीं हो सकती।" अल-मुहल्लब ने कहा: "दम का अस्ल महल इन अल्फ़ाज़ में है: 'हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं।'" यह भी कहा गया है कि पूरी सूरत ही दम है, इस बुनियाद पर कि नबी ﷺ ने उस शख्स से फ़रमाया: "तुम्हें किसने सिखाया कि यह दम है?" आपने यह नहीं फ़रमाया कि

the Fatiha of the Book and its beginning contains all of its sciences, as has already been stated. Allah knows best.	इसमें दम है। इससे मालूम होता है कि पूरी सूरत ही दम है, क्योंकि यह फ़ातिहतुल-किताब है और इसका आगाज़ उसके तमाम उलूम को समेटे हुए है, जैसा कि पहले बयान हो चुका है। वल्लाहु अलम।"
The fact that it bears the names al-Mathani and Umm al-kitab does not prevent other things from having those names as well. Allah Almighty says, 'A Book consistent in its frequent repetitions (mathani)' and so He called His whole Book 'mathani' because things are repeated in it. The seven long surahs are also mathani because of the obligations and stories repeated in them. Ibn 'Abbas said, 'The Messenger of Allah ﷺ was given the Seven Mathani.' He said that they are the seven long surahs. An-Nasi'i mentioned that and said that the six extend from al-Baqarah to al-Araf, but they disagree about the seventh. Some people say that it is Yūnus, some that it is al-Anfal, and some that it is at-Tawbah.	इस बात से कि सूरह फ़ातिहा के नाम अल-मसानी और उम्मुल-किताब हैं, यह लाज़िम नहीं आता कि दूसरी चीज़ें भी इन नामों से मौसूम न हो सकें। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "एक ऐसी किताब जो बाहम मिलती-जुलती और बार-बार दोहराई जाने वाली है (मसानी)", पस उसने अपनी पूरी किताब को "मसानी" कहा क्योंकि उसमें मज़ामीन दोहराए जाते हैं। सात लंबी सूरतों को भी "मसानी" कहा जाता है क्योंकि उनमें अहकाम और क्रिस्से बार-बार बयान हुए हैं। इब्न अब्बास रज़ि. ने कहा: "रसूलुल्लाह ﷺ को अस-सब्'अुल-मसानी अता किए गए थे।" उन्होंने कहा कि इससे मुराद सात तवील सूरतें हैं। नसाई ने इसका ज़िक्र किया है और कहा कि इनमें से छह सूरतें अल-बक्रह से लेकर अल-आराफ़ तक हैं, लेकिन सातवीं के बारे में इख़िलाफ़ है। कुछ कहते हैं कि वह

The last is the position of Mujahid and Said ibn Jubayr. ‘Asha Hamdan said: <i>“Stay in the mosque and pray to your Lord.</i> <i>Study these Mathani and the long surahs (tiwal).”</i>	यूनुस है, कुछ कहते हैं अल-अनफ़ाल, और कुछ कहते हैं अत-तौबह। आखिरी राय मुजाहिद रह. और सईद बिन जुबैर रह. की है। आशा हमदान ने कहा: "मस्जिद में ठहर कर अपने रब की इबादत करो, और इन मसानी और तवील सूरतों की तिलावत करो।"
Mathani is the plural of mathna, which is that which comes after the first. Tuwal is the plural of atwal (longest). Al-Anfal is called one of the Mathani because it follows the longest surahs in length. It is said that it is that whose ayahs are more than those of the Mufassal and less than the Hundreds. The Hundreds are surahs which have more than a hundred ayahs.	"मसानी, मसना की जमा है, और इससे मुराद वह है जो पहली चीज़ के बाद आए। तिवाल, अतवल (सबसे तवील) की जमा है। सूरह अल-अनफ़ाल को भी मसानी में शुमार किया जाता है क्योंकि वह तूल के एतिबार से तवील सूरतों के बाद आती है। यह भी कहा गया है कि मसानी वह सूरतें हैं जिनकी आयात मुफ़स्सल सूरतों से ज़्यादा और "मिऊन" (सौ से ज़्यादा आयात वाली सूरतों) से कम होती हैं। "मिऊन" वह सूरतें हैं जिनकी आयात सौ से ज़्यादा होती हैं।"
Topic Two: its revelation and its rulings	"मौज़ूअ दोम: इस का नुज़ूल और इस के अहकाम"
There are twenty points regarding this.	"इस बारे में बीस नुक्रात हैं।"
The Community agree that the	"उम्मत का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है

Fātiḥah of the Book has seven ayahs except for a report from Husayn al-Jufi that it only has six, which is unusual. There is also a report from ‘Amr ibn ‘Ubayd that ‘You alone we worship’ is an ayah, and so it is eight ayahs, but this is aberrant. Allah’s words, ‘We have given you the Seven Oft-repeated’, and the hadith qudsi, ‘I have divided the prayer...’ refute these two statements.	कि फ़ातिहतुल किताब की सात आयात हैं, सिवाए हुसैन अल-जुअफ़ी से मनकूल एक रिवायत के कि इस की सिर्फ़ छह आयात हैं, और यह एक ग़ैर मामूली क़ौल है। इसी तरह अम्र बिन उबैद से यह रिवायत भी मनकूल है कि "इय्याका नअबुदु" एक मुस्तक़िल आयत है, और इस तरह आयात की तादाद आठ हो जाती है, लेकिन यह क़ौल शाज़ है। अल्लाह तआला का फ़रमान: "व-लक़द आतैनाका सबअन मिनल मसानी" और हदीस-ए-कुदसी "मैंने नमाज़ को तक्सीम कर दिया है..." इन दोनों अक़वाल की तरदीद करते हैं।"
The Community also agree that it is part of the Quran. There are those who counter this by saying that if it were truly part of the Quran, then ‘Abdullah ibn Masud would have written it in his copy of the Quran, and the fact that he did not write it indicates that it is not part of the Quran, nor indeed are the two Surahs of Refuge. The answer to that was given by Abu Bakr al-Anbari. He related from al-Hasan ibn al-Hubbab	"उम्मत का इस बात पर भी इत्तिफ़ाक़ है कि यह कुरआन का हिस्सा है। बाज़ लोग इस के खिलाफ़ यह कहते हैं कि अगर यह वाक़ई कुरआन का हिस्सा होती तो अब्दुल्लाह बिन मसऊद इसे अपने मुस्हफ़ में लिखते, और उन का इसे न लिखना इस बात की दलील है कि यह कुरआन का हिस्सा नहीं, बल्कि इसी तरह मुअव्विज़तैन भी कुरआन का हिस्सा नहीं हैं। इस का जवाब अबू बक्र अल-अनबारी ने दिया है। उन्होंने हसन

from Sulayman ibn al-Ashath from Abu Qudamah from Jarir that al-Amash said, ‘Abdullah ibn Masud was asked, “Why have you not written the Fātiḥah of the Book in your copy of the Quran?” He replied, “If I had written it, I would have written it with every surah.” Abu Bakr said, ‘He was referring to the way that every rak‘ah is begun with the Umm al-Quran before the surah is recited after it.’ He said, ‘I made things shorter by omitting it. It is safely preserved because all the Muslims memorise it and so I did not write it anywhere to avoid having to write it with every sura since it precedes all of them in the prayer.’	बिन अल-हुबाब से, उन्होंने सुलेमान बिन अल-अशअस से, उन्होंने अबू कुदामा से, उन्होंने जरीर से रिवायत किया कि आमश ने कहा: अब्दुल्लाह बिन मसऊद से पूछा गया: “आप ने अपने मुस्हफ़ में फ़ातिहतुल किताब क्यों नहीं लिखी?” उन्होंने जवाब दिया: “अगर मैं इसे लिखता तो हर सूरत के साथ लिखता।” अबू बक्र ने कहा: “उन की मुराद यह थी कि हर रकअत में सूरत से पहले उम्मुल कुरआन पढ़ी जाती है।” फिर उन्होंने कहा: “मैं ने इसे न लिख कर इख़्तिसार किया, क्योंकि वह महफूज़ है, तमाम मुसलमान उसे याद रखते हैं। इस लिए मैं ने उसे कहीं नहीं लिखा ताकि हर सूरत के साथ उसे दोबारा न लिखना पड़े, क्योंकि नमाज़ में वह तमाम सूरतों से पहले पढ़ी जाती है।”
There is disagreement about whether it is Makkan or Madinan. Ibn ‘Abbas, Qatadah, Abu’l-Aliyah, ar-Riyahi Rufay and others said that it is Makkan. Abu Hurayrah, Mujāhid, ‘Ata’ ibn Yasar, az-Zuhri and others said that it is	“इस बारे में इख़्तिलाफ़ है कि यह मक्की है या मदनी। इब्न अब्बास, क़तादा, अबुल आलिया, रियाही रफ़ीअ और दीगर हज़रात ने कहा है कि यह मक्की सूरत है। जबकि अबू हुरैरा, मुजाहिद, अता बिन यसार, जुहरी और दीगर हज़रात के नज़दीक यह मदनी सूरत है। यह भी कहा गया

Madinan. It is said that half of it was revealed in Makkah and half in Madinah, as is related by Abu-Layth Naṣr ibn Muḥammad ibn Ibrahim as-Samarqandi in his commentary. The first position is considered sounder because of the words of the Almighty, 'We have given you the seven Oft-repeated and the Magnificent Qur'an' from the end of al-Hijr and it is agreed that al-Hijr is a Makkan surah and there is no disagreement that the prayer was made obligatory in Makkah. It has not been recorded anywhere that the prayer in Islam was ever performed without reciting 'Praise be to Allah, the Lord of the worlds.' This is backed by the words of the Prophet ﷺ, 'There is no prayer without the Fātiḥah of the Book.' This is a report about a ruling.	है कि इस का कुछ हिस्सा मक्का में और कुछ मदीना में नाज़िल हुआ, जैसा कि अबुल लैस नसर बिन मुहम्मद बिन इबराहीम अस-समरकंदी ने अपनी तफ़्सीर में रिवायत किया है। पहला क़ौल ज़्यादा सही समझा जाता है, क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान है: "व-लक़द आतैनाका सब्अन मिनल मसानी वल-कुरआनल अज़ीम" जो सूरए हिज़्र के आखिर में है, और इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि सूरए हिज़्र मक्की सूरत है। इसी तरह इस में भी कोई इख़िलाफ़ नहीं कि नमाज़ मक्का में फ़र्ज़ की गई थी। कहीं भी यह मनकूल नहीं कि इस्लाम में कभी ऐसी नमाज़ अदा की गई हो जिस में "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन" न पढ़ी गई हो। इस की ताईद नबी करीम ﷺ के इस फ़रमान से भी होती है: "फ़ातिहतुल किताब के बग़ैर नमाज़ नहीं होती।" यह एक शरई हुक्म से मुतअल्लिक़ रिवायत है।"
Qadi Ibn at-Tayyib mentioned people's disagreement about the first part of the Quran to be revealed. It is said that it was	"क़ाज़ी इब्न अत-तय्यिब ने इस बारे में लोगों के इख़िलाफ़ का ज़िक्र किया है कि कुरआन का सबसे पहला नाज़िल होने वाला हिस्सा कौन सा

al-Muddaththir (74) or al-Alaq (96) or the Fātiḥah. Al-Bayhaqi mentioned in the <i>Proofs of Prophethood</i> from Abu Maysarah ‘Amr ibn Sharahil that the Messenger of Allah ﷺ said to his wife Khadījah, ‘When I was alone, I heard a voice calling and, by Allah, I fear that this is an affliction.’ She said, ‘We seek refuge with Allah! Allah would not do that to you. By Allah, you return people’s trusts, maintain ties of kinship and give ṣadaqah.’ When Abu Bakr entered when the Messenger of Allah ﷺ was not there, Khadijah mentioned the matter to him and said, ‘Atiq, go with Muhammad to Waraqah ibn Nawfal.’ When the Messenger of Allah ﷺ came in, Abu Bakr took his hand and said, ‘Let us go to Waraqah.’ He asked, ‘Who told you?’ ‘Khadījah,’ he answered.	था। कहा गया है कि वह सूरए मुद्दस्सिर (74) थी, या सूरए अलक़ (96), या फिर सूरए फ़ातिहा। इमाम बैहक़ी ने दलाइलुनुबुव्वह में अबू मैसरा अम्र बिन शराहील से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी ज़ौजा ख़दीजा से फ़रमाया: “जब मैं तन्हा होता हूँ तो एक आवाज़ सुनता हूँ जो मुझे पुकारती है, और अल्लाह की क़सम! मुझे डर है कि यह कोई आज़माइश न हो।” ख़दीजा ने कहा: “अल्लाह की पनाह! अल्लाह आप के साथ ऐसा हरगिज़ नहीं करेगा। अल्लाह की क़सम! आप अमानत अदा करते हैं, सिला रहमी करते हैं और सदक़ा देते हैं।” फिर जब अबू बक्र आए और रसूलुल्लाह ﷺ वहाँ मौजूद न थे तो ख़दीजा ने उन से यह वाक़िआ बयान किया और कहा: “ऐ अतीक! मुहम्मद ﷺ को वरक़ा बिन नौफ़ल के पास ले जाओ।” जब रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए तो अबू बक्र ने आप का हाथ पकड़ा और कहा: “आइए, हम वरक़ा के पास चलते हैं।” आप ﷺ ने पूछा: “तुम्हें यह बात किस ने बताई?” उन्होंने जवाब दिया: “ख़दीजा ने।”
When Waraqah died, the	“जब वरक़ा का इंतिक़ाल हो गया तो

Messenger of Allah ﷺ said, ‘I have seen the priest in the Garden wearing a silk garment because he believed in me and affirmed me.’ He meant Waraqah. Al-Bayhaqi said, ‘This hadith is munqati. If it is guaranteed safe from corruption (maḥfuz) it may be a report about the revelation of the Fatihah after the revelation of “Read in the name of your Lord” and al-Muddaththir.’	रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “मैं ने उस पादरी को जन्नत में रेशमी लिबास पहने हुए देखा, क्योंकि वह मुझ पर ईमान लाया था और उस ने मेरी तस्दीक़ की थी।” आप ﷺ की मुराद वरक़ा ही थे। इमाम बैहक़ी ने कहा: “यह हदीस मुनक़ति’ है। अगर यह महफूज़ और ग़ैर मुहर्रफ़ मानी जाए तो मुमकिन है कि यह सूरए फ़ातिहा के नुज़ूल के बारे में हो, जो ‘इक़रा बिस्मि रब्बिक’ और सूरए मुद्दस्सिर के नुज़ूल के बाद नाज़िल हुई हो।”
Ibn ‘Atiyyah said that some scholars think that Jibril did not bring down the Surah of Praise because of the hadith in which Muslim related that Ibn ‘Abbas said, ‘While Jibril was sitting with the Prophet ﷺ, he heard a crack above him. He lifted his head and said, “This is a door of heaven being opened today which has not been opened before now.” An angel descended from it and he said, “This is an angel who has descended to Earth who has not descended before today.” He greeted them and said, “Good	इब्र अतिय्या ने कहा है कि बाज़ उलमा का ख़याल है कि सूरए हम्द को जिब्रील ले कर नाज़िल नहीं हुए, क्योंकि मुस्लिम की रिवायत करदा इस हदीस में इब्र अब्बास फ़रमाते हैं: “जब जिब्रील नबी करीम ﷺ के पास बैठे हुए थे तो उन्होंने अपने ऊपर से एक आवाज़ सुनी। उन्होंने सर उठाया और कहा: ‘यह आसमान का एक दरवाज़ा है जो आज खोला गया है, इस से पहले कभी नहीं खोला गया था।’ फिर उस में से एक फ़रिश्ता नाज़िल हुआ। जिब्रील ने कहा: ‘यह एक फ़रिश्ता है जो आज से पहले कभी ज़मीन पर नाज़िल नहीं हुआ।’ उस फ़रिश्ते ने सलाम किया और

news of two lights which you have been given which no Prophet before you was given: the Fātiḥah of the Book and the Seals of Surat al-Baqarah. You will not read a single letter of them without being rewarded for it.” Ibn ‘Aṭiyyah said, “It is not as they think. This hadith indicates that Jibril came before the other angel to the Prophet ﷺ to inform him of it and of what he brought down. Accordingly Jibril participated in its revelation, but Allah knows best.”	कहा: ‘आप को दो नूरों की बशारत हो जो आप को अता किए गए हैं, और आप से पहले किसी नबी को नहीं दिए गए: फ़ातिहतुल किताब और सूरए बक्रा की आखिरी आयात)। आप इन में से एक हरफ़ भी नहीं पढ़ेंगे मगर उस पर आप को अज़्र दिया जाएगा।” इब्न अतिय्या ने कहा: “बात वैसी नहीं जैसा वह समझते हैं। यह हदीस इस बात पर दलालत करती है कि जिब्रील उस दूसरे फ़रिश्ते से पहले नबी करीम ﷺ के पास आए थे ताकि आप को उस के बारे में और उस चीज़ के बारे में ख़बर दें जो वह ले कर आया था। लिहाज़ा जिब्रील भी उस के नुज़ूल में शरीक थे, वल्लाहु आलम।”
It is clear that this hadith indicates that Jibril did not teach the Prophet ﷺ any of the Fātiḥah. We explained that it was revealed in Makkah and that Jibril brought it down since Allah says: ‘The Faithful Ruh brought it down.’) This means all of the Quran. So Jibril brought down its recitation in Makkah and the angel brought down its reward in Madinah,	“यह हदीस बज़ाहिर इस बात पर दलालत करती है कि जिब्रील ने नबी करीम ﷺ को सूरए फ़ातिहा का कोई हिस्सा नहीं सिखाया। हम पहले बयान कर चुके हैं कि यह मक्का में नाज़िल हुई थी और जिब्रील ही इसे ले कर नाज़िल हुए थे, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: “नज़ला बिहिर-रूहुल अमीन” यानी इसे रूहुल अमीन ले कर नाज़िल हुए। इस से मुराद पूरा कुरआन है।

but Allah knows best. It is said that it is Makkan/Madinan and that Jibril brought it down twice, as ath-Thalabi related. What we mentioned is more likely since it combines the Quran and the Sunnah. Praise and favour belongs to Allah.	लिहाज़ा जिब्रील मक्का में इस की तिलावत ले कर नाज़िल हुए, जबकि वह फ़रिश्ता मदीना में इस के अज़्र व फ़ज़ीलत की बशारत ले कर आया, वल्लाहु आलम। यह भी कहा गया है कि यह मक्की भी है और मदनी भी, और जिब्रील इसे दो मरतबा ले कर नाज़िल हुए, जैसा कि सअलबी ने रिवायत किया है। लेकिन जो बात हम ने ज़िक्र की है वह ज़्यादा क़वी मालूम होती है, क्योंकि इस में कुरआन और सुन्नत दोनों के दरमियान तब्दीक़ हो जाती है। तमाम हम्द व फ़ज़ल अल्लाह ही के लिए है।"
It has already been made clear that the basmalah is not an ayah of the Fatihah according to the sound position. Given that, the ruling for those doing the prayer is that, after the takbir, they begin straight away with the Fātiḥah and are not silent, and do not recite any tawjih (the dua, 'I have turned my face...') or tasbiḥ. This is verified by the hadith of 'Aishah, Anas and others. There are other hadiths which contain the tawjih, tasbiḥ, and	"यह बात पहले वाज़ेह की जा चुकी है कि सही क़ौल के मुताबिक़ बिस्मिल्लाह सूरए फ़ातिहा की आयत नहीं है। इस बिना पर नमाज़ पढ़ने वाले के लिए हुक्म यह है कि तकबीर के बाद फ़ौरन सूरए फ़ातिहा शुरू करे, ख़ामोश न रहे, और न ही कोई दुआए तौजीह ("मैं ने अपना रुख़ फेर लिया...") या तस्बीह पढ़े। इस की ताईद हज़रत आयशा, अनस और दीगर सहाबा की अहादीस से होती है। अलबत्ता बाज़ दूसरी अहादीस में दुआए तौजीह, तस्बीह और ख़ामोशी का ज़िक्र भी आया है, और एक

silence, and a group of scholars follow that position. It is related that, when they began the prayer, ‘Umar ibn al-Khattab and ‘Abdullah ibn Masud used to say: ‘Glory be to You, O Allah, and by Your praise. Blessed is Your Name and exalted is Your Majesty. There is no god but You.’ Sufyan, Ahmad, Ishaq and the people of opinion follow that. Ash-Shafi‘i used to say what is related from Ali from the Prophet ﷺ, which is that when he began the prayer, he said the takbir and then ‘I have turned my face. Muslim mentioned it and it will come in full at the end of Surat al-Anam. At this point what we have said is enough concerning this matter, Allah willing.	जमाअत-ए-उलमा इसी क़ौल की क़ाइल है। रिवायत है कि उमर बिन ख़त्ताब और अब्दुल्लाह बिन मसऊद नमाज़ शुरू करते वक़्त यह दुआ पढ़ते थे: “सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दिका, व तबारकस्मुका, व तआला जद्दुका, व ला इलाहा ग़ैरुका” (ऐ अल्लाह! तू पाक है और तेरी ही हम्द है। तेरा नाम बाबरकत है, तेरी शान बुलंद है, और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।) सुफ़यान, अहमद, इस्हाक़ और अहल-ए-राए इसी मस्लक पर हैं। जबकि इमाम शाफ़िई उस दुआ के क़ाइल थे जो हज़रत अली से नबी करीम ﷺ के बारे में मरवी है कि आप ﷺ नमाज़ शुरू करते वक़्त तकबीर कहते, फिर यह दुआ पढ़ते: “मैं ने अपना रुख़ फेर लिया...” । इमाम मुस्लिम ने इस हदीस को रिवायत किया है, और इस का मुकम्मल ज़िक्र सूरए अनआम के आख़िर में आएगा। इस मसअले के बारे में फ़िलहाल इतनी गुफ़्तगू काफ़ी है, इंशा अल्लाह।”
Ibn al-Mundhir said, ‘It is verified that when the Messenger of Allah ﷺ said the takbir for the prayer, he was	”इब्न अल-मुन्ज़िर ने कहा: “यह बात साबित है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ के लिए तकबीर कहते तो क़िराअत शुरू करने से पहले कुछ

silent for a time before starting the recitation, during which time he said, "O Allah, put as much distance between me and my errors as You have put between the east and the west. O Allah, cleanse me of my errors as a white garment is cleansed of dirt. O Allah, wash me of my errors with snow, ice and hail." Abu Hurayrah acted according to that.' Abu Salamah ibn 'Abd ar-Rahman said, 'The imam is silent twice, so take advantage of them with recitation.' Al-Awza'i, Sa'id ibn 'Abd al-'Aziz and Ahmad ibn Hanbal inclined to the hadith of the Prophet ﷺ regarding this matter.	देर ख़ामोश रहते, और उस दौरान यह दुआ पढ़ते थे: 'ऐ अल्लाह! मेरे और मेरी ख़ताओं के दरमियान उतनी दूरी कर दे जितनी तूने मशरिक़ और मग़रिब के दरमियान रखी है। ऐ अल्लाह! मुझे मेरी ख़ताओं से इस तरह पाक कर दे जैसे सफ़ेद कपड़ा मैल से पाक किया जाता है। ऐ अल्लाह! मेरी ख़ताओं को बर्फ़, ओलों और ठंडे पानी से धो दे।' और अबू हु़रैरहँ भी इसी पर अमल करते थे।" अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने कहा: "इमाम दो मर्तबा ख़ामोश होता है, लिहाज़ा उन औक़ात को क़िराअत के लिए ग़नीमत समझो।" इमाम औज़ाई, सईद बिन अब्दुलअज़ीज़, और अहमद बिन हम्बल रहिमहुमुल्लाह ने इस मसले में नबी ﷺ की हदीस की तरफ़ रुझान इख़्तियार किया।"
Scholars disagree about the exact nature of the obligation of reciting the Fatihah in the prayer. Malik and his people say that it is incumbent on the imam and anyone praying alone in every rakah. Ibn Khuwayzimandad al-Basri al-Maliki said, 'There is no	"उलमा के दरमियान नमाज़ में सूरह फ़ातिहा पढ़ने की फ़र्ज़ियत की हक़ीक़त के बारे में इख़्तिलाफ़ है। इमाम मालिक और उनके अस्थाब कहते हैं कि इमाम और अकेले नमाज़ पढ़ने वाले पर हर रकअत में सूरह फ़ातिहा पढ़ना वाजिब है। इब्न ख़ुवैज़मंदाद अल-बसरी अल-

disagreement about the position of Malik in respect of someone forgetting it in one rak'ah of a two-rak'ah prayer: the prayer is then invalid and does not satisfy the obligation. There is disagreement about his position regarding someone who forgets it in one rak'ah of a three or four-rak'at prayer. Once he said that he must repeat the prayer and another time that he should perform the prostration of forgetfulness. This is transmitted by Ibn 'Abd al-Hakam and others from Malik.' Ibn Khuwayzimandad said, 'It is said that he repeats that rak'ah and then performs the prostration of forgetfulness after the salam.' Ibn 'Abd al-Barr said, 'The sound position is that he discounts that rak'ah and does another to replace it, like someone who omits a prostration out of forgetfulness. That is what Ibn al-Qasim preferred.'	मालिकी ने कहा: "दो रकअत वाली नमाज़ में अगर कोई शख्स एक रकअत में सूरह फ़ातिहा पढ़ना भूल जाए तो इमाम मालिक के मौक़िफ़ में कोई इख़िलाफ़ नहीं कि उसकी नमाज़ बातिल हो जाएगी और फ़र्ज़ अदा नहीं होगा। अलबत्ता तीन या चार रकअत वाली नमाज़ में अगर एक रकअत में सूरह फ़ातिहा भूल जाए तो इमाम मालिक के क़ौल में इख़िलाफ़ है। एक मर्तबा उन्होंने फ़रमाया कि नमाज़ दोहराना लाज़िम है, और दूसरी मर्तबा फ़रमाया कि सज्दए सह काफ़ी होगा। यह रिवायत इब्न अब्दुलहक़म और दूसरे लोगों ने इमाम मालिक से नक़ल की है।" इब्न ख़ुवैज़मंदाद ने कहा: "यह भी कहा गया है कि वह उस रकअत को दोबारा अदा करे, फिर सलाम के बाद सज्दए सह करे।" इब्न अब्दुलबर ने कहा: "सही मौक़िफ़ यह है कि वह उस रकअत को शुमार न करे और उसके बदले एक नई रकअत अदा करे, जैसे वह शख्स जो भूल कर एक सज्दा छोड़ दे। यही क़ौल इब्न अल-क़ासिम ने पसंद किया है।"
Al-Hasan al-Baṣri, most of the people of Basra, and al-	"हसन बसरी, अहल-ए-बसरा की अकसरियत, और मुगीरह बिन

Mughirah ibn ‘Abd ar-Rahman al-Makhzumi al-Madani said, ‘If someone recites the Umm al-Quran once during the prayer, it satisfies the obligation and he does not have to repeat it because it is a prayer in which the Umm al-Quran was recited. It is complete according to the words of the Prophet ﷺ, “The prayer of anyone who does not recite the Umm al-Quran is invalid,” and he recited it.’ It is possible that the prayer of anyone who does not recite it in every rak‘ah is invalid, which is sound as will be mentioned, and it is also possible that the prayer of someone who does not recite it in most of the rak‘ahs is invalid. This is the reason for the disagreement, and Allah knows best.	अब्दुर्रहमान अल-मखज़ूमी अल-मदनी ने कहा: “अगर कोई शख्स नमाज़ में एक मर्तबा उम्मुल-कुरआन (सूरह फ़ातिहा) पढ़ ले तो फ़र्ज़ अदा हो जाता है और उसे दोबारा पढ़ने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि यह ऐसी नमाज़ है जिसमें उम्मुल-कुरआन पढ़ी गई है। नबी ﷺ के इस फ़रमान के मुताबिक़ यह नमाज़ मुकम्मल है: ‘जिस शख्स ने उम्मुल-कुरआन न पढ़ी उसकी नमाज़ नहीं होती’, और उस शख्स ने उम्मुल-कुरआन पढ़ ली है।” यह भी मुमकिन है कि हर रकअत में उम्मुल-कुरआन न पढ़ने वाले की नमाज़ बातिल हो, और यही बात सही है जैसा कि आगे ज़िक्र किया जाएगा। और यह भी मुमकिन है कि उस शख्स की नमाज़ बातिल हो जो अक्सर रकअतों में उम्मुल-कुरआन न पढ़े। यही इख़्तिलाफ़ की वजह है, और अल्लाह ही बेहतर जानता है।”
Abu Hanifah, ath-Thawri and al-Awza‘i said, ‘If it is omitted intentionally throughout the entire prayer and something else is recited instead, that satisfies the requirements,’	“इमाम अबू हनीफ़ा, सुफ़यान सौरी, और इमाम औज़ाई ने कहा: “अगर कोई शख्स पूरी नमाज़ में जान-बूझकर सूरह फ़ातिहा छोड़ दे और उसकी जगह कुछ और पढ़ ले तो यह काफ़ी हो जाता है”, अगरचे इस बारे

although al-Awza'i had some disagreement about that. Abu Yusuf and Muhammad ibn al-Hasan said, 'Its minimum is three ayahs or a long ayah, like the Ayah of Debt.' Muhammad ibn al-Hasan said, 'Discretion is allowed regarding the size of the ayah and the size of understood words, like "Praise be to Allah." What is not allowed is a single letter which is not a word.'	में इमाम औज़ाई से कुछ इख़िलाफ़ भी मनकूल है। अबू यूसुफ़ और मुहम्मद बिन हसन ने कहा: "इसकी कम से कम मात्रा तीन आयात या एक लंबी आयत है, जैसे आयत-ए-दैन (अल-बकरह: 1)" मुहम्मद बिन हसन ने कहा: "आयत के हज्म और मफ़हूम रखने वाले अल्फ़ाज़ की मात्रा के बारे में गुंजाइश है, जैसे 'अल्हम्दु लिल्लाह' कहना। अलबत्ता एक ऐसा हरफ़ काफ़ी नहीं जो खुद कोई लफ़्ज़ न हो।"
At-Tabari said, 'Someone who prays should recite the Umm al-Quran in every rak'ah. If he does not recite it, the requirement is only satisfied by reciting its equivalent in the Quran in respect of the number of ayahs and the letters it contains.' Ibn 'Abd al-Barr stated, 'This makes no sense because the specification of it and the text on it specify it and nothing else. It is not permissible for the one for whom it is obliged to do something else in its place and to leave it when he is able to	"इमाम तबरी ने कहा: "नमाज़ पढ़ने वाले पर लाज़िम है कि वह हर रकअत में उम्मुल-कुरआन (सूरह फ़ातिहा) पढ़े। अगर वह उसे न पढ़े तो उसके बदले कुरआन में से उतनी ही आयात और उतने ही हुरूफ़ के बराबर क़िराअत करने से फ़र्ज़ अदा होगा।" इब्न अब्दुलबर ने कहा: "यह बात दुरुस्त मालूम नहीं होती, क्योंकि सूरह फ़ातिहा की तअय्युन और उसके बारे में वारिद नुसूस ख़ास तौर पर उसी को मुतअय्यिन करती हैं, किसी और चीज़ को नहीं। जिस शख्स पर उसकी क़िराअत वाजिब है, उसके लिए यह जायज़ नहीं कि वह उसकी जगह कोई और चीज़ पढ़े

recite it. He must do it and repeat it, just as he must fulfil all other specific obligations in acts of worship.'	और बावजूद कुदरत के उसे छोड़ दे। उस पर लाज़िम है कि वह उसी को पढ़े और अगर छोड़ दे तो नमाज़ को दोहराए, जैसे इबादात में दीगर तमाम मुतअय्यिन फ़राइज़ को अदा करना लाज़िम होता है।"
If someone following the imam catches the ruku with the imam, the recitation of the imam is considered sufficient for him since there is consensus that when someone catches the ruku he just says his takbir al-ihram and bows without reciting anything else. If he finds the imam standing, he should recite. This is one point.	"अगर मुक्तदी इमाम के साथ रुकू पा ले तो इमाम की क़िराअत उसके लिए काफ़ी समझी जाती है, क्योंकि इस बात पर इज्मा है कि जब कोई शख्स रुकू में इमाम को पा ले तो वह सिर्फ़ तकबीर-ए-तहरीमा कह कर रुकू में चला जाता है और उसके अलावा कुछ नहीं पढ़ता। अलबत्ता अगर वह इमाम को क़ियाम की हालत में पाए तो उसे क़िराअत करनी चाहिए। यह एक मसअला है।"
No one should fail to recite behind the imam in one of the silent prayers. If he does so, he has acted badly but, according to Malik and his people, he owes nothing. When the imam recites aloud, those following the imam do not recite the Fātiḥah or anything else according to the well known position from the school of Malik since Allah Almighty	"किसी शख्स को ख़ामोशी वाली नमाज़ों में इमाम के पीछे क़िराअत तर्क नहीं करनी चाहिए। अगर वह ऐसा करे तो उसने ग़लती की, लेकिन इमाम मालिक और उनके अस्थाब के नज़दीक उस पर कोई चीज़ लाज़िम नहीं आती। और जब इमाम बुलंद आवाज़ से क़िराअत करे तो मुक्तदी इमाम मालिक के मशहूर मज़हब के मुताबिक़ न सूरह फ़ातिहा पढ़े और न कुछ और, क्योंकि अल्लाह तआला

says: 'When the Quran is recited, listen to it and be quiet.' The Messenger of Allah ﷺ said, 'Why am I being contended with in the Qur'an.' He said about the imam, 'When he recites, be silent,' and 'If someone has an imam, the recitation of the imam is his recitation.'	का फ़रमान है: "जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे गौर से सुनो और खामोश रहो।" रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे कुरआन में क्यों टोका जाता है?" और इमाम के बारे में फ़रमाया: "जब वह क़िराअत करे तो खामोश रहो।" और "अगर जिस शख्स का इमाम हो, इमाम की क़िराअत ही उसकी क़िराअत है।"
Ash-Shafi'i said in what al-Buwaiṭi and Ahmad ibn Hanbal reported, 'No one's prayer is satisfied unless he recites the Fatihah of the Book in every rak'ah, be he an imam or follower, and whether the imam recites aloud or silently.' In Iraq ash-Shafi'i used to say about the follower, 'He recites when it is silent but not when it is aloud,' like the well-known position of the school of Malik. In Egypt he said that there are two positions about when the imam recites aloud. One is that the follower should recite, and the other is that the requirements of the prayer are satisfied if he does not recite,	"इमाम शाफ़ई ने, जैसा कि बुवैती और अहमद बिन हम्बल ने नक़ल किया है, फ़रमाया: "किसी शख्स की नमाज़ उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं होती जब तक वह हर रकअत में फ़ातिहतुल-किताब न पढ़े, ख़्वाह वह इमाम हो या मुक़्तदी, और ख़्वाह इमाम बुलंद आवाज़ से क़िराअत करे या आहिस्ता।" इराक़ में इमाम शाफ़ई मुक़्तदी के बारे में यह कहते थे: "वह सिरी नमाज़ में क़िराअत करे, लेकिन जहरी नमाज़ में न करे", और यह इमाम मालिक के मशहूर मज़हब के मुताबिक़ है। मिस्र में उन्होंने कहा कि जहरी नमाज़ में दो क़ौल हैं: एक यह कि मुक़्तदी क़िराअत करे, और दूसरा यह कि अगर वह क़िराअत न करे तब भी नमाज़ दुरुस्त है, क्योंकि इमाम की क़िराअत उसके लिए

the recitation of the imam being sufficient. Ibn al-Mundhir related this view while Ibn Wahb, Ashhab, Ibn ‘Abd al-Hakam, Ibn Habib and the Kufans said that the follower should not recite anything, whether the imam recites aloud or silently, since the Prophet ﷺ said, ‘The recitation of the imam is his recitation.’ This is general. It is also because Jabir said, ‘Whoever prays a rak‘ah in which he does not recite the Umm al-Quran has not prayed – except behind an imam.’ What is sound of these views is the position of ash-Shafi‘i, Ahmad, and Malik in his final view: the Fatihah is incumbent in every rak‘ah on everyone in general by the words of the Prophet ﷺ: ‘There is no prayer for the one who does not recite the Fatihah of the Book in it,’ and his words: ‘If anyone prays a prayer in which he does not recite the Umm al-Quran, it is incomplete,’ three times. Abu Hurayrah said, ‘The Messenger	काफ़ी है। इब्र अल-मुन्ज़िर ने यह क़ौल नक़ल किया है, जबकि इब्र वहब, अशहब, इब्र अब्दुलहकम, इब्र हबीब, और अहल-ए-कूफ़ा ने कहा कि मुक़्तदी को कुछ भी क़िराअत नहीं करनी चाहिए, ख़्वाह इमाम जह्न क़िराअत करे या सिरन, क्योंकि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “इमाम की क़िराअत ही मुक़्तदी की क़िराअत है।” यह हुक्म आम है। इसी तरह हज़रत जाबिर ने फ़रमाया: “जो शख्स एक रकअत ऐसी पढ़े जिसमें उम्मुल-कुरआन न पढ़े, उसने नमाज़ नहीं पढ़ी — मगर यह कि वह इमाम के पीछे हो।” इन तमाम अक़वाल में सही बात इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद, और इमाम मालिक के आखिरी क़ौल के मुताबिक़ है कि सूरह फ़ातिहा हर रकअत में हर शख्स पर वाजिब है, क्योंकि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “उस शख्स की नमाज़ नहीं होती जो उसमें फ़ातिहतुल-किताब न पढ़े।” और आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख्स ऐसी नमाज़ पढ़े जिसमें उम्मुल-कुरआन न पढ़े तो वह नाक़िस है”, यह बात आप ﷺ ने तीन मर्तबा फ़रमाई। हज़रत अबू हुदैरह ने कहा: “रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे हुक्म दिया कि मैं एलान करूँ: फ़ातिहतुल-
--	--

of Allah ﷻ commanded me to call out: "There is no prayer except with the recitation of the Fatihah of the Book." Abu Dawad transmitted it. As the prostration or ruku of a rak'ah does not replace that of another rak'ah, so the recitation of one rak'ah does not replace that of another. That is stated by 'Abdullah ibn 'Awn, Ayyub as-Sakhtiyani, Abu Thawr and others among the people of ash-Shafi'i and Dawud ibn 'Alī. The same thing is reported from al-Awza'i and Makhul also stated that.	किताब की क़िराअत के बग़ैर नमाज़ नहीं होती।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है। जिस तरह एक रकअत का सज्दा या रुकू दूसरी रकअत के सज्दा या रुकू की जगह काफ़ी नहीं होता, उसी तरह एक रकअत की क़िराअत दूसरी रकअत की क़िराअत के बदले काफ़ी नहीं हो सकती। यही बात अब्दुल्लाह बिन औन, अय्यूब सख़्तियानी, अबू सौर और दीगर शाफ़ई उलमा, नीज़ दाऊद बिन अली ने बयान की है। यही क़ौल इमाम औज़ाई से भी मनकूल है, और मखूल ने भी यही कहा है।"
It is related that 'Umar ibn al-Khattab, 'Abdullah ibn 'Abbas, Abu Hurayrah, Ubayy ibn Ka'b, Abu Ayyub al-Ansari, 'Abdullah ibn Amr ibn al-As, 'Ubada ibn as-Samit, Abu Sa'id al-Khudri, 'Uthman ibn Abi al-'As and Khawwat ibn Jubayr said, 'There is no prayer except with the Fatihah of the Book.' That is the position of Ibn 'Amr, and is famous in the school of al-Awza'i. Those	"रिवायत किया गया है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अबू हु़रैरह, उबय्य बिन कअब, अबू अय्यूब अंसारी, अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस, उबादा बिन सामित, अबू सईद ख़ुदरी, उस्मान बिन अबी अल-आस, और ख़व्वात बिन जुबैर ने फ़रमाया: "फ़ातिहतुल-किताब के बग़ैर नमाज़ नहीं होती।" यही मौक़िफ़ इब्र उमर का भी है, और यही इमाम औज़ाई के मज़हब में मशहूर है। यह तमाम

Companions are models and examples and all of them made the Fātiḥah obligatory in every rak‘ah.	सहाबा-ए-किराम नमूना और मुक़्तदा हैं, और इन सब ने हर रकअत में सूरह फ़ातिहा को वाजिब करार दिया है।"
Imam Abu ‘Abdullah Muhammad ibn Yazid ibn Majah al-Qazwini transmitted something in his Sunan which removes any disagreement or ambiguity. He reported from Abu Kurayb from Muhammad ibn Fuḍayl, from Suwayd ibn Sa‘īd and from ‘Ali ibn Mushar, all from Abu Sufyan as-Sa‘di from Abu Nadrah that Abu Sa‘id al-Khudri said that the Messenger of Allah ﷺ said, ‘There is no prayer for someone who does not recite the Fatihah and another surah in every rak‘ah, be it a fard prayer or any other.’ We find in Sahih Muslim from Abu Hurayrah that the Prophet ﷺ told someone to whom he taught the prayer: ‘Do that throughout all your prayer.’ Another proof of that is what Abu Dawud related that Nafi ibn Mahmud ibn ar-Rabi al-	"इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यज़ीद बिन माजह अल-क़ज़वीनी ने अपनी सुनन में एक ऐसी रिवायत नक़ल की है जो इस मसले में हर इख़िलाफ़ और इश्काल को दूर कर देती है। उन्होंने अबू कुरैब से, उन्होंने मुहम्मद बिन फ़ुदैल से, नीज़ सुवैद बिन सईद और अली बिन मुसहर से, और इन सब ने अबू सुफ़यान अस-सअदी से, उन्होंने अबू नज़रह से रिवायत किया कि अबू सईद ख़ुदरी ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: "उस शख्स की नमाज़ नहीं होती जो हर रकअत में फ़ातिहा और उसके साथ कोई दूसरी सूरत न पढ़े, ख़्वाह वह फ़र्ज़ नमाज़ हो या कोई और।" और सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरह से मर्वी है कि नबी ﷺ ने एक ऐसे शख्स से, जिसे आप नमाज़ सिखा रहे थे, फ़रमाया: "अपनी पूरी नमाज़ में इसी तरह करो।" इसकी एक और दलील वह रिवायत है जिसे अबू दाऊद ने नक़ल किया है कि नाफ़े बिन महमूद

Ansari said, “‘Ubadah ibn as-Samit was late for the Subh prayer and the muadhdhin, Abu Nuaym, did the iqamah for the prayer and Abu Nuaym led the people in the prayer. Ubadah ibn as-Samit came forward and I along with him until we were in a line behind Abu Nuaym. Abu Nuaym was reciting aloud. Ubadah began to recite the Umm al-Quran. When he finished, I said to Ubadah, “Did I hear you reciting the Umm al-Quran while Abu Nuaym was reciting aloud?” “Yes,” he answered, “The Messenger of Allah ﷺ led us in some prayers in which recitation was aloud and it was confusing for him. When he finished, he faced us and said, ‘Do you recite when I am reciting aloud?’ Some of us said, ‘We do that.’ He said, ‘No, I tell you not to contend with me in the Quran. When I recite aloud, do not recite anything except the Umm al-Quran.’” This is a clear text about someone following the imam. Abu Isa at-Tirmidhi	बिन रबीअ अल-अंसारी ने कहा: “उबादा बिन सामित फ़ज्र की नमाज़ में देर से पहुँचे, और मुअज्ज़िन अबू नईम ने इक्रामत कह दी थी और लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे। उबादा बिन सामित आगे बढ़े और मैं भी उनके साथ था, यहाँ तक कि हम अबू नईम के पीछे सफ़्र में खड़े हो गए। अबू नईम बुलंद आवाज़ से क़िराअत कर रहे थे, और उबादा ने उम्मुल-कुरआन (सूरह फ़ातिहा) पढ़ना शुरू कर दी। जब वह फ़ारिग़ हुए तो मैंने उनसे कहा: ‘क्या मैंने आपको उम्मुल-कुरआन पढ़ते हुए सुना जबकि अबू नईम बुलंद आवाज़ से क़िराअत कर रहे थे?’ उन्होंने जवाब दिया: ‘हाँ। रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें एक नमाज़ पढ़ाई जिसमें जहरी क़िराअत थी, तो लोगों की क़िराअत आप पर मुश्तबह हो गई। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो हमारी तरफ़ मुतवज्जेह होकर फ़रमाया: “क्या तुम लोग मेरे बुलंद आवाज़ से क़िराअत करने के दौरान भी क़िराअत करते हो?” कुछ लोगों ने कहा: “जी हाँ, हम ऐसा करते हैं।” आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐसा न करो, मैं तुम्हें कुरआन में मेरे साथ झगड़ने से मना करता हूँ। जब मैं बुलंद आवाज़ से क़िराअत करूँ तो
--	--

transmitted the same from the hadith of Muhammad ibn Ishaq and said that it is a hasan hadith.	उम्मुल-कुरआन के सिवा कुछ न पढ़ो।" यह मुक्तदी के बारे में एक वाज़ेह नस है। अबू ईसा तिर्मिज़ी ने भी मुहम्मद बिन इस्हाक़ की हदीस से यही रिवायत नक़ल की है और फ़रमाया कि यह हदीस हसन है।"
The practice is based on this hadith regarding recitation behind the imam among most of the people of knowledge among the Companions of the Prophet ﷺ and the Tabiun. It is the position of Malik ibn Anas, Ibn al-Mubārak, ash-Shafī'i, Ahmad, and Ishaq. They think that one recites behind the imam. Ad-Daraqutni also transmitted it and said that it has a good isnad and all its men are trustworthy. He mentioned that Mahmud ibn ar-Rabi used to live in Jerusalem and Abu Nuaym was the first to give the adhan in Jerusalem. Abu Muḥammad Abd al-Haqq said, "Al-Bukhari did not mention Nafi ibn Mahmud in his History nor did Ibn Abī Ḥātim. Neither al-Bukhari nor Muslim transmitted anything from	"अक्सर अहल-ए-इल्म, ख़्वाह वह सहाबा-ए-किराम में से हों या ताबिईन में से, इमाम के पीछे क़िराअत के बारे में इसी हदीस पर अमल करते हैं। यही इमाम मालिक बिन अनस, इब्न अल-मुबारक, इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद, और इस्हाक़ का भी मज़हब है। उनके नज़दीक मुक्तदी इमाम के पीछे क़िराअत करेगा। इमाम दारकुत्नी ने भी इस हदीस को रिवायत किया है और कहा है कि इसकी सनद अच्छी है और इसके तमाम रावी सिका हैं। उन्होंने ज़िक्र किया कि महमूद बिन रबीअ बैतुल-मक़दिस में रहते थे और अबू नईम बैतुल-मक़दिस में अज़ान देने वाले पहले शख्स थे। अबू मुहम्मद अब्दुलहक़ ने कहा: "इमाम बुखारी ने अपनी तारीख़ में नाफ़े बिन महमूद का ज़िक्र नहीं किया और न ही इब्न अबी हातिम ने। नीज़ इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम दोनों ने उनसे

him.” Abu Umar said that he is unknown.	कोई रिवायत नक़ल नहीं की।” अबू उमर ने कहा कि वह मजहूल हैं।”
Ad-Daraqutni mentioned that Yazid ibn Sharīk said, “I asked Umar about reciting behind the imam and he ordered me to recite. I asked, ‘Even if it is you?’ ‘Even if it is me,’ he answered. I said, ‘Even if you are reciting aloud?’ He replied, ‘Even if I am reciting...’aloud.’ Ad-Daraqutni said that it is a sound isnad. It is related that Jabir ibn Abdullah said that the Messenger of Allah ﷺ said, “The imam is a guarantor, so do what he does.” Abu Hatim said, “This is sound for those who believe that one recites behind the imam. Abu Hurayrah al-Farisi used to give a legal decision that he recites to himself when he says, ‘Sometimes I am behind the imam.’ Then he cited as evidence the words of the Almighty, “I have divided the prayer between me and Myself. My slave will have what he asks for,” and the Messenger ﷺ	”इमाम दारकुली ने ज़िक्र किया है कि यज़ीद बिन शरीक ने कहा: ”मैंने हज़रत उमर से इमाम के पीछे क़िराअत के बारे में पूछा तो उन्होंने मुझे क़िराअत करने का हुक्म दिया। मैंने पूछा: ‘अगरचे इमाम आप ही हों?’ उन्होंने फ़रमाया: ‘अगरचे मैं ही हूँ।’ मैंने कहा: ‘अगरचे आप बुलंद आवाज़ से क़िराअत कर रहे हों?’ उन्होंने जवाब दिया: ‘अगरचे मैं बुलंद आवाज़ से क़िराअत कर रहा हूँ।” इमाम दारकुली ने कहा कि इसकी सनद सहीह है। रिवायत किया गया है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: ”इमाम ज़ामिन है, लिहाज़ा वही करो जो वह करता है।” अबू हातिम ने कहा: ”यह रिवायत उन लोगों के हक़ में सहीह है जो इमाम के पीछे क़िराअत के क़ाइल हैं।” अबू हुरैरह अल-फ़ारसी फ़तवा दिया करते थे कि मुक्तदी अपने दिल में क़िराअत करे, जब उनसे कहा जाता: ”कभी मैं इमाम के पीछे होता हूँ।” फिर वह इस पर अल्लाह तआला के इस फ़रमान से

said, "Recite. The slave says, 'Praise belongs to Allah, the Lord of the worlds....'	इस्तिदलाल करते थे: "मैंने नमाज़ को अपने और अपने बंदे के दरमियान तक्सीम किया है, और मेरे बंदे के लिए वही है जो वह माँगे।" और रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "क्रिराअत करो। बंदा कहता है: 'तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है..."
As for the evidence that the former use, taking the words of the Prophet ﷺ: "When he recites, be silent," Muslim transmitted it from the hadith of Abu Musa al-Ashari. He said that there is an addition in it from Qatadah in the hadith of Jabir ibn Sulaymān: "When he recites, be silent." Ad-Daraqutni said, Sulayman at-Taymi does not follow those words from Qatadah. The memorisers of the people of Qatadah opposed him and did not mention it. They include Shubah, Hisham, Sa'id ibn Abi Arubah, Hammam, Abu Awanah, Mamar, and Adi ibn Abi Ammarah. Ad-Daraqutni said, 'Their consensus indicates that it is weak.' It is related	"जहाँ तक उन लोगों की दलील का तअल्लुक है जो नबी ﷺ के इस फ़रमान से इस्तिदलाल करते हैं: "जब इमाम क्रिराअत करे तो ख़ामोश रहो", तो इमाम मुस्लिम ने इसे अबू मूसा अशअरी की हदीस से रिवायत किया है। उन्होंने कहा कि इसमें क़तादा की तरफ़ से जाबिर बिन सुलैमान की हदीस में यह इज़ाफ़ा मौजूद है: "जब वह क्रिराअत करे तो ख़ामोश रहो।" इमाम दारकुत्नी ने कहा: "सुलैमान अत-तैमी ने क़तादा से इन अल्फ़ाज़ की रिवायत में किसी की मुताबअत नहीं पाई।" क़तादा के मोतबर हुप्फ़ाज़ ने उनकी मुखालफ़त की और इन अल्फ़ाज़ को ज़िक्र नहीं किया। उनमें शुअबा, हिशाम, सईद बिन अबी अरूबह, हम्माम, अबू अवानह, मामर, और अदी बिन अबी अम्मरह शामिल हैं।

from Abdullah ibn Amir from Qatadah, following at-Taymi, but he is not strong and al-Qattan abandoned him. Abu Dawud also transmitted this addition from the hadith of Abu Hurayrah. He said, ‘This addition, “when he recites, be silent,” is not preserved.’ Abu Muhammad ‘Abd al-Haqq mentioned that Muslim considered the hadith of Abu Hurayrah sound, saying, ‘I consider it sound.’	इमाम दारकुत्नी ने कहा: “इन सब का इतिफ़ाक़ इस बात की दलील है कि यह इज़ाफ़ा ज़ईफ़ है।” अब्दुल्लाह बिन आमिर से भी क़तादा के वास्ते से, अत-तैमी की मुताबअत में, यह रिवायत मनकूल है, लेकिन वह क़वी रावी नहीं हैं और इमाम अल-क़त्तान ने उन्हें तर्क कर दिया था। इमाम अबू दाऊद ने भी हज़रत अबू हुरैरह की हदीस से यह इज़ाफ़ा रिवायत किया है, और फ़रमाया: “यह इज़ाफ़ा ‘जब वह क़िराअत करे तो ख़ामोश रहो’ महफूज़ नहीं है।” अबू मुहम्मद अब्दुलहक़ ने ज़िक्र किया कि इमाम मुस्लिम हज़रत अबू हुरैरह की हदीस को सहीह समझते थे, और कहते थे: “मैं इसे सहीह समझता हूँ।”
Part of what indicates its soundness in his view is its inclusion in his book from the hadith of Abu Musa even if there is no consensus about it. Imam Ahmad ibn Hanbal and Ibn al-Mundhir considered it to be sound. The words of the Almighty: “When the Quran is recited listen to it and be silent” were revealed in Makkah and the prohibition against	“उनके नज़दीक़ इस हदीस के सहीह होने की एक दलील यह भी है कि इमाम मुस्लिम ने इसे अपनी किताब में हज़रत अबू मूसा की हदीस के ज़िम्न में ज़िक्र किया है, अगरचे इस पर इज्मा नहीं है। इमाम अहमद बिन हम्बल और इब्न अल-मुन्ज़िर ने भी इसे सहीह क़रार दिया है। अल्लाह तआला का फ़रमान: “जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे ग़ौर से सुनो और ख़ामोश रहो” (अल-आराफ़): मक्का

speaking in the prayer was revealed in Madinah, as Zayd ibn Arqam said. So it is not an argument. It is the idolators who were meant according to what Sa'id ibn al-Musayyab said. Ad-Daraqutni related from Abu Hurayrah that it was revealed about raising the voice when behind the Messenger of Allah ﷺ. Abdullah ibn Amir said that it is weak.	में नाज़िल हुआ था, जबकि नमाज़ में गुफ़्तगू की मुमानअत मदीना में नाज़िल हुई, जैसा कि ज़ैद बिन अरक़म ने बयान किया है। इसलिए यह आयत इस मसले में दलील नहीं बनती। सईद बिन अल-मुसय्यब ने कहा कि इस आयत से मुराद मुश्रिकीन थे। इमाम दारकुत्नी ने हज़रत अबू हुरैरह से रिवायत किया है कि यह आयत रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे बुलंद आवाज़ से बोलने के बारे में नाज़िल हुई थी। अब्दुल्लाह बिन आमिर ने कहा कि यह रिवायत ज़ईफ़ है।"
As for his words, 'Do not contend with me in the Quran,' Malik transmitted that from Ibn Shihāb from Ibn Ukaymah al-Laythī. According to Mālik, his name is Amr, and others said that his name was Amir, Yazid, Ammarah or Ubadah. His kunyah was Abu-l-Walid. He died in 101 AH at the age of ninety-nine. Az-Zuhri only related one hadith from him. He is trustworthy. Muhammad ibn Amr and others related from him. The meaning of his	"जहाँ तक नबी ﷺ के इस फ़रमान का तअल्लुक है: "कुरआन में मेरे साथ झगड़ा न करो", तो इमाम मालिक ने इसे इब्न शिहाब से, और उन्होंने इब्न उकैमह अल-लैसी से रिवायत किया है। इमाम मालिक के नज़दीक उनका नाम अम्र था, जबकि दूसरों ने कहा है कि उनका नाम आमिर, यज़ीद, अम्मरह या उबादह था। उनकी कुनियत अबू अल-वलीद थी। वह 101 हिजरी में निन्यानवे बरस की उम्र में वफ़ात पा गए। इमाम जुहरी ने उनसे सिर्फ़ एक हदीस रिवायत की है। वह सिका रावी

hadith is: ‘Do not recite aloud when I recite aloud. That is contending and vying. Recite it inside yourselves.’ It is made clear by the hadith of Ubadah, the legal decisions of Umar al-Faruq and Abu Hurayrah who related both hadiths. If his words, ‘Do not contend with me in the Quran,’ had been understood to entail a total prohibition, he would not have given a legal decision contrary to it and to the words of az-Zuhri in the hadith of Ibn Ukaymah. So people stopped reciting with the Messenger of Allah ﷺ when the Messenger of Allah ﷺ recited aloud when they heard that from him.	हैं। मुहम्मद बिन अम्र और दूसरे लोगों ने भी उनसे रिवायत की है। इस हदीस का मतलब यह है: “जब मैं बुलंद आवाज़ से क़िराअत करूँ तो तुम भी बुलंद आवाज़ से क़िराअत न करो। यही झगड़ना और मुक़ाबला करना है। तुम अपने दिल में क़िराअत करो।” इसकी वज़ाहत उबादहँ की हदीस, हज़रत उमर फ़ारूक़ के फ़तावों, और हज़रत अबू हु़रैरहँ की रिवायत से होती है, जिन्होंने दोनों हदीसों से रिवायत की हैं। अगर नबी ﷺ के इस फ़रमान “कुरआन में मेरे साथ झगड़ा न करो” से मुकम्मल मुमानअत मुराद होती, तो हज़रत अबू हु़रैरहँ उसके खिलाफ़ फ़तवा न देते, और न ही इमाम जुहरी इब्र उकैमह की हदीस में उसके बरअक्स बात कहते। चुनाँचे जब लोगों ने रसूलुल्लाह ﷺ से यह बात सुनी तो उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ जहरी क़िराअत के वक़्त बुलंद आवाज़ से क़िराअत करना छोड़ दिया।”
As for the words of the Prophet ﷺ, ‘If someone has an imam, the imam recites on his behalf,’ the hadith is weak. Al-Hasan	“जहाँ तक नबी ﷺ के इस फ़रमान का तअल्लुक़ है: “जिस शख्स का इमाम हो, तो इमाम की क़िराअत उसकी तरफ़ से काफ़ी है”, तो यह

ibn Ammarah gives its isnad, and he is abandoned, and Abu Hanīfah, who is weak, both relating from Musa ibn Abi Aishah from Abdullah ibn Shaddad from Jabir. Ad-Daraqutni transmitted it and said, ‘Sufyan ath-Thawri, Shubah, Israil ibn Yunus, Sharik, Abu Khalid ad-Dalani, Abu-l-Ahwas, Sufyan ibn Uyaynah, Jarir ibn Abd al-Hamid and others related it from Musa ibn Abi Aishah from Abdullah ibn Shaddad mursal from the Prophet ﷺ. That is correct. As for the statement of Jabir, ‘Whoever prays a rak‘ah in which he did not recite the Umm al-Quran has not prayed’, it is related by Malik from Wahb ibn Kaysān from Jabir, and Jabir has it from the Prophet ﷺ. Ibn Abd al-Barr said that Yahya ibn Salām, the author of the Tafsir, related it from Malik from Abu l-Wahb ibn Kaysan from Jabir from the Prophet ﷺ. What is correct is that its meaning,	हदीस जईफ़ है। इसकी सनद में हसन बिन अम्मारह हैं, जो मतरूक रावी हैं, और अबू हनीफ़ा भी इसमें रिवायत करते हैं, जबकि वह जईफ़ शुमार किए गए हैं। यह दोनों मूसा बिन अबी आइशह से, वह अब्दुल्लाह बिन शद्दाद से, और वह जाबिर से रिवायत करते हैं। इमाम दारकुत्नी ने इसे रिवायत किया है और कहा है: “सुफ़यान सौरी, शुअबा, इस्राईल बिन यूनुस, शरीक, अबू ख़ालिद अद-दालानी, अबू अल-अहस, सुफ़यान बिन उयैनह, जरीर बिन अब्दुलहमीद और दूसरे लोगों ने इसे मूसा बिन अबी आइशह से, वह अब्दुल्लाह बिन शद्दाद से, मुरसलन नबी ﷺ से रिवायत किया है, और यही सहीह है।” जहाँ तक हज़रत जाबिर के इस क़ौल का तअल्लुक है: “जिस शख्स ने ऐसी रकअत पढ़ी जिसमें उम्मुल-कुरआन न पढ़ी, उसने नमाज़ नहीं पढ़ी”, तो इसे इमाम मालिक ने वहब बिन कैसान से, उन्होंने जाबिर से रिवायत किया है, और जाबिर ने इसे नबी ﷺ से नक़ल किया है। इब्न अब्दुलबर ने कहा कि तफ़्सीर के मुसन्निफ़ यह्या बिन सलाम ने इसे इमाम मालिक से, वह अबू अल-वहब बिन कैसान से, वह जाबिर से, और
---	--

stopping with Jabir, is stated in the Muwatta. Part of the fiqh taken from it is that a rakah in which the Umm al-Quran is not recited is invalid. It attests to the soundness of what Ibn al-Qasim believed. He related it from Malik regarding the invalidation of the rak'ah building on other rak'ahs and the person praying does not repeat a rak'ah in which he did not recite the Fātiḥah of the Book. Also part of that is that the imam recites on behalf of those behind him. This is the school of Jabir and others disagreed with him about it.	वह नबी ﷺ से रिवायत किया है। सहीह बात यह है कि इसका मवकूफ़ होना, यानी हज़रत जाबिर के क़ौल पर मवकूफ़ होना, मुवत्ता में मज़कूर है। इससे जो फ़िक्ही मसअला मुस्तनबत होता है वह यह है कि वह रकअत जिसमें उम्मुल-कुरआन न पढ़ी जाए बातिल है। यह बात इब्न अल-क़ासिम के मौक़िफ़ की ताईद करती है। उन्होंने इमाम मालिक से यह रिवायत किया है कि ऐसी रकअत बातिल हो जाती है और बाद की रकअतें उस पर क़ाइम नहीं हो सकतीं, और नमाज़ पढ़ने वाला उस रकअत को दोबारा अदा करेगा जिसमें उसने फ़ातिहतुल-किताब नहीं पढ़ी। इसी से यह भी मालूम होता है कि इमाम अपने मुक्तादियों की तरफ़ से क़िराअत करता है। यह हज़रत जाबिर का मज़हब है, जबकि दूसरे उलमा ने इस मसले में उनसे इख़िलाफ़ किया है।"
Ibn al-Arabi said, 'He said, "There is no prayer for the one who does not recite the Fatihah of the Book." People disagree about this principle and whether the negation applies to the entire prayer or to a part.	"इब्न अल-अरबी ने कहा: "नबी ﷺ ने फ़रमाया: 'उस शख्स की नमाज़ नहीं होती जो फ़ातिहतुल-किताब न पढ़े।' लोग इस अस्ल मसले में इख़िलाफ़ रखते हैं कि यहाँ नफ़ी पूरी नमाज़ की है या उसके किसी हिस्से की। इस

The fatwa varies according to the different states of those who investigate. The best-known and strongest opinion is that the negation is general. The strongest comes from the transmission of Malik that the prayer of someone who does not recite the Fātiḥah is invalid. Then we look at its repetition in every rakah. Whoever reflects on the words of the Prophet ﷺ, “Do that in all your prayer” obliges him to repeat the recitation as he repeats the ruku and prostration, but Allah knows best.’	बारे में फ़तवा तहक़ीक़ करने वालों के मुख्तलिफ़ फ़हम के मुताबिक़ बदल जाता है। सबसे मशहूर और सबसे क़वी क़ौल यह है कि यह नफ़ी आम है। इमाम मालिक से मनकूल सबसे क़वी रिवायत यह है कि जो शख्स फ़ातिहा न पढ़े उसकी नमाज़ बातिल है। फिर हर रकअत में इसकी तकरार के मसले को देखा जाएगा। जो शख्स नबी ﷺ के इस फ़रमान पर ग़ौर करे: ‘यह अपनी पूरी नमाज़ में करो’ तो उस पर लाज़िम होगा कि वह हर रकअत में क़िराअत को उसी तरह दोहराए जैसे रुकू और सज्दा हर रकअत में दोहराता है। लेकिन अल्लाह ही बेहतर जानता है।”
The hadiths and ideas mentioned about this that specify the Fātiḥah refute the statement of the Kufans about the Fatihah not being specified and other ayahs of the Quran being the same as it. The Prophet ﷺ specified it when he said what we mentioned. It is clear from Allah Almighty that it is meant in His words, ‘Establish the prayer.’ Abu Dawud related that Abu Sa‘id	“सूरह फ़ातिहा की तअय्युन के बारे में जो अहादीस और अक़वाल ज़िक्र किए गए हैं, वह अहल-ए-कूफ़ा के इस क़ौल की तर्दीद करते हैं कि सूरह फ़ातिहा ख़ास नहीं है और कुरआन की दूसरी आयात भी उसके क़ाइम-मक़ाम हो सकती हैं। नबी ﷺ ने उसे ख़ास तौर पर मुतअय्यिन फ़रमाया, जैसा कि हम पहले ज़िक्र कर चुके हैं। अल्लाह तआला के फ़रमान: “नमाज़ क़ायम करो” से भी वाज़ेह होता है कि इसी से मुराद सूरह

al-Khudri said, 'We were commanded to recite the Fātiḥah of the Book and what is easy.' This hadith indicates that the words of the Prophet ﷺ to the Bedouin, 'Recite what is easy for you of the Quran,' mean not more than the Fātiḥah. This explains the words of the Almighty: 'Recite as much of the Quran as is easy for you.' Muslim related from Ubadah ibn aṣ-Samit that the Messenger of Allah ﷺ said, 'There is no prayer for the one who does not recite the Umm al-Quran,' and added 'and more', and that he said, 'it is incomplete' three times. This means that it does not satisfy the legal requirement by the aforementioned proofs. Khidaj (incomplete) means deficient and unsound. Al-Akhfash said that the verb khadaja is used of a she-camel miscarrying before the fetus is completely formed.	फ़ातिहा है। अबू दाऊद ने रिवायत किया है कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ने फ़रमाया: "हमें हुक्म दिया गया था कि हम फ़ातिहतुल-किताब और जो कुरआन आसान हो वह पढ़ें।" यह हदीस इस बात पर दलालत करती है कि नबी ﷺ का उस अरबी से यह फ़रमान: "कुरआन में से जो तुम्हारे लिए आसान हो वह पढ़ो", सूरह फ़ातिहा के अलावा किसी चीज़ पर महमूल नहीं है। इसी से अल्लाह तआला के इस फ़रमान की तफ़सीर भी वाज़ेह होती है: "पस कुरआन में से जितना आसान हो पढ़ो।" इमाम मुस्लिम ने उबादा बिन सामित से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "उस शख्स की नमाज़ नहीं होती जो उम्मुल-कुरआन न पढ़े", और उसके साथ "और कुछ मज़ीद" का भी इज़ाफ़ा किया, और फ़रमाया: "वह नाक़िस है", यह बात आप ﷺ ने तीन मर्तबा फ़रमाई। इसका मतलब यह है कि मज़कूरा दलाइल की बिना पर ऐसी नमाज़ शरई एतिबार से काफ़ी नहीं होती। लफ़्ज़ "ख़िदाज" (नाक़िस) का मानी है: कमी वाली और ग़ैर-दुरुस्त। अख़फ़श ने कहा है कि "ख़दजतिन-नाक़तु" उस वक़्त कहा जाता है जब ऊँटनी बच्चा
---	--

	मुकम्मल बनने से पहले गिरा दे।"
Investigation makes it clear that the prayer is not permitted with that deficiency because the prayer is not complete. If someone leaves his prayer without completing it, he must repeat it as he is commanded according to its ruling. If someone claims that it is allowed while affirming that it is incomplete, then he must provide evidence, but there is no way to do so in a binding way. Allah knows best.	"तहक्कीक़ से यह बात वाज़ेह होती है कि इस कमी के साथ नमाज़ जायज़ नहीं होती, क्योंकि नमाज़ मुकम्मल नहीं होती। जब कोई शख्स अपनी नमाज़ को मुकम्मल किए बग़ैर छोड़ दे तो उस पर लाज़िम है कि वह उसे दोबारा अदा करे, जैसा कि उसके हुक्म के मुताबिक़ उस पर वाजिब है। अगर कोई शख्स यह दावा करे कि नमाज़ नाक़िस होने के बावजूद जायज़ है, तो उस पर दलील पेश करना लाज़िम होगा, लेकिन उसके लिए कोई क़तई और मज़बूत दलील मौजूद नहीं। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।"
It is related from Malik that recitation is not obliged in any part of the prayer. That is like what ash-Shafi'i used to say in Iraq in respect of someone who forgets it. Then he retracted that position in Egypt and said, 'If someone can recite the Fātiḥah of the Book well, the prayer is only achieved by it and he is not allowed to omit a single letter of it. If he does not recite it or omits a single letter	"इमाम मालिक से यह रिवायत मनकूल है कि नमाज़ के किसी हिस्से में क़िराअत वाजिब नहीं है। यह उसी तरह है जैसे इमाम शाफ़ई इराक़ में उस शख्स के बारे में कहते थे जो सूरह फ़ातिहा भूल जाए। फिर मिस्र में उन्होंने अपने इस क़ौल से रुजू कर लिया और फ़रमाया: "अगर कोई शख्स फ़ातिहतुल-किताब अच्छी तरह पढ़ सकता हो तो नमाज़ सिर्फ़ उसी के ज़रिए अदा होगी, और उसके लिए जायज़ नहीं कि उसका

of it, then he must repeat the prayer, even if he recited something else.’ This is the sound view regarding this question. As for what is related about Umar praying Maghrib and not reciting in it and when that was mentioned to him, he asked, ‘How were the ruku and prostration?’ ‘Good,’ they answered. He said, ‘There is no harm.’ The hadith is munkar in its words and its isnad is broken because it is related from Ibrahim ibn al-Harith at-Taymi from Umar, but sometimes Ibrāhīm related it from Abu Salamah ibn Abd ar-Rahman from Umar. Both are broken and provide no evidence.	एक हरफ़ भी छोड़ दे। अगर वह उसे न पढ़े या उसका एक हरफ़ भी छोड़ दे, तो उस पर नमाज़ दोहराना लाज़िम होगा, अगरचे उसने उसके अलावा कुछ और पढ़ लिया हो।” इसी मसले में यही सहीह क़ौल है। जहाँ तक इस रिवायत का तअल्लुक है कि हज़रत उमर ने मग़रिब की नमाज़ पढ़ी और उसमें क़िराअत नहीं की, फिर जब उनसे उसका ज़िक्र किया गया तो उन्होंने पूछा: “रुकू और सज्दा कैसे थे?” लोगों ने कहा: “अच्छे थे।” तो उन्होंने फ़रमाया: “कोई हरज नहीं।” तो यह हदीस अपने अल्फ़ाज़ के एतिबार से मुनकर है, और इसकी सनद भी मुनक़तिअ है, क्योंकि यह इब्राहीम बिन अल-हारिस अत-तैमी से हज़रत उमर के वास्ते से रिवायत की जाती है, जबकि कभी इब्राहीम इसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान के वास्ते से हज़रत उमर से रिवायत करते हैं। यह दोनों सनदें मुनक़तिअ हैं और इनसे कोई दलील क़ाइम नहीं होती।”
Malik mentioned it in the <i>Muwatta</i>. Some transmitters have it, but it is not found with Yahya and a group along with him because Malik removed it	”इमाम मालिक ने इसे मुवत्ता में ज़िक्र किया है। कुछ रावियों ने इसे रिवायत किया है, लेकिन यहा और उनके साथ एक जमाअत की रिवायत में यह

from his book at the end. He said, ‘There is no action based on it because the Prophet ﷺ said, “Any prayer in which the Umm al-Quran is not recited is incomplete.”’	मौजूद नहीं, क्योंकि इमाम मालिक ने आखिर में इसे अपनी किताब से हज़फ़ कर दिया था। उन्होंने फ़रमाया: “इस पर अमल नहीं है, क्योंकि नबी ﷺ ने फ़रमाया है: ‘हर वह नमाज़ जिसमें उम्मुल-कुरआन न पढ़ी जाए नाक़िस है।’”
It is related that Umar repeated that prayer, and that is sound. Yahya ibn Yahya an-Naysaburi related from Abu Muawiyah from al-Amash from Ibrahim an-Nakha‘i from Hammam ibn al-Harith that Umar forgot to recite in <i>Maghrib</i> and repeated the prayer with them. Ibn Abd al-Barr said, “This hadith is connected and Hammam was witness to it from Umar. That was related by various paths.” Ashhab related what Malik said: “Malik was asked about someone who forgot to recite, ‘Do you approve of what Umar said?’” He answered, “I do not acknowledge what Umar did,” and he did not acknowledge the hadith. He said, “People relate that Umar did this in <i>Maghrib</i> and they did not say, ‘Glory be	“रिवायत किया गया है कि हज़रत उमर ने वह नमाज़ दोबारा पढ़ी, और यही रिवायत सहीह है। यह्या बिन यह्या अन-नैसाबूरी ने अबू मुआवियह से, उन्होंने आमश से, उन्होंने इब्राहीम नख़ई से, उन्होंने हम्माम बिन हारिस से रिवायत किया है कि हज़रत उमर मग़रिब की नमाज़ में क़िराअत भूल गए थे, फिर उन्होंने लोगों के साथ नमाज़ दोबारा पढ़ी। इब्न अब्दुलबर ने कहा: “यह हदीस मुत्तसिल है और हम्माम ने खुद हज़रत उमर से इस वाक़िए को देखा था। यह रिवायत मुख्तलिफ़ तुरुक़ से नक़ल की गई है।” अशहब ने इमाम मालिक का यह क़ौल नक़ल किया है: “इमाम मालिक से उस शख्स के बारे में पूछा गया जो क़िराअत भूल जाए: ‘क्या आप हज़रत उमर के अमल को दुरुस्त समझते हैं?’ उन्होंने जवाब दिया: ‘मैं हज़रत उमर के इस अमल को तस्लीम नहीं

to Allah!’ I think that someone who does that repeats the prayer.”	करता,’ और उन्होंने इस हदीस को भी क़बूल नहीं किया।” इمام मालिक ने फ़रमाया: “लोग रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर के साथ यह मामला मग़रिब की नमाज़ में पेश आया, और लोगों ने ‘सुब्हानल्लाह’ भी नहीं कहा। मेरा ख़याल है कि जो शख्स ऐसा करे वह नमाज़ दोबारा पढ़े।”
Scholars agree that there is no prayer without recitation and they agree that there is no particular amount specified beyond the <i>Fatihah</i> of the Book, although they recommend that only one <i>surah</i> should be recited with the <i>Fatihah</i> because that is the maximum which has come from the Prophet ﷺ. Malik said, “The sunnah of recitation is to recite the <i>Umm al-Quran</i> and a <i>surah</i> in the first two <i>rakahs</i> and only the <i>Fatihah</i> in the last two.” Al-Awza’i said, “You should recite the <i>Umm al-Quran</i>. If you do not recite <i>Umm al-Quran</i> and recite something else instead, that satisfies the requirements.” He	“उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि क़िराअत के बग़ैर नमाज़ नहीं होती, और इस बात पर भी उनका इत्तिफ़ाक़ है कि सूरह फ़ातिहा के अलावा कोई ख़ास मिक्दर मुक़रर नहीं है, अगरचे वह इस बात को मुस्तहब समझते हैं कि फ़ातिहा के साथ सिर्फ़ एक सूरत पढ़ी जाए, क्योंकि नबी ﷺ से ज़्यादा से ज़्यादा यही मनकूल है। इمام मालिक ने फ़रमाया: “क़िराअत की सुन्नत यह है कि पहली दो रकअतों में उम्मुल-कुरआन (सूरह फ़ातिहा) और एक सूरत पढ़ी जाए, और आखिरी दो रकअतों में सिर्फ़ फ़ातिहा पढ़ी जाए।” इمام औज़ाई ने फ़रमाया: “तुम्हें उम्मुल-कुरआन पढ़नी चाहिए। अगर तुम उम्मुल-कुरआन न पढ़ो और उसके बजाय कुछ और पढ़ लो तो वह भी काफ़ी हो जाएगा।” उन्होंने

said, "If he forgets to recite in three <i>rak'ahs</i>, he repeats it." Ath-Thawrī said, "In the first two <i>rak'ahs</i>, you recite the <i>Fatihah</i> and a <i>surah</i>, and you can glorify in the last two if you wish, or if you wish, you may recite. If you neither recite nor glorify your prayer is still allowed." That is the position of Abu Ḥanifah and the rest of the Kufans. Ibn al-Mundhir said, "We related that Ali ibn Abi Talib said, 'Recite in the first two and glorify in the last two.'"	यह भी कहा: "अगर कोई शख्स तीन रकअतों में क़िराअत भूल जाए तो वह नमाज़ दोबारा पढ़ेगा।" इमाम सौरी ने फ़रमाया: "पहली दो रकअतों में सूरह फ़ातिहा और एक सूरात पढ़ी जाए, और आखिरी दो रकअतों में अगर चाहो तो तस्बीह करो और अगर चाहो तो क़िराअत करो। अगर न क़िराअत करो और न तस्बीह, तब भी नमाज़ जाइज़ है।" यही मौक़िफ़ इमाम अबू हनीफ़ा और दीगर अहल-ए-कूफ़ा का है। इब्नुल-मुंज़िर ने फ़रमाया: "हमने रिवायत किया है कि अली बिन अबी तालिब ने फ़रमाया: 'पहली दो रकअतों में क़िराअत करो और आखिरी दो रकअतों में तस्बीह करो।'"
An-Nakha'i reported that Sufyan said, "If someone does not recite in three <i>rak'ahs</i>, he must repeat the prayer because the recitation in a single <i>rak'ah</i> is not sufficient." He said, "The same applies if someone forgets to recite in one <i>rak'ah</i> in the <i>Fajr</i> prayer." Abu Thawr said, "A prayer is only satisfied by the recitation of the <i>Fatihah</i> in every <i>rak'ah</i>, which was the Egyptian position of ash-	"नखई ने रिवायत किया है कि सुफ़यान ने फ़रमाया: "अगर कोई शख्स तीन रकअतों में क़िराअत न करे तो उसे नमाज़ दोबारा पढ़नी होगी, क्योंकि एक रकअत में क़िराअत काफ़ी नहीं होती।" उन्होंने कहा: "इसी तरह अगर कोई शख्स नमाज़-ए-फ़ज़्र की एक रकअत में क़िराअत भूल जाए तो यही हुक्म है।" अबू सौर ने फ़रमाया: "नमाज़ सिर्फ़ उसी वक़्त दुरुस्त होती है जब हर रकअत में सूरह फ़ातिहा पढ़ी जाए।"

Shafi'i, and a group of the people of ash-Shafi'i also say that." Ibn Khuwayzimandad al-Maliki said the same. He said, "We consider recitation of the <i>Fatihah</i> to be mandatory in every <i>rak'ah</i>. This is the sound position regarding this question." Muslim related that Abu Qatadah said, "The Messenger of Allah ﷺ used to lead us in the prayer and he would recite the <i>Fatihah</i> of the Book and two <i>surahs</i> in the first two <i>rak'ahs</i> of <i>Zuhr</i> and <i>Asr</i>. Sometimes we would hear the <i>ayah</i>. He was long in the first <i>rak'ah</i> of <i>Zuhr</i> and short in the second, and did the same in <i>Subh</i>." One variant has: "He used to recite the <i>Fatihah</i> in the last two <i>rak'ahs</i>." This is a clear text and sound hadith supporting what Malik believed and a text for specifying that the <i>Fatihah</i> is recited in every <i>rakah</i>. The definitive proof is in the <i>Sunnah</i>, not in what opposes it.	यही इमाम शाफ़ई का मिस्री क़ौल है, और शाफ़इया की एक जमाअत भी यही कहती है। इब्न ख़ुवैज़मंदाद अल-मालिकी ने भी यही कहा। उन्होंने फ़रमाया: "हमारे नज़दीक हर रकअत में सूरह फ़ातिहा की क़िराअत वाजिब है, और इस मसअले में यही सही मौक़िफ़ है।" इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है कि अबू क़तादा ने फ़रमाया: "रसूल अल्लाह ﷺ हमें नमाज़ पढ़ाते थे, और जुहर और असर की पहली दो रकअतों में सूरह फ़ातिहा और दो सूरतें पढ़ते थे। कभी-कभी हम आयत की आवाज़ सुन लेते थे। आप ﷺ जुहर की पहली रकअत को लंबा करते थे और दूसरी को मुख़्तसर, और सुबह की नमाज़ में भी इसी तरह करते थे।" एक रिवायत में है: "आप ﷺ आख़िरी दो रकअतों में सूरह फ़ातिहा पढ़ते थे।" यह एक वाज़ेह नस और सही हदीस है, जो इमाम मालिक के मौक़िफ़ की ताईद करती है, और इस बात की सरीह दलील है कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा पढ़ी जाए। क़तई दलील सुन्नत में है, न कि उसके मुखालिफ़ अक़वाल में।"
The majority believe that what is additional to the <i>Fatihah</i> in	"अकसर अहल-ए-इल्म के नज़दीक

the recitation is not mandatory according to what Muslim related from Abu Hurayrah. He said, “There is recitation in every prayer. What the Prophet ﷺ made us hear, we make you hear, and what he hid from us we hide from you. If anyone recites the <i>Umm al-Quran</i>, it is enough for him. If someone recites more, that is better.” Al-Bukhari said, “If there is more, it is good.” Many of the people of knowledge reject abandoning reciting the <i>surah</i>, with or without necessity, including Imran ibn Husayn, Abu Said al-Khudri, Khawwat ibn Jubayr, Mujahid, Abu Wail, Ibn Umar, Ibn Abbas and others. They said, “There is no prayer for the one who does not recite the <i>Fatihah</i> in it and something of the Quran along with it.” Some of them stipulate two <i>ayahs</i>, or one <i>ayah</i>, and some do not set a limit. He said, “Something of the Quran with it.” In any case, all of this obliges learning what is feasible of the Quran along	सूरह फ़ातिहा के अलावा जो क़िराअत की जाती है वह वाजिब नहीं है, जैसा कि इमाम मुस्लिम ने अबू हुरैरा से रिवायत किया है। उन्होंने फ़रमाया: “हर नमाज़ में क़िराअत है। नबी ﷺ हमें जो सुनाते थे हम तुम्हें सुनाते हैं, और जो हमसे मख़फ़ी रखते थे हम भी तुमसे मख़फ़ी रखते हैं। अगर कोई शख्स उम्मुल-कुरआन (सूरह फ़ातिहा) पढ़ ले तो वह उसके लिए काफ़ी है, और अगर कोई उससे ज़्यादा पढ़े तो यह बेहतर है।” इमाम बुखारी ने फ़रमाया: “अगर उससे ज़्यादा पढ़े तो यह अच्छा है।” बहुत से अहल-ए-इल्म ने सूरत पढ़ने को तर्क करने को नापसंद किया है, ख़्वाह उज़्र हो या न हो। इनमें इमरान बिन हुसैन, अबू सईद ख़ुदरी, ख़व्वात बिन जुबैर, मुजाहिद, अबू वाइल, इब्र उमर, इब्र अब्बास और दीगर शामिल हैं। इन हज़रात ने फ़रमाया: “उस शख्स की नमाज़ नहीं होती जो उसमें सूरह फ़ातिहा और उसके साथ कुरआन का कुछ हिस्सा न पढ़े।” बाज़ अहल-ए-इल्म ने दो आयात की शर्त लगाई है, बाज़ ने एक आयात की, और बाज़ ने कोई हद मुक़र्रर नहीं की। उन्होंने सिर्फ़ यह कहा: “उसके साथ कुरआन का कुछ हिस्सा।”
---	--

with the <i>Fatihah</i> of the Book based on the <i>hadith</i> of Ubadah, Abu Said al-Khudri and others. We find in <i>al-Mudawwanah</i>: “Waki related from al-Amash that Khaythama said that someone heard Umar ibn al-Khattab say, ‘The requirement of the prayer is not satisfied if someone does not recite the <i>Fātiḥah</i> of the Book and something with it.’” The School has three different positions about the recitation of the <i>surah</i>: <i>sunnah</i>, meritorious and mandatory.	बहरहाल, यह तमाम अक़वाल इस बात को लाज़िम करते हैं कि आदमी सूरह फ़ातिहा के साथ कुरआन में से जितना मुमकिन हो सीखे, जैसा कि उबादा, अबू सईद ख़ुदरी और दीगर की अहादीस से मालूम होता है। हमें अल-मुदव्वनह में यह मिलता है: “वकीअ ने आमश से रिवायत किया कि ख़ैसमा ने कहा: किसी शख्स ने उमर बिन खत्ताब को यह कहते हुए सुना: ‘नमाज़ का हक़ अदा नहीं होता जब तक आदमी सूरह फ़ातिहा और उसके साथ कुछ और न पढ़े।’” फ़िक्ही मज़हब में सूरत की क़िराअत के बारे में तीन मुख्तलिफ़ अक़वाल हैं: एक यह कि वह सुन्नत है, दूसरा यह कि मुस्तहब व फ़ज़ीलत का अमल है, और तीसरा यह कि वह वाजिब है।”
If someone finds it impossible, after his best efforts, to learn the <i>Fatihah</i> or anything of the Qur'an, he should mention Allah in place of the recitation using whatever formula he can: <i>takbir</i>, <i>la ilaha illa Llah</i>, praise, glorification, magnification or <i>la hawla wala quwwata illa biLlah</i>’ when he	“अगर कोई शख्स अपनी पूरी कोशिश के बावजूद सूरह फ़ातिहा या कुरआन में से कुछ भी सीखने से आजिज़ हो, तो वह क़िराअत की जगह अल्लाह का ज़िक्र करे, जिस तरह भी उसके लिए मुमकिन हो: तकबीर, ला इलाहा इल्लल्लाह, हम्द, तस्बीह, तअज़ीम, या “ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह” वगैरह, ख़्वाह वह अकेले नमाज़ पढ़ रहा हो या

prays alone or with an imam in a silent prayer. Abu Dawud and others reported that Abdullah ibn Abi Awfa said, "A man came to the Messenger of Allah ﷺ and said, 'I cannot learn any of the Qur'an, so teach me what will compensate that for me.'" He said, "Say: 'Glory be to Allah and praise be to Allah. There is no god but Allah and there is no strength or power except by Allah.'" He said, "Messenger of Allah, this is for Allah. What is for me?" He answered, "Say: 'O Allah, show mercy to me, protect me, guide me and provide for me.'"	इमाम के साथ सिरी नमाज़ में। अबू दाऊद और दीगर मुहद्दीसीन ने रिवायत किया है कि अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा ने फ़रमाया: "एक शख्स रसूल अल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया: 'मैं कुरआन में से कुछ भी सीखने की कुदरत नहीं रखता, लिहाज़ा मुझे ऐसी चीज़ सिखा दीजिए जो उसकी जगह काफ़ी हो जाए।'" आप ﷺ ने फ़रमाया: "कहो: 'सुब्हानल्लाह, वल्हम्दु लिल्लाह, वला इलाहा इल्लल्लाह, वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह।'" उस शख्स ने अर्ज़ किया: "या रसूलल्लाह! यह तो अल्लाह के लिए है, मेरे लिए क्या है?" आप ﷺ ने फ़रमाया: "कहो: 'अल्लाहुम्म अरहम्नी, वआफ़िनी, वह्दिनी, वर्जुक्नी।'"
If someone is unable even to learn any of these expressions, he should not fail to try to pray with the imam. The imam will bear that responsibility for him if Allah wills. He must, however, always persevere in trying to memorise the <i>Fatihah</i> of the Book and more of the Quran until death intervenes.	"अगर कोई शख्स इन अज़कार में से किसी को भी सीखने पर क़ादिर न हो, तब भी उसे इमाम के साथ नमाज़ पढ़ने की कोशिश तर्क नहीं करनी चाहिए। अगर अल्लाह ने चाहा तो इमाम उसकी तरफ़ से यह ज़िम्मेदारी अदा कर देगा। अलबत्ता उस पर लाज़िम है कि वह हमेशा सूरह फ़ातिहा और मज़ीद कुरआन याद करने की कोशिश में लगा रहे, यहाँ

He is engaged in striving and so Allah will excuse him. If someone cannot speak Arabic, the Arabic supplication is translated for him into a language which he understands so he can perform his prayer. That will satisfy the requirement, Allah willing.	तक कि मौत आ जाए। वह कोशिश और जद्दोजहद में मशगूल है, इसलिए अल्लाह उसे माज़ूर समझेगा। अगर कोई शख्स अरबी बोल नहीं सकता तो उसके लिए अरबी दुआ का तर्जुमा उस ज़बान में कर दिया जाएगा जिसे वह समझता हो, ताकि वह अपनी नमाज़ अदा कर सके। इंशा अल्लाह, यही उसके लिए काफ़ी होगा।"
If someone recites the prayer in Persian when he has good Arabic, it is not allowed according to the position of the majority. Abu Hanifah said, "Recitation in Persian satisfies it, even if he is good in Arabic, because the goal is to grasp the meaning." Ibn al-Mundhir said, "That does not satisfy it because it is contrary to what Allah commanded and contrary to what the Prophet ﷺ taught, and contrary to what the Community of the Muslims do. We do not know of anyone agreeing with this statement of his."	"अगर कोई शख्स फ़ारसी में नमाज़ की क़िराअत करे, हालाँकि वह अच्छी अरबी जानता हो, तो जम्हूर उलेमा के नज़दीक यह जायज़ नहीं है। अबू हनीफ़ा रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: "फ़ारसी में क़िराअत काफ़ी हो जाती है, अगरचे वह अरबी अच्छी जानता हो, क्योंकि मक़सूद मअनी को समझना है।" इब्न अल-मुन्ज़िर रहिमहुल्लाह ने कहा: "यह काफ़ी नहीं होती, क्योंकि यह अल्लाह के हुक्म के खिलाफ़ है, रसूल अल्लाह ﷺ की तालीम के खिलाफ़ है, और मुसलमानों की जमाअत के अमल के भी खिलाफ़ है। हम किसी ऐसे शख्स को नहीं जानते जो उनके इस क़ौल से इत्तिफ़ाक करता हो।"
If someone begins the prayer as he is commanded without knowing Arabic and then he	"अगर कोई शख्स अरबी न जानने की हालत में, जैसा कि उसे हुक्म दिया गया है, नमाज़ शुरू करे, फिर

suddenly knows Arabic while in the prayer – and that is conceivable if he hears someone reciting it and he retains it by simply hearing it – he does not start the prayer anew because he performed in the past according to what he was commanded and there is no way to invalidate it. That is said in the book of Ibn Sahnun.	नमाज़ ही के दौरान अचानक उसे अरबी आ जाए — और यह मुमकिन है, मसलन अगर वह किसी को क़िराअत करते हुए सुने और सिर्फ़ सुनने से उसे याद हो जाए — तो वह नमाज़ दोबारा शुरू नहीं करेगा, क्योंकि उसने इब्तिदा में वही अमल किया था जिसका उसे हुक्म दिया गया था, और उसे बातिल करने की कोई वजह नहीं। यह बात इब्न सहनून की किताब में मज़कूर है।"
Topic Three: Saying 'Amin'	"तीसरा मौजू: 'आमीन' कहना"
There are eight points connected with it.	"इससे मुतअल्लिक आठ मसाइल हैं।"
It is <i>sunnah</i> for the reciter of the Quran to say <i>amin</i> when he finishes the <i>Fatihah</i> , after a moment of silence following the <i>nun</i> of ' <i>dallin</i> ' to distinguish what is part of the Quran from what is not part of it.	"कुरआन की तिलावत करने वाले के लिए सुन्नत है कि वह सूरह फ़ातिहा ख़त्म करने के बाद 'आमीन' कहे, और 'ज़ाल्लीन' के नून के बाद थोड़ी देर ख़ामोश रहे, ताकि कुरआन के अल्फ़ाज़ और उसके अलावा अल्फ़ाज़ में फ़र्क़ वाज़ेह हो जाए।"
It is established in the primary sources from the hadith of Abu Hurayrah that the Messenger of Allah ﷺ said, "When the imam says ' <i>amin</i> ', say ' <i>amin</i> '. If someone's <i>amin</i> coincides with that of the angels, he will be forgiven his past wrong	"बुनियादी मसादिर में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से साबित है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "जब इमाम 'आमीन' कहे तो तुम भी 'आमीन' कहो। जिस शख्स की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के मुवाफ़िक़ हो जाए, उसके पिछले

actions.” Our scholars say that the forgiveness of wrong actions is dependent on four conditions which are contained in this hadith. The first is the imam saying <i>amin</i>, the second is those with him saying <i>amin</i>, the third is the <i>amin</i> of the angels, and the fourth is the coinciding of the <i>amins</i>. Some say that the coinciding refers to the answer, some that it is about the time, and some say that it is about sincerity in supplication as is made clear by the words of the Prophet ﷺ, “Call on Allah and be certain of the answer. Know that Allah does not answer the supplication of a heedless negligent heart.”	गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।” हमारे उलेमा कहते हैं कि गुनाहों की माफ़ी चार शर्तों पर मौकूफ़ है, जो इस हदीस में मज़कूर हैं। पहली शर्त इमाम का आमीन कहना है, दूसरी उसके साथ मुक़्तदियों का आमीन कहना, तीसरी फ़रिश्तों की आमीन, और चौथी आमीनों का मुवाफ़िक़ हो जाना। बाज़ उलेमा कहते हैं कि मुवाफ़िक़त से मुराद क़बूलियत में मुवाफ़िक़त है, बाज़ के नज़दीक़ वक़्त में मुवाफ़िक़त मुराद है, और बाज़ कहते हैं कि इससे मुराद दुआ में इख़लास है, जैसा कि नबी ﷺ के इस फ़रमान से वाज़ेह होता है: “अल्लाह से दुआ करो और क़बूलियत का यक़ीन रखो। जान लो कि अल्लाह ग़ाफ़िल और लापरवाह दिल की दुआ क़बूल नहीं करता।”
Abu Dawud related that Abu Musabbah al-Maqrani said, “We used to sit with Abu Zuhayr an-Namiri, one of the Companions, and he related the best statement about this. When one of us made a supplication, he said, ‘End it with <i>amin</i>. <i>Amin</i> is like the seal on the page.’” Abu Zuhayr continued,	“अबू दाऊद ने रिवायत किया है कि अबू मुसब्ह अल-मकरानी ने कहा: “हम अबू जुहैर अन-नुमैरी रज़ियल्लाहु अन्हु, जो सहाबा-ए-किराम में से थे, के पास बैठा करते थे, और वह इस बारे में बेहतरीन बात बयान करते थे। जब हम में से कोई दुआ करता तो वह कहते: ‘इसे आमीन पर ख़त्म करो, क्योंकि

“Shall I tell you how I know that? One night we went out with the Messenger of Allah ﷺ and came to a man who was intense in asking [of Allah]. The Prophet ﷺ stood listening to him and said, ‘It is guaranteed if he seals it.’ Someone there asked him, ‘With what is it sealed?’ He answered, ‘With <i>amin</i>. If he seals with it with <i>amin</i>, it is guaranteed.’” The man who asked the Prophet ﷺ went to the man and asked, “Did you seal it, so-and-so?” and he gave him the good news. Ibn Abd al-Barr said, “The name of Abu Zuhayr an-Namiri was Yahya ibn Nufayr. He related from the Prophet ﷺ: ‘Do not kill locusts. They are the greatest army of Allah.’”	आमीन सहीफ़े पर मुहर की मानिंद है।” अबू जुहैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मज़ीद कहा: “क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि मुझे यह बात कैसे मालूम हुई? एक रात हम रसूल अल्लाह ﷺ के साथ निकले और एक ऐसे शख्स के पास पहुँचे जो निहायत इल्हाह के साथ दुआ कर रहा था। नबी ﷺ खड़े होकर उसकी दुआ सुनने लगे और फ़रमाया: ‘अगर यह मुहर लगा दे तो इसकी दुआ क़बूल हो जाएगी।’ वहाँ मौजूद एक शख्स ने पूछा: ‘किस चीज़ के साथ मुहर लगाए?’ आप ﷺ ने फ़रमाया: ‘आमीन के साथ। अगर वह आमीन के साथ ख़त्म करे तो उसकी दुआ क़बूल हो जाएगी।” फिर जिस शख्स ने नबी ﷺ से सवाल किया था, वह उस दुआ करने वाले के पास गया और कहा: “ऐ फ़लाँ! क्या तुमने आमीन कहकर दुआ ख़त्म की?” और उसे ख़ुशख़बरी दी। इब्न अब्द अल-बर् रहिमहुल्लाह ने कहा: “अबू जुहैर अन-नुमैरी रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम यह्या बिन नुफ़ैर था। उन्होंने नबी ﷺ से यह रिवायत बयान की: ‘टिड्डियों को क़त्ल न करो, क्योंकि वह अल्लाह के सबसे बड़े लश्कर हैं।”
Wahb ibn Munabbih said, “Amin consists of four letters.	“वहब बिन मुनब्बिह रहिमहुल्लाह ने कहा: “आमीन चार हुरूफ़ पर

Allah creates an angel from every letter which says, ‘O Allah, forgive the one who said amin!’” In a report we also find: “Jibril taught me amin when I finished the <i>Fatihah</i> of the Book and said that it is like a seal on the Book.” We find in another hadith: “Amin is the seal of the Lord of the worlds.” Al-Harawi said that Abu Bakr said, “Its meaning is that Allah puts a seal on His servants because by it He averts from them ruin and afflictions. So it is like the seal of the book which protects it and prevents it from being ruined and showing what it contains.” We find in another hadith: “Amin is a degree in the Garden.” Abu Bakr said, “It means that it is a letter by which the one who utters it obtains a degree in the Garden.”	मुश्तमिल है। अल्लाह हर हरफ़ से एक फ़रिश्ता पैदा फ़रमाता है जो कहता है: ‘ऐ अल्लाह! आमीन कहने वाले को बख़्श दे!’” एक रिवायत में यह भी आया है: “जब मैंने सूरह फ़ातिहा ख़त्म की तो जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझे आमीन सिखाई और फ़रमाया कि यह किताब पर मुहर की मानिंद है।” एक और हदीस में है: “आमीन रब्बुल आलमीन की मुहर है।” हरवी रहिमहुल्लाह ने कहा कि अबू बक्र रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: “इसका मअनी यह है कि अल्लाह अपने बंदों पर इसके ज़रिए मुहर लगा देता है, क्योंकि इसके ज़रिए वह उनसे हलाकत और मुसीबतों को दूर फ़रमाता है। पस यह किताब की मुहर की मानिंद है, जो उसकी हिफ़ाज़त करती है और उसे ज़ाए होने और उसके मुन्दरजात ज़ाहिर होने से बचाती है।” एक और हदीस में आया है: “आमीन जन्नत में एक दर्जा है।” अबू बक्र रहिमहुल्लाह ने कहा: “इसका मतलब यह है कि यह एक ऐसा लफ़्ज़ है जिसके ज़रिए उसे कहने वाला जन्नत में एक दर्जा हासिल करता है।”
The meaning of <i>amin</i> according to the people of knowledge is:	“अहल-ए-इल्म के नज़दीक “आमीन” का मअनी यह है: “ऐ अल्लाह! हमारी

“O Allah, give us an answer!” which acts as a kind of supplication. Some people say that it is one of the Names of Allah. That is related from Jafar ibn Muḥammad, Mujahid and Hilal ibn Yasaf. Ibn Abbas is also said to have related it from the Prophet ﷺ, but the transmission is not sound. Ibn al-Arabi said that as well. It is said that the meaning of <i>amin</i> is “Let it be like that.” Al-Jawhari said that. Al-Kalbi related from Abu Salih that Ibn Abbas said, “I asked the Messenger of Allah ﷺ about the meaning of <i>amin</i>. He answered, ‘Lord, do it!’” Muqatil said, “It strengthens the supplication and asks for the descent of blessing.” At-Tirmidhi said, “It means: ‘Do not disappoint our hopes.’”	दुआ क़बूल फ़रमा!” और यह एक किस्म की दुआ है। बाज़ लोगों का कहना है कि यह अल्लाह तआला के अस्मा में से एक नाम है। यह क़ौल जाफ़र बिन मुहम्मद, मुजाहिद और हिलाल बिन यसाफ़ से मनकूल है। इब्न-ए-अब्बास से भी रिवायत किया गया है कि उन्होंने इसे नबी ﷺ से नक़ल किया, लेकिन इसकी सनद सहीह नहीं है। इब्न अल-अरबी ने भी यही बात कही है। यह भी कहा गया है कि “आमीन” का मअनी है: “ऐसा ही हो।” यह क़ौल अल-जौहरी ने ज़िक्र किया है। अल-कल्बी ने अबू सालेह के वास्ते से इब्न-ए-अब्बास से रिवायत किया कि उन्होंने फ़रमाया: “मैंने रसूल अल्लाह ﷺ से आमीन के मअनी के बारे में पूछा तो आप ﷺ ने फ़रमाया: ‘ऐ रब! ऐसा कर दे!’” मुक़ातिल ने कहा: “यह दुआ को मज़बूत करती है और बरकत के नाज़िल होने की दरख्वास्त करती है।” इमाम तिरमिज़ी ने कहा: “इसका मअनी है: ‘हमारी उम्मीदों को नाकाम न कर।’”
There are two ways of pronouncing <i>amin</i>: with both vowels long like <i>Yasin</i>, and with the first vowel short like	“आमीन” के तलफ़्फ़ुज़ के दो तरीक़े हैं: एक यह कि दोनों हरक़ात को खींच कर पढ़ा जाए, जैसे “यासीन”, और दूसरा यह कि पहली हरक़त को

<i>yamin</i>. Doubling the <i>mim</i> is an error, according to al-Jawhari. The doubling is related from al-Hasan and Jafar as-Sadiq. It is the position of al-Husayn ibn al-Fadl, who derived it from <i>amma</i> meaning to aim for something, which gives it the meaning, “we aim for You.” This occurs in Allah’s words: “or those heading (<i>ammin</i>) for the Sacred House...” Abu Nasr Abd ar-Rahim ibn Abd al-Karim al-Qushayri related it. Al-Jawhari said, “It is based on the <i>fathah</i> as is <i>ayna</i> and <i>kayfa</i> because of joining of two silent letters.”	मुख्तसर पढ़ा जाए, जैसे “यमीन”। इमाम अल-जौहरी के नज़दीक “मीम” को मुशद्दद पढ़ना ग़लती है। अलबत्ता तश्दीद के साथ पढ़ना हसन बसरी और जाफ़र सादिक़ से मनकूल है। यही मौक़िफ़ हुसैन बिन अल-फ़ज़ल का भी है, जिन्होंने इसे “अम्म” से मुश्तक़ करार दिया है, जिसका मअनी किसी चीज़ का क़स्द करना या उसकी तरफ़ मुतवज्जेह होना है। इस एतिबार से “आमीन” का मअनी होगा: “हम तेरी ही तरफ़ क़स्द करते हैं।” इसी मअनी में अल्लाह तआला का यह फ़रमान भी है: “या वह लोग जो बैत-ए-हराम का क़स्द करते हैं (आम्मीनल बैतल हराम)...”. अबू नसर अब्दुरहीम बिन अब्दुल करीम अल-कुशैरी ने यह बात नक़ल की है। अल-जौहरी ने कहा: “यह फ़ल्हा पर मब्री है, जैसे ‘ऐन’ और ‘कैफ़’, क्योंकि इसमें दो साकिन हुरूफ़ के जमा होने की वजह पाई जाती है।”
Scholars disagree about whether the imam says it at all and, if he does, whether he says it out loud. Ash-Shafi‘i and Malik believe in the transmission of the Madinans regarding that whereas the	“उलमा का इस बारे में इख़्तिलाफ़ है कि आया इमाम “आमीन” कहे या नहीं, और अगर कहे तो क्या बुलंद आवाज़ से कहे। इमाम शाफ़ई और इमाम मालिक अहल-ए-मदीना की रिवायत के मुताबिक़ इसके क़ाइल हैं, जबकि अहल-ए-कूफ़ा और बाज़

Kufans and some Madinans say that it should not be said out loud. That is the view of at-Tabari. Among our scholars, Ibn Habib said that. Ibn Bukayr said that there is a choice. Ibn al-Qasim related from Malik that the imam does not say <i>amin</i> but those behind him do. That is the position of Ibn al-Qāsim and the Egyptians among Malik's followers. Their evidence is the hadith of Abu Musa al-Ashari: "The Messenger of Allah ﷺ addressed us, made our <i>sunnah</i> clear to us and taught us our prayer. He said, 'When you pray, then make your rows straight. Then let one of you lead the prayer. When he says the <i>takbir</i>, say the <i>takbir</i>. When he says, "not of those with anger on them nor of the misguided," say <i>amin</i> and Allah will answer you.'" Muslim transmitted it. It is like the hadith of Sumayy from Abu Hurayrah that Malik transmitted. The first is sound because of the hadith of Wail	अहल-ए-मदीना कहते हैं कि उसे बुलंद आवाज़ से नहीं कहना चाहिए। यही मौकिफ़ इमाम तबरी का भी है। हमारे उलमा में से इब्र हबीब ने भी यही कहा है। इब्र बुकीर ने कहा कि इसमें इख्तियार है। इब्र अल-कासिम ने इमाम मालिक से रिवायत किया है कि इमाम खुद "आमीन" न कहे, अलबत्ता मुक्तदी कहें। यही इब्र अल-कासिम और अहल-ए-मिस्र मालिकिया का मज़हब है। उनकी दलील अबू मूसा अशअरी की हदीस है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने हमें खिताब फ़रमाया, हमारी सुन्नत को वाज़ेह किया और हमें नमाज़ सिखाई। आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब तुम नमाज़ पढ़ो तो अपनी सफ़ें सीधी करो, फिर तुम में से एक इमामत करे। जब वह तकबीर कहे तो तुम भी तकबीर कहो, और जब वह 'गैरिल मग़दूबि अलैहिम वलद्दाल्लीन' कहे तो तुम 'आमीन' कहो, अल्लाह तुम्हारी दुआ क़बूल फ़रमाएगा।" इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है। यह हदीस अबू हुरैरा से सुमय्य की रिवायत की मानिंद है जिसे इमाम मालिक ने नक़ल किया है। पहला क़ौल ज़्यादा सहीह है, क्योंकि वाइल बिन हुजर की हदीस में है कि उन्होंने
---	---

ibn Hujr who said, "When the Messenger of Allah ﷺ recited, 'nor of the misguided,' he said, 'Amin,' raising his voice." Abu Dawud and ad-Daraqutni transmitted it. He added that Abu Bakr said that only the people of Kufa have this <i>sunnah</i>. This is sound. Al-Bukhari has a chapter on "The imam saying <i>amin</i> out loud."	फ़रमाया: "जब रसूल अल्लाह ﷺ ने 'वलद्वल्लीन' की तिलावत फ़रमाई तो आप ﷺ ने बुलंद आवाज़ से 'आमीन' कहा।" इस हदीस को अबू दाऊद और दारकुली ने रिवायत किया है। दारकुली की रिवायत में यह इज़ाफ़ा भी है कि अबू बक्र ने फ़रमाया: "यह सुन्नत सिर्फ़ अहल-ए-कूफ़ा के पास है।" यह क़ौल ज़्यादा दुरुस्त मालूम होता है। इमाम बुखारी ने भी "इमाम के बुलंद आवाज़ से आमीन कहने" के उनवान से एक बाब क़ायम किया है।"
'Ata' said that <i>amin</i> is a supplication. Ibn az-Zubayr and those behind him said it until the mosque reverberated. At-Tirmidhi said, "That is the position of more than one of the people of knowledge among the Companions of the Prophet ﷺ and those after them. They related that a man should raise his voice with <i>amin</i> and not say it silently." Ash-Shafi'i, Ahmad and Ishaq said that. In the <i>Muwatta</i> and the two <i>Sahih</i> Collections Ibn Shihab said that the Messenger of Allah ﷺ used to say,	"अता ने कहा कि "आमीन" एक दुआ है। इब्न-ए-ज़ुबैर और उनके पीछे मौजूद लोगों ने इस क़दर बुलंद आवाज़ से "आमीन" कहा कि मस्जिद गूँज उठी। इमाम तिरमिज़ी ने कहा: "यह नबी ﷺ के सहाबा और उनके बाद आने वाले अहल-ए-इल्म में से एक से ज़्यादा लोगों का मज़हब है। उनके नज़दीक आदमी को 'आमीन' बुलंद आवाज़ से कहना चाहिए, आहिस्ता नहीं कहना चाहिए।" इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद और इस्हाक बिन राहवयह का भी यही क़ौल है। मुवत्ता इमाम मालिक और सहीह बुखारी व मुस्लिम में इब्न शिहाब से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ

“Amin.” We find in the <i>Sunan</i> of Ibn Majah that Abu Hurayrah said, “People have abandoned the <i>amin</i>. When the Messenger of Allah ﷺ said, ‘not of those with anger on them nor of the misguided,’ he would say, ‘Amin’ so that the people of the first row heard it and the mosque would reverberate with it.” The point in the hadith of Abu Musa and Sumayy is defining the place where <i>Amin</i> is said. It is when the imam says, “nor of the misguided” so that they say it together and do not get ahead of it by saying “Amin” as we mentioned. Allah knows best. The Prophet ﷺ also said: “When the imam says, ‘Amin’, then say ‘Amin’.” Ibn Nāfi‘ said in the book of Ibn al-Harith: “The one following the imam does not say it unless he hears the imam say, ‘nor of the misguided.’ When he is so far away that he does not hear it, he does not say it.” Ibn Abdus said, “He estimates the amount of the recitation and then says,	“आमीन” कहा करते थे। सुनन इब्न माजह में अबू हुरैरा से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया: “लोगों ने ‘आमीन’ कहना छोड़ दिया है, हालाँकि रसूल अल्लाह ﷺ जब ‘गैरिल मगदूबि अलैहिम वलद्दाल्लीन’ पढ़ते तो ‘आमीन’ कहते, यहाँ तक कि पहली सफ़ के लोग उसे सुन लेते और मस्जिद उससे गूँज उठती थी।” अबू मूसा और सुमय्य की हदीस का मक़सद “आमीन” कहने की जगह को बयान करना है, यानी जब इमाम ‘वलद्दाल्लीन’ कहे तो मुक्तदी भी उसी वक़्त “आमीन” कहें, ताकि वह इमाम से पहले “आमीन” न कह बैठें, जैसा कि पहले ज़िक्र हो चुका है। वल्लाहु अअलम। नबी ﷺ ने यह भी फ़रमाया: “जब इमाम ‘आमीन’ कहे तो तुम भी ‘आमीन’ कहो।” इब्न नाफ़े ने इब्न अल-हारिस की किताब में कहा है: “मुक्तदी उस वक़्त तक ‘आमीन’ न कहे जब तक वह इमाम को ‘वलद्दाल्लीन’ कहते न सुन ले। और अगर वह इतना दूर हो कि सुन न सके तो फिर ‘आमीन’ न कहे।” इब्न अब्दूस ने कहा: “वह क़िराअत की मिक़दार का अंदाज़ा करे, फिर ‘आमीन’ कहे।”
--	--

'Amin'."	
The people of Abu Hanifah said that it is more appropriate to say <i>amin</i> silently rather than out loud because it is supplication and Allah Almighty says, "Call on your Lord humbly and secretly." They said, "The evidence for it is what is related about the interpretation of the words of the Almighty: 'Your request is answered.' They said, Musa and Harun used to make supplication using <i>amin</i> and so Allah called them both supplicators." The answer is that making supplication silently is better in order to avoid any showing-off. As for the group prayer, attending it is in order to publicise an outward obligation and to promote a duty which people are recommended to observe. The imam has to articulate the recitation of the <i>Fatihah</i>, which contains supplication and <i>amin</i> at the end of it. When supplication is of the sort which it is <i>sunna</i> to say aloud,	"इमाम अबू हनीफ़ा के अस्थाब का कहना है कि "आमीन" को बुलंद आवाज़ के बजाय आहिस्ता कहना ज़्यादा मुनासिब है, क्योंकि यह दुआ है, और अल्लाह तआला फ़रमाता है: "अपने रब को आजिज़ी और आहिस्तगी के साथ पुकारो।" उन्होंने कहा: "इसकी दलील वह रिवायत है जो अल्लाह तआला के इस फ़रमान की तफ़्सीर में मनकूल है: 'तुम दोनों की दुआ क़बूल कर ली गई।' उन्होंने कहा कि मूसा और हारून अलैहिमस्सलाम 'आमीन' के ज़रिये दुआ करते थे, इसी लिए अल्लाह तआला ने दोनों को दुआ करने वाला क़रार दिया।" इसका जवाब यह है कि दुआ को आहिस्ता करना इस लिए बेहतर है ताकि रियाकारी से बचा जा सके। लेकिन जमाअत की नमाज़ का मक़सद एक ज़ाहिरी फ़र्ज़ का इज़हार और ऐसे दीनी अमल को नमायाँ करना है जिसकी लोगों को तरगीब दी गई है। इमाम पर लाज़िम है कि वह सूरह फ़ातिहा की क़िराअत बुलंद आवाज़ से करे, हालाँकि इसमें दुआ भी शामिल है, और इसके आखिर में "आमीन" भी है। लिहाज़ा जब दुआ ऐसी हो जिसे बुलंद आवाज़

then <i>amin</i> follows at the end of the supplication and is also <i>sunna</i>. This is clear.	से कहना सुन्नत हो, to उसके आखिर में "आमीन" कहना भी सुन्नत होगा। यह बात बिलकुल वाज़ेह है।"
The word <i>Amin</i> was not found before us except with Musa and Harun. At-Tirmidhi al-Hakim related in <i>Nawadir al-usul</i> from Abd al-Warith ibn Abd as-Samad from Razin, the <i>muadhdhin</i> of the mosque of Hisham ibn Hassan, from Anas ibn Malik that the Messenger of Allah ﷺ said, "Allah has given three things to my Community that He did not give to anyone before them: the greeting of the people, the rows of the angels, and <i>Amin</i>, except for what was said by Musa and Harun." Abu Abdullah said, "It means that Musa prayed against Pharaoh and Harun said, 'Amin.'" Allah – blessed is His Name – said when He mentioned the supplication of Musa in the Revelation: "Your request is answered." He did not mention what Harun said. Musa said, "Our Lord" and Harun said, "Amin." So he is	"लफ़्ज़ "आमीन" हमारे इल्म के मुताबिक़ हम से पहले सिर्फ़ मूसा और हारून अलैहिमस्सलाम के साथ पाया गया है। तिमिज़ी अल-हाकिम ने "नवादिर अल-उसूल" में अब्दुल वारिस बिन अब्दुस समद, रज़ीन मुअज़्ज़िन-ए-मस्जिद-ए-हिशाम बिन हस्सान, और अनस बिन मालिक के वास्ते से रिवायत किया है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत को तीन चीज़ें अता फ़रमाई हैं जो उनसे पहले किसी को नहीं दी गई: अहल-ए-जन्नत का सलाम, फ़रिश्तों की सफ़ें, और 'आमीन', सिवाए उसके जो मूसा और हारून को दी गई थी।" अबू अब्दुल्लाह ने कहा: "इसका मतलब यह है कि मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन के खिलाफ़ दुआ की, और हारून अलैहिस्सलाम ने 'आमीन' कहा।" अल्लाह तआला, जिसका नाम बाबरकत है, ने वही में मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया: "तुम दोनों की दुआ क़बूल कर ली गई।" (यूनुस: 89) हालाँकि अल्लाह तआला ने हारून

called a supplicator in the Revelation because that amounted to a supplication on his part.	अलैहिस्सलाम के अल्फ़ाज़ को अलग से ज़िक्र नहीं किया। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा: "ऐ हमारे रब!" और हारून अलैहिस्सलाम ने "आमीन" कहा। इसी वजह से वही में उन्हें भी दुआ करने वाला क़रार दिया गया, क्योंकि उनका "आमीन" कहना भी दुआ में शरीक होने के क़ायम मक़ाम था।"
It is said that '<i>Amin</i>' is particular to this community since it is related that the Prophet ﷺ said, "The Jews do not envy you for anything as they envy you for the <i>salam</i> and saying <i>amin</i>." Ibn Majah transmitted it from Hammad ibn Salamah from Suhayl ibn Abi Salih from his father from Aishah that the Prophet ﷺ said... It is also transmitted from the hadith of Ibn Abbas that the Prophet ﷺ said, "The Jews do not envy you for anything as much as they envy you for the <i>amin</i>. So say '<i>Amin</i>' often." Our scholars say that the People of the Book envy us because the beginning	"यह भी कहा गया है कि "आमीन" इस उम्मत के साथ ख़ास है, क्योंकि रिवायत में आया है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "यहूद तुम से किसी चीज़ पर इतना हसद नहीं करते जितना सलाम और 'आमीन' कहने पर करते हैं।" इब्न माजह ने इसे हम्माद बिन सलमा, सुहैल बिन अबी सालेह, उनके वालिद, और हज़रत आइशा के वास्ते से रिवायत किया है कि नबी ﷺ ने ऐसा फ़रमाया। इसी तरह इब्न अब्बास की हदीस में भी मर्वी है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "यहूद तुम से किसी चीज़ पर इतना हसद नहीं करते जितना 'आमीन' पर करते हैं, लिहाज़ा क़स्रत से 'आमीन' कहा करो।" हमारे उलमा कहते हैं कि अहल-ए-किताब हम से इस लिए हसद करते हैं कि सूरह फ़ातिहा की

of the <i>Fatihah</i> is praise of Allah, lauding Him, then humility and humbleness to Him, and then praying to guide us to the Straight Path and then invocation against them with saying <i>Amin</i> .”	इब्तिदा अल्लाह तआला की हम्द व सना और उसकी बुजुर्गी बयान करने से होती है, फिर उसके सामने आजिज़ी और इन्किसारी का इज़हार किया जाता है, उसके बाद सीधे रास्ते की हिदायत की दुआ की जाती है, और फिर “आमीन” कह कर उस दुआ की क़बूलियत की इल्तिजा की जाती है।”
Topic Four: The meanings of the <i>Fatihah</i>, its recitations and syntax, and the excellence of those who praise	“चौथा मौज़ू: सूरह फ़ातिहा के मआनी, उसकी क़िराअतें और नहवी मुबाहिस, नीज़ हम्द बयान करने वालों की फ़ज़ीलत।”
There are thirty-six points in it.	“इस में छत्तीस नुक्रात हैं।”
Praise be to Allah.	अल्लाह की हम्द व सना हो।
Abu Muhammad Abd al-Ghani ibn Sa‘id related from Abu Hurayrah and Abu Sa‘id al-Khudri that the Prophet ﷺ said, “When someone says, ‘Praise be to Allah,’ Allah says, ‘My slave has praised Me.’” Muslim related from Anas ibn Malik that the Messenger of Allah ﷺ said, “Allah is pleased with the slave who eats and praises Him for it or takes a drink and praises Him for it.” Al-Hasan said, “There is no blessing but	“अबू मुहम्मद अब्दुल ग़नी बिन सईद ने अबू हुरैरा और अबू सईद अल-ख़ुदरी से रिवायत किया है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया, “जब कोई शख्स कहता है, ‘अल्हम्दु लिल्लाह,’ तो अल्लाह फ़रमाता है, ‘मेरे बंदे ने मेरी हम्द की।’” मुस्लिम ने अनस बिन मालिक से रिवायत किया है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, “अल्लाह उस बंदे से राज़ी होता है जो खाना खाए और उस पर अल्लाह की हम्द करे, या पानी पिए और उस पर अल्लाह की हम्द करे।” अल-हसन ने कहा, “कोई भी नेअमत ऐसी नहीं मगर ‘अल्हम्दु

that the words, 'Praise be to Allah,' are better than it." Ibn Mājah related from Anas ibn Mālīk that the Messenger of Allah ﷺ said, "When Allah gives someone a blessing and he says, 'Praise be to Allah,' what he says is better than what he receives."	लिल्लाह' उसके मुक़ाबले में बेहतर है।" इब्न माजह ने अनस बिन मालिक से रिवायत किया है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "जब अल्लाह किसी को कोई नेअमत देता है और वह कहता है, 'अल्हम्दु लिल्लाह,' तो उसका यह कहना उस चीज़ से बेहतर है जो उसे दी गई।"
In <i>Nawadir al-usul</i>, Anas ibn Mālīk reported that the Messenger of Allah ﷺ said, "If the entire world, lock, stock and barrel, were to be in the hand of a man of my Community and then he said, 'Praise be to Allah,' his praise of Allah would be greater than everything he possessed." Abu Abdullah said, "We find that its meaning is that he has been given this world and then is given these words to say after it. Then the words are better than all of this world because this world will end while the words will remain, being one of the enduring good actions. Allah says: 'In your Lord's sight, right actions which are	""नवादिर अल-उसूल" में अनस बिन मालिक से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "अगर पूरी दुनिया अपने तमाम साज़ व सामान समेत मेरी उम्मत के किसी आदमी के हाथ में हो, फिर वह 'अल्हम्दु लिल्लाह' कहे, तो उसका अल्लाह की हम्द करना उस तमाम चीज़ से ज़्यादा अज़ीम होगा जो उसके पास है।" अबू अब्दुल्लाह ने कहा: "हम इसका मअनी यह समझते हैं कि एक शख्स को यह पूरी दुनिया दी गई, फिर उसके बाद उसे यह कलिमात कहने की तौफ़ीक़ दी गई। इस सूरत में यह कलिमात पूरी दुनिया से बेहतर हैं, क्योंकि दुनिया फ़ना हो जाएगी जबकि यह कलिमात बाक़ी रहेंगे, और यह बाक़ी रहने वाली नेकियों में से हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है: 'और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ तेरे

lasting are better both in reward and end result.’ It is said in some variants, ‘What he was given was greater than what he took.’ So ‘was given’ refers to the slave and this world is taken from Allah. This is about management. That is how this statement is said to be from the slave and this world is from Allah while, in reality, both are from Allah. This world is from Allah and the words of Allah are also from Him. He gave him this world and made him rich, and He gave him the words and honoured him by them in the Next World.”	रब के नज़दीक सवाब और अंजाम के एतिबार से बेहतर हैं।” बाज़ रिवायतों में यह अल्फ़ाज़ भी आए हैं: “जो चीज़ उसे अता की गई, वह उस चीज़ से ज़्यादा अज़ीम थी जो उसने हासिल की।” यहाँ “अता की गई” से मुराद बंदा है, जबकि दुनिया अल्लाह तआला की तरफ़ से दी गई चीज़ है। यह ताबीर तदबीर और निस्बत के एतिबार से है। इसी बिना पर कहा जाता है कि यह क़ौल बंदे की तरफ़ मंसूब है और दुनिया अल्लाह की तरफ़, हालाँकि हक़ीक़त में दोनों ही अल्लाह तआला की तरफ़ से हैं। दुनिया भी अल्लाह की अता है और अल्लाह के यह कलिमात भी उसी की तरफ़ से हैं। उसने बंदे को दुनिया दी और उसे मालदार बनाया, और उसे यह कलिमात भी अता किए और आख़िरत में इनके ज़रिये उसे इज़्ज़त बख़्शी।”
Ibn Majah related from Ibn Umar that the Messenger of Allah ﷺ said to them, “One of the slaves of Allah said, ‘O Lord, praise is Yours as befits the majesty of Your face and the immensity of Your power.’” His two recording	”इब्न माजह ने इब्न उमर से रिवायत किया है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने सहाबा से फ़रमाया: “अल्लाह के बंदों में से एक बंदे ने कहा: ‘ऐ मेरे रब! तमाम तारीफ़ तेरे लिए है, ऐसी तारीफ़ जो तेरे चेहर-ए-अक़दस की अज़मत और तेरी सल्तनत की बड़ाई के लायक़ हो।”

angels were perplexed by it. They did not know how to record it, so they rose to heaven and said, “Our Lord, Your slave said something we do not know how to record.” Allah Almighty, Who knows better what His slave said, asked, “What did My slave say?” They replied, “O Lord, he said, ‘O Lord, praise is Yours as befits the majesty of Your face and the immensity of Your power.’” Allah said to them, “Continue to write it as My slave said it until he meets Me and I will repay him for it.”	इस पर उसके दोनों लिखने वाले फ़रिश्ते हैरान हो गए। वह न समझ सके कि उसे कैसे लिखें, चुनाँचे वह आसमान की तरफ़ चढ़ गए और अर्ज़ किया: “ऐ हमारे रब! तेरे बंदे ने ऐसी बात कही है जिसे हम लिखने का तरीक़ा नहीं जानते।” अल्लाह तआला, हालाँकि वह अपने बंदे के क़ौल को ख़ूब जानता है, ने फ़रमाया: “मेरे बंदे ने क्या कहा है?” उन्होंने अर्ज़ किया: “ऐ रब! उसने कहा: ‘ऐ मेरे रब! तमाम तारीफ़ तेरे लिए है, ऐसी तारीफ़ जो तेरे चेहर-ए-अक़दस की अज़मत और तेरी सल्तनत की बड़ाई के लायक़ हो।’” अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “इसे उसी तरह लिखते रहो जैसे मेरे बंदे ने कहा है, यहाँ तक कि वह मुझसे मुलाक़ात करे, फिर मैं ख़ुद उसे उसका बदला अता करूँगा।”
Scholars disagree about which is better: the words, “Praise be to Allah, the Lord of all the worlds,” or the words, “There is no god but Allah.” One group said that “Praise be to Allah, the Lord of all the worlds” is better because it incorporates the <i>tawhid</i>	“उलमा का इस बारे में इख़िलाफ़ है कि कौन सा कलिमा ज़्यादा अफ़ज़ल है: “अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन” या “ला इलाहा इल्लल्लाह”। एक जमाअत ने कहा है कि “अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन” ज़्यादा अफ़ज़ल है, क्योंकि इसमें वह तौहीद भी शामिल है जो “ला इलाहा इल्लल्लाह” में पाई जाती

contained in “There is no god but Allah.” It thus contains both <i>tawhid</i> and praise whereas “There is no god but Allah” contains <i>tawhid</i> alone. Another group say that “There is no god but Allah” is better because it repels disbelief and idolatry and because people are fought for refusing to say it. The Messenger of Allah ﷺ said, “I was commanded to fight people until they say, ‘There is no god but Allah.’” Ibn Atiyyah preferred this and said that this view is entailed by the words of the Prophet ﷺ: “The best of what I and the Prophets before me said is, ‘There is no god but Allah alone with no partner.’”	है। इस तरह इसमें तौहीद भी है और हम्द भी, जबकि “ला इलाहा इल्लल्लाह” सिर्फ तौहीद पर मुश्तमिल है। दूसरी जमाअत का कहना है कि “ला इलाहा इल्लल्लाह” ज्यादा अफ़ज़ल है, क्योंकि यह कुफ़्र और शिर्क को दूर करता है, और लोगों से इसी के इंकार पर क़िताल किया जाता है। रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से उस वक़्त तक क़िताल करूँ जब तक वह ‘ला इलाहा इल्लल्लाह’ न कह दें।” इब्र अतिय्या ने इसी क़ौल को तरजीह दी है, और कहा है कि नबी ﷺ के इस फ़रमान से भी यही बात साबित होती है: “सब से अफ़ज़ल कलिमा जो मैंने और मुझ से पहले अंबिया ने कहा, वह यह है: ‘ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू।’”
The Muslims agree that Allah is praised for all His blessings and that one of Allah’s blessings is faith. This indicates that faith is both an action and a creation. The evidence for that is found in His words, “Lord of all the worlds.” <i>Alamin</i> (worlds) is the total of	“मुसलमान इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि अल्लाह तआला अपनी तमाम नेअमतों पर हम्द के लायक़ है, और अल्लाह की नेअमतों में से एक नेअमत ईमान भी है। यह इस बात की दलील है कि ईमान एक अमल भी है और अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ भी। इसकी दलील अल्लाह तआला के इस फ़रमान में मौजूद है:

all creatures, and faith is part of that whole. The Qadariyyah claim of it being their own creation is false, as will be explained.	"रब्बिल आलमीन"। "आलमीन" से मुराद तमाम मख्लूक़ात हैं, और ईमान भी इसी मजमूए का एक हिस्सा है। लिहाज़ा क़दरिया का यह दावा कि ईमान उनकी अपनी पैदा की हुई चीज़ है, बातिल है, जैसा कि आगे वज़ाहत की जाएगी।"
The word "praise (<i>hamd</i>)" in the Arabic language means comprehensive praise. The definite article is used since the category includes all forms of praise. Allah deserves all praise since He has the Most Beautiful Names and Sublime Attributes. The expression <i>hamd</i> has a plural of paucity as in the words of the poet: "I have singled out the brightest of the praised with my best words and best praise (<i>ahmadi</i>)."	"अरबी ज़बान में लफ़्ज़ "हम्द" का मअनी जामे तारीफ़ और मुकम्मल सताइश है। इसमें "अल" इस लिए लाया गया है कि यह तमाम अक़साम-ए-हम्द को शामिल है। अल्लाह तआला हर क़िस्म की हम्द का मुस्तहक़ है, क्योंकि उसी के लिए बेहतरीन नाम और बुलंद व बरतर सिफ़ात हैं। लफ़्ज़ "हम्द" का एक जमअ-ए-क़िल्लत भी आता है, जैसा कि शायर के इस शेअर में है: "मैंने तमाम तारीफ़ किए जाने वालों में सबसे रोशन हस्ती को अपने बेहतरीन अल्फ़ाज़ और बेहतरीन तारीफ़ों के साथ मख्सूस किया है।"
Praise is the opposite of blame. You say, "I praised the man" and he is praiseworthy (<i>hamid</i>, <i>mahmud</i>). <i>Tahmid</i> from Form II is more extensive than <i>hamd</i>. Praise is more universal than	"हम्द, मज़म्मत की ज़िद है। अरबी में कहा जाता है: "मैंने उस शख्स की हम्द की", और वह "हामिद" या "महमूद" होता है। बाब-ए-तफ़ईल से "तहमीद" का इस्तेमाल "हम्द" से ज़्यादा वसीअ मअनी रखता है। हम्द,

gratitude. The name “Muḥammad,” which is derived from it, means the one who has many praiseworthy qualities. That is why the Messenger of Allah ﷺ is called that. A poet said: “It is derived for him from His Own Name to esteem him. The Possessor of the Throne is praised (<i>mahmud</i>) and this is Muhammad.”	शुक्र से ज़्यादा जामे है। इसी से माखूज़ नाम “मुहम्मद” है, जिसका मअनी है: “वह शख्स जिसमें बहुत सी क़ाबिल-ए-तारीफ़ सिफ़ात हों।” इसी वजह से रसूल अल्लाह ﷺ का नाम “मुहम्मद” रखा गया। एक शायर ने कहा है: “अल्लाह ने अपनी ही सिफ़त वाले नाम से आप का नाम मुश्तक़ फ़रमाया ताकि आप की अज़मत ज़ाहिर हो। अर्श का मालिक ‘महमूद’ है और यह ‘मुहम्मद’ हैं।”
Praiseworthy is the opposite of blameworthy.	“क़ाबिल-ए-तारीफ़, क़ाबिल-ए-मज़म्मत की ज़िद है।”
Abu Jafar at-Tabari and Abu-l-Abbas al-Mubarrad believed that praise and gratitude have the same meaning and that it does not mean “approval.” Abu Abd ar-Rahman as-Sulami related that in his <i>Kitab al-haqaiq</i>, quoting Jafar as-Sadiq and Ibn Ata ’llah. Ibn Ata ’llah said, “It means ‘Thanks be to Allah’ since there is a blessing from Him in teaching it to us so that we praise Him.” At-Tabari deduced that they mean the same by the validity of the	“अबू जाफ़र तबरी और अबू अल-अब्बास अल-मुबर्रद का ख़याल है कि “हम्द” और “शुक्र” एक ही मअनी रखते हैं, और हम्द का मअनी सिर्फ़ “रज़ामंदी” नहीं है। अबू अब्दुर्रहमान अस-सुलामी ने अपनी किताब “अल-हक़ाइक़” में जाफ़र सादिक़ और इब्न अता अल्लाह के हवाले से यह क़ौल नक़ल किया है। इब्न अता अल्लाह ने कहा: “इसका मअनी ‘अल्लाह का शुक्र है’ है, क्योंकि अल्लाह तआला की तरफ़ से हमें यह तालीम देना भी एक नेअमत है ताकि हम उसकी हम्द करें।”

words, "Praise be to Allah in gratitude." Ibn Ata llah said, "In reality, it is evidence for other than what he believed because the word 'gratitude' is specific to praise because it is one of the blessings. Some scholars say that 'gratitude' is more general than praise because it is shown with the tongue, the limbs, and the heart whereas praise is made only with the tongue. It is said that praise is more general because it contains the meaning of gratitude and the meaning of praise and is therefore more universal than gratitude because praise can include gratitude but gratitude does not include praise."	इमाम तबरी ने इस बात से इस्तिदलाल किया कि दोनों एक ही मअनी रखते हैं, क्योंकि यह कहना दुरुस्त है: "अल्हम्दु लिल्लाहि शुक्रन" यानी "अल्लाह के लिए हम्द है बतौर-ए-शुक्र"। इब्र अता अल्लाह ने कहा: "हक़ीक़त में यह दलील उसके बरख़िलाफ़ है जो उन्होंने समझा, क्योंकि लफ़्ज़ 'शुक्र' हम्द की एक खास किस्म है, इस लिए कि शुक्र नेअमत के मुक़ाबले में अदा किया जाता है।" बाज़ उलमा कहते हैं कि "शुक्र" हम्द से ज़्यादा आम है, क्योंकि शुक्र ज़बान, आज़ा और दिल तीनों के ज़रिये अदा किया जाता है, जबकि हम्द सिर्फ़ ज़बान से की जाती है। और यह भी कहा गया है कि हम्द ज़्यादा जामे है, क्योंकि इसमें शुक्र का मअनी भी शामिल है और मद्ह का मअनी भी। इस एतिबार से हम्द, शुक्र से ज़्यादा वसीअ है, क्योंकि हम्द में शुक्र शामिल हो सकता है, लेकिन शुक्र में हम्द का मफ़हूम लाज़िमन शामिल नहीं होता।"
It is related that Ibn Abbas said, "'Praise be to Allah' is the statement of every grateful person. When he sneezed, Adam said, 'Praise be to	"रिवायत है कि इब्र अब्बास ने फ़रमाया: "'अल्हम्दु लिल्लाह' हर शुक्र गुज़ार शख्स का कलिमा है। जब आदम अलैहिस्सलाम ने छींक मारी तो उन्होंने कहा: 'अल्हम्दु

Allah.’ Allah said to Nuh, ‘Then say: “Praise be to Allah Who has rescued us from the people of the wrongdoers!”’ Ibrahim said, ‘Praise be to Allah Who, despite my old age, has given me Ismail and Ishaq.’ Dawud and Sulayman said, ‘Praise be to Allah Who has favoured us over many of His slaves who are believers.’ He said to His Prophet ﷺ, ‘Say: “Praise be to Allah Who has no son.”’ The people of the Garden will say, ‘Praise be to Allah Who has removed all sadness from us’ and ‘The end of their call is: “Praise be to Allah, the Lord of all the worlds!”’ These are the words of everyone who is grateful.	लिलाह’। अल्लाह तआला ने नूह अलैहिस्सलाम से फ़रमाया: ‘फिर कहो: तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने हमें ज़ालिम लोगों से निजात दी।’ इबराहीम अलैहिस्सलाम ने कहा: ‘तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने बुढ़ापे के बावजूद मुझे इस्माईल और इस्हाक़ अता फ़रमाए।’ दाऊद और सुलैमान अलैहिमस्सलाम ने कहा: ‘तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने हमें अपने बहुत से मोमिन बंदों पर फ़ज़ीलत दी।’ और अल्लाह तआला ने अपने नबी ﷺ से फ़रमाया: ‘कह दीजिए: तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसकी कोई औलाद नहीं।’ अहल-ए-जन्नत कहेंगे: ‘तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने हम से हर ग़म दूर कर दिया।’ और उनकी दुआ का इख़िताम यह होगा: ‘तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो तमाम ज़हानों का रब है।’ यह तमाम अल्फ़ाज़ हर शुक्र गुज़ार शख्स के कलिमात हैं।”
The sound position is that the word ‘praise’ is used for the qualities of a person praised without the need of any prior act of charity on that person’s	“सहीह मौक़िफ़ यह है कि लफ़्ज़ “हम्द” उस शख्स की सिफ़ात की तारीफ़ के लिए इस्तेमाल होता है जिसकी तारीफ़ की जा रही हो, ख़्वाह उसने पहले कोई एहसान किया हो

part. Thanks is praise for the one thanked because of some good that he has done. Based on this definition, our scholars say that praise is more universal than gratitude because it comprises both praising and thanking. Thanks is particular, being directed towards someone who did good to you. So the word ‘praise’ is more general and is used in the ayah because it is more than thanks. ‘Praise’ is also used with approval. It is said, ‘I tested him and approved (<i>ḥamdatu</i>) of him.’ Part of that is the words of the Almighty: ‘A praiseworthy (<i>mahmud</i>) station.’ (17:79) The Prophet ﷺ said, ‘I approve (<i>ahmadu</i>) of you washing the urethra.’	या न किया हो। जबकि “शुक्र” उस शख्स की तारीफ़ है जिसने कोई भलाई या एहसान किया हो। इसी तारीफ़ की बिना पर हमारे उलमा कहते हैं कि हम्द, शुक्र से ज़्यादा आम और जामे है, क्योंकि इसमें मद्ह और शुक्र दोनों शामिल होते हैं, जबकि शुक्र खास है और सिर्फ़ उस शख्स के लिए होता है जिसने तुम पर एहसान किया हो। लिहाज़ा आयत में “हम्द” का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है, क्योंकि यह “शुक्र” से ज़्यादा वसीअ मअनी रखता है। “हम्द” का इस्तेमाल रज़ा और पसंदीदगी के मअनी में भी होता है। अरब कहते हैं: “मैंने उसे आजमाया और उससे राज़ी हुआ (हमिदतुह)।” इसी मअनी में अल्लाह तआला का यह फ़रमान है: “मक़ाम-ए-महमूद” (अल-इस्स्रा: 79) यानी ऐसा मक़ाम जो पसंदीदा और क़ाबिल-ए-तारीफ़ हो। नबी ﷺ ने भी फ़रमाया: “मैं तुम्हारे पेशाब की नाली को धोने के अमल को पसंद करता हूँ।”
It is mentioned that Jafar as-Sadiq said, “‘Praise be to Allah’ is a way of praising Him with the attributes with which He has described Himself, and	“ज़िक्र किया जाता है कि जाफ़र सादिक़ ने फ़रमाया: “‘अल्हम्दु लिल्लाह’ अल्लाह तआला की उन सिफ़ात के ज़रिये उसकी तारीफ़ करना है जिनके साथ उसने खुद

the word <i>hamd</i> is used because it is made up of the letters <i>ha</i>, <i>mim</i>, and <i>dal</i>. <i>Ha</i> is from oneness (<i>waḥdaniyyah</i>), <i>mim</i> is from dominion (<i>mulk</i>), and <i>dal</i> is everlastingness (<i>daymumiyyah</i>). This is the real meaning of ‘<i>al-hamdu lillah</i>.’ Shāfiq ibn Ibrāhīm said in the explanation of ‘Praise be to Allah’ that it has three aspects. The first is that when Allah gives you something, you acknowledge the One Who gave it to you. The second is that you show you are pleased with what He has given you. The third is that, as long as there is still strength in your body, you do not disobey Him. These are the preconditions of praise.	अपने आप को मौसूफ़ किया है। लफ़्ज़ ‘हम्द’ इस लिए इस्तेमाल हुआ है कि यह हुरूफ़ ‘ह, म, द’ से मुरक्कब है। ‘ह’ वहदानियत की तरफ़ इशारा है, ‘म’ मुल्क व सल्तनत की तरफ़, और ‘द’ दाइमी और हमेशा बाक़ी रहने वाली ज़ात की तरफ़। यही ‘अल्हम्दु लिल्लाह’ का हक़ीक़ी मअनी है।” शक़ीक़ बिन इबराहीम ने “अल्हम्दु लिल्लाह” की तफ़्सीर में कहा कि उसके तीन पहलू हैं: पहला यह कि जब अल्लाह तआला तुम्हें कोई नेअमत अता करे तो तुम उस अता करने वाले को पहचानो। दूसरा यह कि जो कुछ उसने तुम्हें दिया है, उस पर दिल से राज़ी रहो। तीसरा यह कि जब तक तुम्हारे जिस्म में ताक़त बाक़ी है, तुम उसकी नाफ़रमानी न करो। यही हम्द के बुनियादी तक्वाज़े हैं।”
Allah Almighty praised Himself and began His Book with praise of Himself and did not allow that for anyone but Himself. Indeed, He forbade that in His Book and on the tongue of His Prophet ﷺ. The Almighty says: “Do not claim purity for yourselves. He	“अल्लाह तआला ने अपनी ख़ुद हम्द बयान की है और अपनी किताब की इब्तिदा भी अपनी हम्द से फ़रमाई है, और यह हक़ अपने सिवा किसी और को नहीं दिया। बल्कि उसने अपनी किताब में और अपने नबी ﷺ की ज़बान से इस बात से मना फ़रमाया है।

knows best those who are godfearing.” The Prophet ﷺ said, “Throw dust in the faces of those who praise.” Al-Miqdad related it and it will be discussed in <i>al-Maidah</i>, Allah willing.	अल्लाह तआला फ़रमाता है: “अपने आप को पाकीज़ा न ठहराओ, वही बेहतर जानता है कि कौन मुत्तक़ी है।” और नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तारीफ़ करने वालों के चेहरों पर मिट्टी डाल दो।” इस हदीस को मिक्क़दाद ने रिवायत किया है, और इंशा अल्लाह इस पर सूरह माइदह में गुफ़्तगू की जाएगी।”
The meaning of the words ‘Praise be to Allah, the Lord of all the worlds’ is “My prior praise of Myself before any created being praises Me. My praise of Myself before time does not have a cause while praise of Me by My creatures is sullied by causes.” Our scholars said, “It is repugnant for a creature who has not been given perfection to praise himself for bringing benefits and repelling harms.” It is said that since He knew His slaves’ inability to praise Him, He praised Himself by Himself for Himself before time. No matter how much His slaves try, they are unable to praise Him sufficiently. Do you not see	””अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन” का मअनी यह है: “मेरी अपनी ज़ात के लिए मेरी वह तारीफ़ जो किसी मख़्लूक के मेरी तारीफ़ करने से पहले थी। ज़माना-ए-अज़ल में मेरी अपनी हम्द किसी सबब की मुहताज नहीं, जबकि मख़्लूक की तरफ़ से मेरी तारीफ़ अस्बाब से आलूदा होती है।” हमारे उलमा ने कहा है: “किसी मख़्लूक के लिए, जिसे कमाल हासिल न हो, यह मुनासिब नहीं कि वह अपने आप को फ़वाइद पहुँचाने और नुक़सानात दूर करने पर ख़ुद अपनी तारीफ़ करे।” यह भी कहा गया है कि चूँकि अल्लाह तआला को मालूम था कि उसके बंदे उसकी हम्द का हक़ अदा करने से आजिज़ हैं, इस लिए उसने अज़ल ही में ख़ुद अपनी ज़ात के लिए अपनी हम्द फ़रमाई। बंदे जितनी भी

how the Master of the Messengers ﷺ displayed inability when he said, "I cannot number Your praises." They said: "When we praise You for good, You are as You are praised and above the one who praises."	कोशिश करें, वह अल्लाह तआला की हम्द का पूरा हक़ अदा नहीं कर सकते। क्या तुम नहीं देखते कि सय्यिदुल मुरसलीन ﷺ ने भी अपनी आजिज़ी ज़ाहिर करते हुए फ़रमाया: "मैं तेरी हम्द को शुमार नहीं कर सकता।" शायरों ने कहा है: "जब हम तेरी भलाइयों पर तेरी हम्द बयान करते हैं, तो तू वैसा ही है जैसा तेरी तारीफ़ की जाती है, बल्कि तारीफ़ करने वाले से भी बुलंदतर है।"
It is said that Allah praised Himself before time because He knew the great number of His blessings would be more enjoyed by them since He removed the burden of praising Him from them.	"यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला ने अज़ल ही में अपनी हम्द इस लिए बयान फ़रमाई, क्योंकि वह जानता था कि उसकी बे-शुमार नेअमतेँ बंदों के लिए ज़्यादा खुशगवार और लज़्ज़त बरूँश होंगी, जब उसने अपनी हम्द का बोझ उनसे हटा दिया।"
All seven readings and the majority of people agree that there is a <i>dammah</i> on the <i>dal</i> of <i>hamd</i>, making it <i>hamdu</i>. <i>Hamda</i> is related from Sufyan ibn Uyaynah and Rubah ibn al-Ajjaj. This is based on an implied elided verb. Sibawayh says that, grammatically, if someone uses the nominative	"सातों क़िराअतों और जम्हूर अहल-ए-इल्म का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि "हम्द" के दाल पर ज़म्मा है, यानी इसे "अल्हम्दु" पढ़ा जाता है। "अल्हम्दा" की क़िराअत सुफ़यान बिन उययना और रु'बह बिन अल-अज्जाज से मनकूल है। यह एक महज़ूफ़ फ़ेअल की तक्रदीर पर मबनी है। सीबवैह कहते हैं कि नहवी एतिबार से जब कोई "अल्हम्दु" को

<i>hamdu</i>, it has the meaning of “I praise Allah greatly.” Praise is from Him and from all of creation for Allah. If someone uses the accusative <i>hamda</i>, he is saying praise is from him alone for Allah. Those other than Sibawayh say that saying this is alluding to Allah’s pardon and forgiveness and proclaiming Him great and magnifying Him. So it has a different meaning than a report: it is a request. We find in a hadith: ‘If someone is distracted from asking of Me by remembering Me, I will give him more than I give those who ask.’ It is said that His praise of Himself is to inform His slaves of it. What is implied, according to this, is: ‘Say: “Praise be to Allah.”’ At-Tabari said, “‘Praise be to Allah’ is praise by which He praises Himself. It contains a command for His slaves to praise Him and so it is as if He were saying, ‘Say: “Praise be to Allah.”’	रफ़अ के साथ पढ़ता है तो उसका मअनी होता है: “मैं अल्लाह की बहुत ज़्यादा हम्द करता हूँ।” इस सूरत में हम्द अल्लाह की तरफ़ से भी है और तमाम मख़लूक की तरफ़ से भी अल्लाह के लिए है। और अगर कोई “अल्हम्दा” को नस्ब के साथ पढ़े तो गोया वह कहता है कि हम्द सिर्फ़ उसी की तरफ़ से अल्लाह के लिए है। सीबवैह के अलावा दूसरे उलमा कहते हैं कि इस अंदाज़ में पढ़ने का मक़सद अल्लाह की माफ़ी और मग़फ़िरत की तरफ़ तवज्जोह दिलाना, और उसकी बड़ाई और अज़मत का इज़हार करना है। लिहाज़ा यह सिर्फ़ ख़बर नहीं बल्कि एक दुआ और तलब का मअनी रखता है। एक हदीस में आता है: “जो शख्स मेरे ज़िक्र में मशगूल रहने की वजह से मुझसे सवाल न कर सके, मैं उसे सवाल करने वालों से भी ज़्यादा अता करता हूँ।” यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला का अपनी हम्द बयान करना दरअसल अपने बंदों को उसकी तालीम देना है। इस एतिबार से गोया मअनी यह है: “कहो: तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है।” इमाम तबरी ने कहा: “‘अल्हम्दु लिल्लाह’ ऐसी हम्द है जिसके ज़रिये अल्लाह
---	---

	तआला ने अपनी तारीफ़ फ़रमाई, और इसमें अपने बंदों को भी अपनी हम्द करने का हुक्म दिया। गोया अल्लाह तआला फ़रमा रहा है: 'कहो: तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है।'"
The Lord of all the Worlds	"तमाम जहानों का रब"
'The Lord of all the Worlds' is their Master. Every kingdom has its lord and the Lord is the Master (<i>malik</i>). We find in <i>as-Sihah</i> : "'Lord' (<i>rabb</i>) is one of the Names of Allah Almighty. It is only used of someone else in a relative sense. They used to use it to designate a king in the <i>Jahiliyyah</i> period.'	"'द लॉर्ड ऑफ़ ऑल द वर्ल्ड्स' का मअनी है: तमाम जहानों का मालिक और आका। हर सल्तनत का एक रब होता है, और "रब" का मअनी "मालिक" भी है। किताब "अस-सिहाह" में है: "'रब' अल्लाह तआला के अस्मा में से एक नाम है। इसे किसी और के लिए सिर्फ़ इज़ाफ़त और निस्बत के साथ इस्तेमाल किया जाता है। ज़माना-ए-जाहिलिय्यह में लोग बादशाह को भी 'रब' कहा करते थे।"
The word 'Rabb' means 'master'. That is demonstrated by the words of the Almighty in <i>Surat Yusuf: Mention me when you are with your lord</i> . We find in a hadith: 'When the slave-girl gives birth to her mistress (<i>rabbah</i>).' We have explained it in <i>Kitab at-tadhkirah</i> . The Lord is the one who puts things right, manages,	"लफ़ज़ "रब" का मअनी "आका" और "मालिक" है। इसकी दलील अल्लाह तआला का सूरह यूसुफ़ में यह फ़रमान है: "अपने रब (आका) के पास मेरा ज़िक्र करना।" एक हदीस में भी आता है: "जब लौंडी अपनी मालकिन (रब्बतहा) को जनम देगी।" हमने इसकी वज़ाहत "किताब अत-तज़किरह" में की है। "रब" उस हस्ती को भी कहते हैं जो किसी चीज़ की इस्लाह करे, उसकी तदबीर करे, उस

compels and preserves. Al-Harawi and others said that it is used of the one who tries to put a thing right and complete it. He sees to its fulfilment (<i>rabba</i>) and so he is a lord (<i>rabb, rabb</i>) to it. <i>Rabbaniyyun</i> (divines) are so called because of their guarding of the Revealed Books. We find in a hadith: ‘Do you have a blessing which you tend to (<i>tarabbuha</i>)?’ i.e. to which you attend and put in order. The Lord is the One Who is worshipped. Part of that is the words of a poet: Is he a lord on whose head the male fox urinates?	पर ग़लबा रखे और उसकी हिफ़ाज़त करे। अल-हरवी और दूसरे उलमा ने कहा है कि "रब" उस शख्स के लिए भी बोला जाता है जो किसी चीज़ की दुरुस्ती और तकमील की कोशिश करे। अरब कहते हैं: "रब्बूहू" यानी उसने उसकी निगहदाश्त और इस्लाह की। इसी लिए वह उसका "रब" कहलाता है। "रब्बानिथून" (अल्लाह वाले उलमा) को यह नाम इस लिए दिया गया है कि वह आसमानी किताबों की हिफ़ाज़त और निगरानी करते हैं। एक हदीस में आया है: "क्या तुम्हारे पास कोई ऐसी नेअमत है जिसकी तुम निगहदाश्त करते हो (तरुब्बुहा)?" यानी जिसकी तुम देखभाल और इस्लाह करते हो। "रब" मअबूद के मअनी में भी आता है। इसी मफ़हूम में एक शायर ने कहा है: "क्या वह भी रब हो सकता है जिसके सर पर नर लोमड़ी पेशाब करती हो?"
Some scholars say that <i>Rabb</i> is the greatest name of Allah because of the large number of those who make supplication using it. Consider its use in the Qur'an as at the end of <i>al-Baqarah</i> and <i>Al Imran</i>, and in	"बाज़ उलमा कहते हैं कि "रब" अल्लाह तआला का सब से अज़ीम नाम है, क्योंकि दुआ करने वाले बकसरत इसी नाम के साथ दुआ करते हैं। कुरआन-ए-मजीद में इसके इस्तेमाल पर ग़ौर करो, जैसे सूरह बक़रह और आल-ए-इमरान के

<i>Surat Ibrahim</i> and other surahs. By this quality of Lordship we are made aware of the quality of the relationship between the Lord and the slave which involves kindness, mercy, and need in every state.	आखिर में, नीज़ सूरह इबराहीम और दूसरी सूरतों में। सिफ़त-ए-रुबूबियत के ज़रिये हमें रब और बंदे के दरमियान तअल्लुक की हक़ीक़त मालूम होती है, जो हर हाल में लुफ़्फ़, रहमत और बंदे की मुहताजी पर मबनी है।"
There is disagreement about the derivation of the word <i>rabb</i>. Some say that it is derived from <i>tarbiyah</i> (upbringing). So Allah Almighty manages His creation and nurtures them. We find that borne out in the words of the Almighty: '<i>Your foster daughters in your care.</i>' He called a foster daughter <i>rabibah</i> because the husband cares for her. On the basis that Allah manages His creation and nurtures it, <i>Rabb</i> reflects an attribute connected to Divine Action, and, in as far as <i>Rabb</i> means king and master, it is an attribute of the Divine Essence.	"लफ़ज़ "रब" के इश्तिक्काक़ के बारे में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। बाज़ उलमा कहते हैं कि यह "तरबियत" से मुश्तक़ है। इस एतिबार से अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ की तदबीर फ़रमाता है और उनकी परवरिश करता है। इसकी ताईद अल्लाह तआला के इस फ़रमान से भी होती है: "तुम्हारी वह परवरदा लड़कियाँ जो तुम्हारी परवरिश में हों।" अल्लाह तआला ने सौतेली बेटी को "रबीबह" इस लिए कहा है कि शौहर उसकी परवरिश और निगहदाश्त करता है। इस बिना पर कि अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ की तदबीर और परवरिश फ़रमाता है, "रब" अल्लाह की सिफ़त-ए-फ़ेअल से मुतअल्लिक़ एक सिफ़त है। और इस एतिबार से कि "रब" का मअनी बादशाह और मालिक है, यह अल्लाह तआला की सिफ़त-ए-ज़ात में से है।"
When the definite article is	"जब लफ़ज़ "रब" पर "अल" दाख़िल

affixed to 'Lord' on its own it can only mean Allah Almighty because it is defined, but if it is elided, it can be shared between Allah and His slaves. It is said, 'Allah is the Lord of the slaves, Zayd is the lord of the house, and Allah is the Lord of the lords.' Allah owns both the owner and what is owned. He created him and provides for him. No lord except for Allah can be either a creator or provider. A slave can become an owner after he was not an owner and ownership can also be removed from him. He can own one thing and not own another. The attribute of lordship when it is applied to Allah is different from this. He everlastingly knows and owns everything in existence. This is the difference between the attribute of the Creator and the created.	हो कर "अर-रब" कहा जाए तो इससे सिर्फ अल्लाह तआला ही मुराद होता है, क्योंकि यह मारिफ़ा बन जाता है। लेकिन जब "अल" न हो तो यह लफ़्ज़ अल्लाह तआला और बंदों दोनों के लिए इस्तेमाल हो सकता है। चुनाँचे कहा जाता है: "अल्लाह बंदों का रब है, ज़ैद घर का रब है, और अल्लाह तमाम अरबाब का रब है।" अल्लाह तआला मालिक को भी मालिक है और ममलूक को भी। उसी ने उसे पैदा किया और उसी ने उसे रिज़क़ दिया। अल्लाह के सिवा कोई रब न ख़ालिक् हो सकता है और न राज़िक्। एक बंदा पहले मालिक नहीं होता, फिर मालिक बन जाता है, और उससे मिलिकियत छीन भी ली जाती है। वह एक चीज़ का मालिक हो सकता है और दूसरी चीज़ का नहीं। लेकिन जब रुबूबियत की सिफ़त अल्लाह तआला के लिए इस्तेमाल होती है तो वह इससे बिलकुल मुख़्तलिफ़ है। अल्लाह तआला हमेशा से हर मौजूद चीज़ का इल्म रखने वाला और उसका मालिक है। यही ख़ालिक् और मख़्लूक की सिफ़ात के दरमियान फ़र्क़ है।
There is great disagreement among interpreters about the	"मुफ़स्सिरीन के दरमियान लफ़्ज़ "आलमीन" के मअनी के बारे में बहुत

meaning of the word ‘worlds’ (<i>alamin</i>). Qatadah said that it is the plural of <i>alam</i>, and means every existent thing except Allah. It has no singular form, like <i>raht</i> (group) and <i>qawm</i> (people). It is said that the people of every age are ‘a world’. Al-Husayn ibn al-Fadl said that, based on the words of Allah: ‘<i>Of all beings (alamin), do you lie with males</i>’, he means people. Al-Ajjaj said: Khindif is the head of this world.	बड़ा इख़िलाफ़ पाया जाता है। क़तादा ने कहा है कि यह “आलम” की जमअ है, और इससे मुराद अल्लाह तआला के सिवा हर मौजूद चीज़ है। इसका वाहिद इस्तेमाल नहीं होता, जैसे “रहत” (जमाअत) और “क़ौम” (लोग)। यह भी कहा गया है कि हर ज़माने के लोग एक “आलम” कहलाते हैं। हुसैन बिन अल-फ़ज़ल ने अल्लाह तआला के इस फ़रमान की बिना पर यही कहा है: “क्या तुम तमाम जहान वालों में मर्दों के पास जाते हो?” यानी यहाँ “आलमीन” से मुराद लोग हैं। अल-अज्जाज ने कहा है: “ख़िंदिफ़ इस जहान की सरदार है।”
Ibn Abbas said that <i>alamin</i> means the jinn and human beings. The evidence for his position is the words of the Almighty: ‘<i>So that he can be a warner to all beings (alamin).</i>’ He was not a warner to animals. Al-Farra and Abu Ubaydah said, ‘The word “world” (<i>alam</i>) designates all who have understanding and they constitute four communities: mankind, jinn, angels and shaytans. “World”	“इब्र अब्बास ने फ़रमाया कि “आलमीन” से मुराद जिन्नात और इंसान हैं। उनके क़ौल की दलील अल्लाह तआला का यह फ़रमान है: “ताकि वह तमाम जहान वालों के लिए डराने वाला हो।” क्योंकि नबी ﷺ जानवरों के लिए डराने वाले बना कर नहीं भेजे गए थे। अल-फ़र्रा और अबू उबैदह ने कहा: “आलम” का लफ़्ज़ हर उस मख़्लूक पर बोला जाता है जो अक़ल रखती हो, और वह चार जमाअतें हैं: इंसान, जिन्नात, फ़रिश्ते और शयातीन।”

is not used for beasts, because it is a word only used for those with intelligence.’	उनके नज़दीक "आलम" का लफ़्ज़ जानवरों के लिए इस्तेमाल नहीं होता, क्योंकि यह लफ़्ज़ सिर्फ़ अक़ल रखने वालों के लिए मख़्सूस है।"
Zayd ibn Aslam said, ‘They are those who are provided for.’ It is like what Abu Amr ibn al-Ala said: ‘They are those with a <i>ruh</i>.’ That is the same idea that Ibn Abbas expressed: ‘It means everything with a <i>ruh</i> crawling on the earth.’ Wahb ibn Munabbih said, ‘Allah has eighteen thousand worlds. This world is just one of them.’ Abu Sa’id al-Khudri said, ‘Allah has forty thousand worlds, and this world from east to west is just one of them.’ Muqatil said, ‘There are eighty thousand worlds, forty thousand are on the land and forty thousand on the sea.’ Ar-Rabi ibn Anas related that Abul-Aliyah said, ‘The jinn are a world and mankind is a world. Beyond that the earth has four corners and there are fifteen hundred worlds in each corner. He created them to worship Him.’	"ज़ैद बिन अस्लम ने कहा: "आलमीन" से मुराद वह मख़लूक़ात हैं जिन्हें रिज़क़ दिया जाता है। यही मफ़हूम अबू अम्र बिन अल-अला के क़ौल से भी ज़ाहिर होता है, जब उन्होंने कहा: "इससे मुराद वह हैं जिन में रूह हो।" यही बात इब्न अब्बास के क़ौल से भी मिलती है: "इससे मुराद हर वह चीज़ है जिस में रूह हो और जो ज़मीन पर चलती हो।" वहब बिन मुनब्बिह ने कहा: "अल्लाह तआला के अठारह हज़ार आलम हैं, और यह दुनिया उन में से सिर्फ़ एक आलम है।" अबू सईद ख़ुदरी ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला के चालीस हज़ार आलम हैं, और मशरिक् से मगरिब तक की यह दुनिया उन में से सिर्फ़ एक आलम है।" मुक़ातिल ने कहा: "अस्सी हज़ार आलम हैं, चालीस हज़ार ख़ुशकी में और चालीस हज़ार समंदर में।" रबीअ बिन अनस ने अबुल आलियह से रिवायत किया कि उन्होंने कहा: "जिन्नात एक आलम हैं और इंसान एक आलम। इसके अलावा ज़मीन के

	चार गोशे हैं, और हर गोशे में पंद्रह सौ आलम हैं। अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी इबादत के लिए पैदा किया है।”
The first view is the soundest of these, because it includes every creature and existent thing. Evidence for it is found in the words of the Almighty: <i>‘Pharaoh said, “What is the Lord of all the worlds?” He said, “The Lord of the heavens and the earth and everything between them. The word is derived from alam (sign) and alamah (token) because it indicates the One Who brought it into existence. That is like what az-Zajjaj said: ‘The word “worlds” refers to all that Allah created in this world and the Next.’ Al-Khalil said, ‘Alam, alamah and malam are what indicates a thing, so alam indicates that it has a Creator and Director. This is clear.’ It is mentioned that a man said in the presence of al-Junayd, ‘Praise be to Allah.’ He told him, ‘Complete it as Allah did.</i>	“इन तमाम अक़वाल में पहला क़ौल सब से ज़्यादा सहीह है, क्योंकि वह हर मख़्लूक और हर मौजूद चीज़ को शामिल है। इसकी दलील अल्लाह तआला के इस फ़रमान में है: “फ़िरऔन ने कहा: ‘तमाम ज़हानों का रब क्या है?’ मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: ‘आसमानों और ज़मीन का रब, और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है।’” लफ़ज़ “आलम” दरअसल “अलम” (निशानी) और “अलामह” (अलामत) से मुश्तक़ है, क्योंकि यह अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रहनुमाई करता है। इसी तरह ज़ज्जाज ने कहा: “‘आलमीन’ से मुराद वह तमाम चीज़ें हैं जो अल्लाह तआला ने दुनिया और आख़िरत में पैदा की हैं।” ख़लील ने कहा: “‘आलम’, ‘अलामह’ और ‘मअलम’ हर उस चीज़ को कहते हैं जो किसी चीज़ की निशानदेही करे। लिहाज़ा ‘आलम’ इस बात की दलील है कि उसका एक पैदा करने वाला और तदबीर करने वाला मौजूद है। यह बात बिलकुल वाज़ेह है।”

Say: "the Lord of all the worlds." The man said, 'What are these worlds that they should be mentioned with the Real?' He said, 'Say it, my brother. When the temporal is connected to the timeless, no trace of it remains.'	ज़िक्र किया जाता है कि एक शख्स ने जुनैद के सामने कहा: "अल्हम्दु लिल्लाह।" उन्होंने फ़रमाया: "इसे उसी तरह मुकम्मल करो जैसे अल्लाह तआला ने मुकम्मल किया है, और कहो: 'रब्बिल आलमीन'। उस शख्स ने कहा: "यह आलम क्या चीज़ हैं कि उनका ज़िक्र हक़ तआला के साथ किया जाए?" जुनैद ने फ़रमाया: "ऐ मेरे भाई! इसे कहो, क्योंकि जब हादिस (फ़ानी मख़्लूक़) को क़दीम (हमेशा बाक़ी रहने वाले अल्लाह) के साथ मिला दिया जाता है तो उसका कोई असर बाक़ी नहीं रहता।"
Although the word 'Lord' is usually considered to be genitive (<i>Rabbi</i>) in this context, it can also be read as nominative (<i>Rabbu</i>) or accusative (<i>Rabba</i>). If it is read as accusative, it becomes the object of the praise, and if it is read as nominative it is the beginning of a new sentence, implying, 'He is the Lord of all the worlds.'	"अगरचे इस मक़ाम पर लफ़ज़ "रब" को आम तौर पर हालत-ए-जर में "रब्बि" पढ़ा जाता है, लेकिन इसे रफ़अ के साथ "रब्बु" और नस्ब के साथ "रब्बा" भी पढ़ा जा सकता है। अगर इसे नस्ब के साथ पढ़ा जाए तो यह "हम्द" का मफ़ऊल बन जाता है, और अगर इसे रफ़अ के साथ पढ़ा जाए तो यह एक नए जुमले की इब्तिदा होगी, जिसका मफ़हूम यह होगा: "वह तमाम ज़हानों का रब है।"
The All-Merciful, Most Merciful	"अर-रहमान, अर-रहीम"
After calling Himself 'the Lord of all the worlds' Allah then	"अल्लाह तआला ने अपने आप को

describes Himself as ‘the All-Merciful, Most Merciful’. Because His description as ‘the Lord of all the worlds’ causes fear, He follows it by ‘the All-Merciful, Most Merciful’ since that contains reassurance, so that His qualities induce both awe of Him and the desire for Him. This helps people in their obedience to Him. He does the same in several places in His Book. He says: <i>‘Tell My slaves that I am the Ever-Forgiving, the Most Merciful, but also that My punishment is the painful punishment.</i> He says elsewhere: <i>‘The Forgiver of wrong action, the Acceptor of repentance, the Severe in retribution, the Possessor of abundance.’</i> In <i>Sahih Muslim</i> we find a hadith in which Abu Hurayrah reported that the Messenger of Allah ﷺ said, ‘If the believers knew the punishment of Allah, no one would hope for His Garden. If the unbelievers knew the mercy of Allah, no one would despair of His Garden.’ The meanings of	“रब्बिल आलमीन” कहने के बाद “अर-रहमानिर-रहीम” के साथ वस्फ़रमाया। चूँकि “रब्बुल आलमीन” की सिफ़त में जलाल और हैबत पाई जाती है, इस लिए उसके बाद “अर-रहमानिर-रहीम” फ़रमाया, क्योंकि इसमें बंदों के लिए तसल्ली और उम्मीद है, ताकि अल्लाह तआला की सिफ़ात बंदों के दिलों में उसकी हैबत भी पैदा करें और उसकी रहमत की रग़बत भी। यही चीज़ लोगों को अल्लाह की इताअत पर आमादा करती है। अल्लाह तआला ने अपनी किताब में कई मक़ामात पर यही अंदाज़ इख़्तियार फ़रमाया है। चुनाँचे इरशाद फ़रमाया: “मेरे बंदों को ख़बर दे दो कि मैं ही बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला हूँ, और यह भी कि मेरा अज़ाब ही दर्दनाक अज़ाब है।” एक और मक़ाम पर फ़रमाया: “गुनाह बख़्शने वाला, तौबा क़बूल करने वाला, सख़्त अज़ाब देने वाला, बड़ी कुदरत वाला।” सहीह मुस्लिम में अबू हुदैरह से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अगर मोमिन अल्लाह के अज़ाब को पूरी तरह जान लेते तो कोई भी उसकी जन्नत की उम्मीद न रखता, और अगर काफ़िर अल्लाह की
--	---

these two Names have already been given in the introduction.	रहमत को पूरी तरह जान लेते तो कोई भी उसकी जन्नत से मायूस न होता।" इन दोनों नामों के मआनी पहले मुक़द्दमे में बयान किए जा चुके हैं।"
The King of the Day of Repayment.	"रोज़-ए-जज़ा का बादशाह।"
Muhammad ibn as-Samayqa has 'King' in the accusative, and there are four readings of it: <i>malik</i> , <i>malik</i> , <i>malk</i> and <i>malik</i> . It is related from Nafi that there is <i>ishba</i> on the <i>kasrah</i> of <i>malik</i> and so he recited, <i>maliki</i> . Scholars disagree about which is the more comprehensive: <i>malik</i> (king) or <i>malik</i> (master). Both readings are transmitted from the Prophet ﷺ, Abu Bakr, and Umar. At-Tirmidhi mentioned both readings. It is said that 'King (<i>malik</i>)' is more general and intensive than 'Master (<i>malik</i>)' since every king is a master but not every master is a king, and because a king has authority over the property of a master so that he can only dispose of it according to the	"मुहम्मद बिन अस-समीक़अ ने "मलिक" को नस्ब के साथ पढ़ा है, और इसकी चार क़िराअतें हैं: मलिक, मालिक, मलक और मलीक। नाफ़े से मरवी है कि उन्होंने "मालिक" की कसरा में इश्बाअ किया, लिहाज़ा उन्होंने "मालिकी" पढ़ा। उलमा के दरमियान इस बात में इख़्तिलाफ़ है कि कौन सा लफ़्ज़ ज़्यादा जामेअ है: "मलिक" (बादशाह) या "मालिक" (मालिक)। दोनों क़िराअतें नबी ﷺ, अबूबक्र और उमर से मनकूल हैं। इमाम तिर्मिज़ी ने भी दोनों क़िराअतों का ज़िक्र किया है। कहा गया है कि "मलिक" (बादशाह) "मालिक" (मालिक) से ज़्यादा आम और ज़्यादा बलीग़ है, क्योंकि हर बादशाह मालिक होता है, लेकिन हर मालिक बादशाह नहीं होता। नीज़ बादशाह को मालिक की मिल्कियत पर भी इख़्तियार हासिल होता है, यहाँ तक कि मालिक भी अपनी मिल्कियत में

directives of the king. Abu Ubaydah and al-Mubarrad also held that opinion. It is said that ‘Master is more comprehensive because He is the Master of people and other creatures and so it is more far reaching and greater in His power of disposal since He sees to the imposing of the laws of the Shariah. So he has greater mastery.’	बादशाह के हुक्म के मुताबिक ही तसर्फ़ कर सकता है। अबू उबैदा और अल-मुबर्द का भी यही मौक़िफ़ था। और यह भी कहा गया है कि “मालिक” ज़्यादा ज़ामेअ है, क्योंकि अल्लाह तआला इंसानों और दीगर तमाम मख़लूक़ात का मालिक है, लिहाज़ा यह मअनी में ज़्यादा वसीअ और उसके तसर्फ़ की कुदरत में ज़्यादा कामिल है, क्योंकि वह शरीअत के अहकाम नाफ़िज़ फ़रमाता है। पस उसकी मिल्कियत ज़्यादा अज़ीम है।”
Abu Ali said that Abu Bakr ibn as-Siraj transmitted from some of those who preferred to recite <i>malik</i> that Allah describes Himself as being the Master of everything in His words, ‘Lord of all the worlds’, so there is no point in the recitation <i>malik</i> because that would be a repetition. Abu Ali said, ‘This is not a valid argument because the Revelation contains many similar instances, where the general comes first and then the particular. One example is Allah’s words: “<i>He is Allah, the Creator, the Maker, the</i>	”अबू अली ने कहा कि अबू बक्र बिन अस-सिराज ने उन बाज़ अहल-ए-इल्म से नक़ल किया है जो “मालिक” की क़िराअत को तर्जीह देते थे, कि अल्लाह तआला ने अपने आप को “रब्बिल आलमीन” के अल्फ़ाज़ में हर चीज़ का मालिक बयान फ़रमा दिया है, लिहाज़ा “मालिक” की क़िराअत में कोई ख़ास फ़ायदा नहीं, क्योंकि यह तकरार होगी। अबू अली ने कहा: “यह दलील दुरुस्त नहीं है, क्योंकि वही में इस जैसी बहुत सी मिसालें मौजूद हैं, जहाँ पहले आम बात ज़िक्र की जाती है फिर उसके बाद ख़ास चीज़ का ज़िक्र आता है। इसकी एक मिसाल अल्लाह तआला का यह

<i>Giver of Form.</i>” Creator is general, and the Giver of Form is mentioned because it calls attention to what is created and the existence of wisdom. Another instance is when the Almighty says: “<i>They are certain about the Next World</i>” after saying “<i>those who believe in the Unseen.</i>” The Unseen contains the Next World and other things, but He mentioned it because of its immensity and to call attention to the obligation to believe in it and to refute the unbelievers who deny it. Yet another example, of particular relevance to the <i>Fātiḥah</i> is the formula, “<i>the All-Merciful, Most Merciful</i>” when <i>Rahman</i> is general for all existence and <i>Rahim</i> is mentioned after it to make it specific to the believers in the Next World, something made explicit by His words, “<i>merciful to the believers</i>” .	फ़रमान है: ‘वह अल्लाह है, पैदा करने वाला, वजूद बख़्शने वाला, सूरतें बनाने वाला।’ यहाँ ‘पैदा करने वाला’ आम है, फिर ‘सूरतें बनाने वाला’ को इस लिए ज़िक्र किया गया ताकि मख़लूक की साख़्त और उसमें पाई जाने वाली हिकमत की तरफ़ तवज्जोह दिलाई जाए। इसी तरह एक और मिसाल अल्लाह तआला का यह फ़रमान है: ‘और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं’, यह फ़रमान ‘जो ग़ैब पर ईमान रखते हैं’ के बाद आया है। ग़ैब में आख़िरत भी शामिल है और दूसरी चीज़ें भी, लेकिन आख़िरत को ख़ास तौर पर उसकी अज़मत की वजह से ज़िक्र किया गया, नीज़ उस पर ईमान लाने के वुजूब को वाज़ेह करने और उन काफ़िरों की तरदीद करने के लिए जो उसका इंकार करते हैं। इसी तरह सूर: फ़ातिहा से ख़ास तअल्लुक रखने वाली मिसाल ‘अर-रहमानिर-रहीम’ है। “रहमान” तमाम मख़लूक़ात के लिए आम रहमत को शामिल है, जबकि “रहीम” को उसके बाद इस लिए ज़िक्र किया गया ताकि आख़िरत में मोमिनों के साथ ख़ास रहमत को बयान किया जाए। इसकी सराहत अल्लाह तआला के इस फ़रमान में मौजूद है: ‘और वह
---	---

	मोमिनों पर बहुत रहम करने वाला है।'
Abu Hatim said that <i>malik</i> is more intensive when praising the Creator than <i>malik</i>, and <i>malik</i> is more intensive when praising creatures than <i>malik</i>. The difference between them is that a master in the case of creatures can be other than a king. But when Allah is master, He is also a king. This position was chosen by Qadi Abu Bakr ibn al-Arabi. He mentioned three reasons. One is that it can be applied to both the particular and the general and so you can say 'master of a house, land and garment', in the same way that you say 'master of a kingdom'. The second is that it is applied to the master of a little or a lot. When you reflect on these two statements, you find that they are the same. The third is that you say, 'Master of the Kingdom (<i>malik al-mulk</i>)', not 'King of the Kingdom (<i>malik al-mulk</i>)'. Ibn al-Hassar said that that is the case because the word 'master'	"अबू हातिम ने कहा कि खालिफ़ की तारीफ़ में "मालिक" का लफ़्ज़ "मलिक" से ज़्यादा बलीग़ है, जबकि मख़लूक़ की तारीफ़ में "मलिक" ka लफ़्ज़ "मालिक" से ज़्यादा बलीग़ होता है। इन दोनों के दरमियान फ़र्क़ यह है कि मख़लूक़ के मामले में मालिक होना ज़रूरी नहीं कि बादशाह होने को भी शामिल हो, लेकिन जब अल्लाह तआला मालिक होता है तो वह बादशाह भी होता है। यही मौक़िफ़ क़ाज़ी अबू बक्र बिन अल-अरबी ने इस्ति़यार किया। उन्होंने इसके लिए तीन वजहें ज़िक़र कीं। पहली यह कि "मालिक" का इत्लाक़ ख़ास और आम दोनों पर होता है, लिहाज़ा जैसे आप "घर का मालिक", "ज़मीन का मालिक" और "कपड़े का मालिक" कहते हैं, इसी तरह "बादशाहत का मालिक" भी कहा जाता है। दूसरी वजह यह है कि यह लफ़्ज़ थोड़ी और ज़्यादा दोनों चीज़ों के मालिक के लिए इस्तेमाल होता है। जब आप इन दोनों बातों पर ग़ौर करेंगे तो मालूम होगा कि दोनों का मफ़हूम क़रीब क़रीब एक ही है। तीसरी वजह यह है कि कहा जाता है:

indicates property (<i>milk</i>) and does not necessarily entail a kingdom (<i>mulk</i>). Property comprises both matters and so it is more intensive. It also entails completeness. That is why <i>malik</i> is more entitled than others.	"मालिकुल मुल्क" (बादशाहत का मालिक), लेकिन "मलिकुल मुल्क" नहीं कहा जाता। इब्र अल-हस्सार ने कहा कि इसकी वजह यह है कि लफ़्ज़ "मालिक" मिल्कियत (मिल्क) पर दलालत करता है, जबकि यह ज़रूरी नहीं कि इसमें बादशाहत (मुल्क) भी शामिल हो। मिल्कियत दोनों मआनी को शामिल होती है, इसलिए यह ज़्यादा बलीग़ है। नीज़ यह कमाल पर भी दलालत करती है, और इसी वजह से "मालिक" दूसरों की निस्बत ज़्यादा हक़दार है।"
Have you not seen the words of the Almighty: '<i>Allah has chosen him over you and increased him greatly in knowledge and physical strength</i>'? And that is why the Prophet ﷺ said, 'The imamate is in Quraysh,' and Quraysh is the best of the Arab tribes and the Arabs are better and nobler than the non-Arabs. It contains power and choice, which is something which is necessary for a king. If he were not powerful, possessing choice and having his judgments and commands carried out, then his	"क्या तुम ने अल्लाह तआला के इस फ़रमान को नहीं देखा: "अल्लाह ने उसे तुम पर बरगुज़ीदा किया है और उसे इल्म और जिस्मानी कुव्वत में बहुत वुसअत अता फ़रमाई है"? और इसी वजह से नबी ﷺ ने फ़रमाया: "इमामत कुरैश में है।" कुरैश अरब क़बाइल में सबसे बेहतर हैं, और अरब ग़ैर-अरबों से ज़्यादा अफ़ज़ल और मुअज़्ज़ज़ हैं। इसमें कुव्वत और इख़्तियार का मफ़हूम पाया जाता है, और यही चीज़ बादशाह के लिए ज़रूरी होती है। अगर वह ताक़तवर न हो, इख़्तियार न रखता हो, और उसके अहकाम व फ़ैसले नाफ़िज़ न होते हों, तो उसके दुश्मन उस पर

enemies would overpower him and his subjects would be held in contempt. It also contains force, promise and threat. Do you not see that Sulayman said: <i>'How is it that I do not see the hoopoe? Or is it absent without leave? I will certainly punish it most severely'</i>? There are other extraordinary matters and sublime meanings which are not found in <i>malik</i>. Some of them argue that <i>malik</i> is more intensive because it has an extra letter and so its reciter receives ten more good actions than the one who reads <i>malik</i>. This is looking at form rather than meaning. The recitation of <i>malik</i> is established and it has meanings that <i>malik</i> does not have, and Allah knows best.	ग़ालिब आ जाएँ और उसकी रइय्या उसे हक़ीर समझे। इसमें कुव्वत, वादा और वर्ईद का मफ़हूम भी शामिल है। क्या तुम नहीं देखते कि सुलैमानु ने फ़रमाया: "क्या वजह है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा? या वह बग़ैर इजाज़त ग़ायब है? मैं उसे सख़्त सज़ा दूँगा।" इसके अलावा भी कई ग़ैर मामूली उमूर और बुलंद मअानी हैं जो "मालिक" में नहीं पाए जाते। बाज़ लोगों ने यह दलील दी है कि "मालिक" ज़्यादा बलीग़ है, क्योंकि इसमें एक हरफ़ ज़्यादा है, लिहाज़ा उसके पढ़ने वाले को "मलिक" पढ़ने वाले से दस ज़्यादा नेकियाँ मिलती हैं। लेकिन यह बात मअनी के बजाय सिर्फ़ लफ़्ज़ी शक्ल को देखना है। "मलिक" की क़िराअत साबित शुदा है, और इसमें ऐसे मअानी पाए जाते हैं जो "मालिक" में मौजूद नहीं। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।"
It is said that it is not permitted to give anyone the name nor to call other than Allah Almighty by it. Al-Bukhari and Muslim related from Abu Hurayrah that the Messenger of Allah ﷺ said, 'Allah will seize the earth on	"कहा गया है कि यह नाम किसी को देना जाइज़ नहीं, और न ही अल्लाह तआला के सिवा किसी और को इस नाम से पुकारना जाइज़ है। इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने अबू हुरैरहूँ से रिवायत किया है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह

the Day of Rising and roll up heaven in His right hand and then say, “I am the King. Where are the kings of the earth?”” Abu Hurayrah also reported that the Messenger of Allah ﷺ said, ‘The most abased man in the sight of Allah is a man who calls himself “the King of Kings”.’ Muslim added, ‘There is no king except Allah Almighty.’ Sufyan said, ‘Like the Persian title <i>Shahanshah</i>.’ Ahmad ibn Hanbal said, ‘I asked Abu Amr ash-Shaybani about the meaning of <i>akhna</i> and he said, “lowly”.’ He said that the Messenger of Allah ﷺ said, ‘The man with whom Allah will be angriest is a man who calls himself “the king of kings.” There is no king except Allah.’ Ibn al-Hassar said, ‘It is like that with “King of the Day of Judgement” and “Master of the Kingdom.”’ There is no disagreement that this title is forbidden to all creatures in the same way that ‘king of kings’ is forbidden. It is, however,	तआला क्रियामत के दिन ज़मीन को अपनी गिरफ़्त में ले लेगा और आसमान को अपने दाएँ हाथ में लपेट लेगा, फिर फ़रमाएगा: ‘मैं बादशाह हूँ, ज़मीन के बादशाह कहाँ हैं?’” अबू हुरैरहँ ही से यह भी रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा ज़लील आदमी वह है जो अपने आप को ‘बादशाहों का बादशाह’ कहे।” इमाम मुस्लिम ने यह इज़ाफ़ा नक्ल किया है: “अल्लाह तआला के सिवा कोई बादशाह नहीं।” सुफ़यान ने कहा: “जैसे फ़ारसी लक़ब ‘शाहंशाह’ है।” अहमद बिन हंबल ने कहा: “मैं ने अबू अम्र अश-शैबानी से ‘अख़नअ’ के मअनी पूछे तो उन्होंने कहा: ‘ज़लील और पस्त’।” और नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे ज़्यादा ग़ज़ब का मुस्तहिक़ वह शख्स है जो अपने आप को ‘बादशाहों का बादशाह’ कहे। अल्लाह के सिवा कोई बादशाह नहीं।” इब्न अल-हस्सार ने कहा: “इसी तरह ‘मालिकी यौमिद्दीन’ और ‘मालिकुल मुल्क’ का मामला है।” इस बात में कोई इख़िलाफ़ नहीं कि यह लक़ब तमाम मख़लूक़ात के लिए ममनूअ है, जैसे “बादशाहों का
--	--

permitted to be described as king or master if what is intended is what is customarily understood by those terms. Allah Almighty says: '<i>Allah sent you Talut as a king.</i>' The Prophet ﷺ said, 'Some people from my community were shown to me raiding in the way of Allah, riding the middle of this sea like kings on thrones.'	बादशाह" कहना ममनूअ है। अलबत्ता किसी को "बादशाह" या "मालिक" कहना जाइज़ है, अगर उससे वही मअनी मुराद हों जो उर्फ़ में इन अल्फ़ाज़ से समझे जाते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह बना कर भेजा है।" और नबी ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे मेरी उम्मत के कुछ लोग दिखाए गए जो अल्लाह की राह में जिहाद करते हुए उस समुंदर के बीचों-बीच तख़्तों पर बैठे बादशाहों की तरह सवार थे।"
It may be asked why does Allah say '<i>Master of the Day of Repayment</i>' when the Day of Judgment has not yet arrived? How can He describe Himself as being the Master of something He has not yet brought into existence? The response to this is that the word used is an active participle from the verb <i>malaka</i>, and the active participle in Arabic can be used to indicate something which is still to come. That is a correct, sound, intelligible use of language, like 'I will hit (darib) Zayd tomorrow,' using	"यह सवाल किया जा सकता है कि अल्लाह तआला "मालिकी यौमिद्दीन" क्यों फ़रमाता है, जबकि क्रियामत का दिन अभी आया ही नहीं? अल्लाह तआला अपने आप को ऐसी चीज़ का मालिक कैसे बयान फ़रमा सकता है जिसे उसने अभी वजूद में नहीं लाया? इस का जवाब यह है कि यहाँ इस्तेमाल होने वाला लफ़्ज़ फ़ेअल "मलका" से इस्म-ए-फ़ाइल है, और अरबी ज़बान में इस्म-ए-फ़ाइल मुस्तक़बिल के मअनी में भी इस्तेमाल होता है। यह ज़बान का दुरुस्त, फ़सीह और क़ाबिल-ए-फ़हम इस्तेमाल है, जैसे कोई कहे: "मैं कल ज़ैद को मारने वाला हूँ", जहाँ इस्म-

the active participle. The form can be used for the future, and that is the case in the words, <i>'Master of the Day of Repayment,'</i> meaning that He will be the Master on the Day when it comes.	ए-फ़ाइल इस्तेमाल किया गया है। लिहाज़ा यह सीगा मुस्तक़बिल के लिए भी आता है, और "मालिकी यौमिद्दीन" का मतलब यह है कि जब क़ियामत का दिन क़ायम होगा तो अल्लाह तआला ही उस दिन का मालिक होगा।"
A second point is that the interpretation of the phrase refers to power, meaning that Allah has power on the Day of Judgment or over the Day of Judgment and is bringing it about because the king of a thing can dispose of a thing as He wills and has power over it. Allah Almighty is the King of all things and disposes of them as He wills. Nothing is impossible for Him. The first aspect is close to Arabic and more effective. Abu-l-Qasim az-Zajjaj said that.	"दूसरा नुक्ता यह है कि इस इबारत की तफ़्सीर कुदरत के मअनी में है, यानी अल्लाह तआला क़ियामत के दिन पर या क़ियामत के दिन के मुआमलात पर कामिल कुदरत रखता है और उसी को बरपा करने वाला है, क्योंकि किसी चीज़ का मालिक वह होता है जो उसमें अपनी मर्ज़ी के मुताबिक तसर्रुफ़ कर सके और उस पर कुदरत रखता हो। अल्लाह तआला हर चीज़ का मालिक है और उनमें जैसे चाहता है तसर्रुफ़ फ़रमाता है। उसके लिए कोई चीज़ नामुमकिन नहीं। पहला मफ़हूम अरबी ज़बान के ज़्यादा करीब और ज़्यादा बलीग़ है। अबुल क़ासिम अज़-ज़ज्जाज ने यही बात कही है।"
A third point is to ask why Allah singled out the Day of Repayment when He is King of that Day and all other days. The answer is because, in this	"तीसरा नुक्ता यह है कि यह सवाल किया जाए कि अल्लाह तआला ने ख़ास तौर पर "यौम-ए-जज़ा" का ज़िक्र क्यों फ़रमाया, जबकि वह उस दिन का भी मालिक है और तमाम

world, there is contention about who has sovereignty, as is displayed in what Pharaoh, Nimrod and other tyrants did. On that Day no one will contend with Him for sovereignty and all of them will be humbled to Him, as He says: <i>'To whom does the kingdom belong today?'</i> The answer of all creatures will be: <i>'To Allah, the One, the Conqueror.'</i> Glory be to Him! There is no god but Him.	दूसरे दिनों का भी। इस का जवाब यह है कि दुनिया में बादशाहत और इक्तिदार के बारे में झगड़ा और दावा पाया जाता है, जैसा कि फ़िरऔन, नमरूद और दूसरे सरकश लोगों के तर्ज-ए-अमल से ज़ाहिर होता है। लेकिन उस दिन कोई भी अल्लाह तआला की बादशाहत में उसका शरीक या मद-ए-मुक़ाबिल नहीं होगा, बल्कि सब उसके सामने आजिज़ व मग़लूब होंगे, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: "आज बादशाही किस की है?" तमाम मख़लूक़ात का जवाब होगा: "अल्लाह वाहिद व क़हहार की।" वह पाक है, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं।"
If the reading <i>malik</i> (King) is employed, it is one of the attributes of the Divine Essence. If <i>malik</i> (Master) is used, it is one of the attributes of Divine Action.	"अगर "मलिक" (बादशाह) की क़िराअत इख़्तियार की जाए तो यह अल्लाह तआला की सिफ़ात-ए-ज़ात में से एक सिफ़त है। और अगर "मालिक" (मालिक) की क़िराअत इख़्तियार की जाए तो यह अल्लाह तआला की सिफ़ात-ए-फ़ेअल में से एक सिफ़त है।"
The word 'day' normally designates the time from the rising of dawn until the moment when the sun sets. It is used metaphorically here for	"लफ़ज़ "यौम" (दिन) उमूमन उस वक़्त के लिए बोला जाता है जो तुलूअ-ए-फ़ज्र से लेकर सूरज ग़रूब होने तक होता है। यहाँ यह लफ़ज़ मजाज़ी तौर पर उस मुद्दत के लिए

the time from when the Resurrection takes place until the time when the people of the Next World take up their respective abodes. The word 'day' can apply to a time in it, as when Allah Almighty says: <i>'Today I have completed your din for you.</i> The plural of yawm is ayyam. The root is awyam and there is assimilation. Sometimes they describe hardship as 'a day'.	इस्तेमाल हुआ है जो क्रियामत बरपा होने से लेकर अहल-ए-आखिरत के अपने अपने ठिकानों में पहुँच जाने तक होगी। लफ़्ज़ "यौम" किसी वक़्त के एक हिस्से पर भी बोला जाता है, जैसे अल्लाह तआला का फ़रमान है: "आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया है।" "यौम" की जमअ "अय्याम" आती है। इसकी अस्ल "अवयाम" है, फिर इसमें इदग़ाम हुआ है। कभी अरब लोग सख़्ती और मुसीबत को भी "एक दिन" से ताबीर करते हैं।"
'Repayment (<i>din</i>)' here means requital for actions and reckoning for them. That is what Ibn Abbas, Ibn Mas'ūd, Ibn Jurayj, Qatadah and others said. This understanding is related from the Prophet ﷺ. It is indicated by the words of the Almighty: <i>On that Day Allah will repay them what is due to them.</i> This is their reckoning. He says: <i>'Every self will be repaid today for what it earned. 'Today you will be repaid for what you did.'</i> 'Will we face a reckoning?	"यहाँ "दीन" से मुराद आमाल का बदला और उनका हिसाब है। यही तफ़्सीर इब्न अब्बास, इब्न मसऊद, इब्न जुरैज, क़तादा और दीगर अहल-ए-इल्म ने बयान की है। यही मफ़हूम नबी ﷺ से भी मरवी है। इस पर अल्लाह तआला के इस फ़रमान से दलालत मिलती है: "उस दिन अल्लाह उन्हें उनका पूरा पूरा बदला देगा।" यानी यही उनका हिसाब है। और अल्लाह तआला फ़रमाता है: "आज हर जान को उसके किए का बदला दिया जाएगा।" और फ़रमाया: "आज तुम्हें उन आमाल का बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे।" और फ़रमाया: "क्या हम वाक़ई हिसाब का

	सामना करेंगे?"
Linguists report that <i>dayn</i> is debt and <i>din</i> is repayment. Another aspect of it is the term <i>ad-Dayyan</i> as an attribute of the Lord, meaning 'the Repayer'. A hadith states: 'The clever one is he who calls himself to account (<i>dana</i>).' It is said that it means judgment and this is also related from Ibn Abbas. These three meanings are similar. <i>Din</i> can also mean obedience. So the word is one which has several meanings. Thalab said, 'The verb <i>ddna</i> is used for a man when he obeys, when he disobeys, when he is exalted, when he is abased, and when he is overcome, and so it is one of the words with opposite meanings, also used for custom and affair. <i>Din</i> can be used for the policy of a king. <i>Dayn</i> can be a malady.'	अहल-ए-लुगत बयान करते हैं कि "दैन" से मुराद कर्ज़ है और "दीन" का मअनी बदला और जज़ा है। इसी से अल्लाह तआला की एक सिफ़त "अद्-दय्यान्" भी है, जिसका मतलब है: "बदला देने वाला"। एक हदीस में आया है: "अक्लमंद वह है जो अपने नफ़्स का मुहासबा करे (दान नफ़्सहू)।" कहा गया है कि इसका मअनी फ़ैसला और हिसाब भी है, और यही मअनी इब्न-ए-अब्बास से भी मरवी है। ये तीनों मआनी आपस में करीब करीब हैं। "दीन" इताअत के मअनी में भी आता है। पस यह ऐसा लफ़्ज़ है जिसके कई मआनी हैं। सअलब ने कहा: "फ़ेअल 'दान' किसी शख्स के लिए उस वक़्त इस्तेमाल होता है जब वह इताअत करे, नाफ़रमानी करे, इज़्ज़त पाए, ज़लील हो, या मग़लूब हो जाए। इस तरह यह उन अल्फ़ाज़ में से है जो मुतज़ाद मआनी रखते हैं। नीज़ यह आदत और मामला के मअनी में भी इस्तेमाल होता है। 'दीन' बादशाह की पॉलिसी और तर्ज़-ए-हुकूमत के लिए भी बोला जाता है, जबकि "दैन" बीमारी के मअनी में भी आता है।
You alone we worship and	"हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं

You alone we ask for help	और सिर्फ़ तुझ ही से मदद मांगते हैं।”
With ‘<i>You alone we worship</i>’ the third person changes to the second person based on a grammatical shift (<i>talwin</i>). From the beginning to this point the surah has been a description of Allah and praise for Him as is the case in other examples in Allah’s Book: ‘<i>Their Lord will give them a pure drink</i>’ which then changes to ‘<i>This is your reward.</i>’ We find the reverse in ‘<i>When some of you are on a boat, running before a fair wind</i>’ which changes to ‘<i>and then a violent squall comes upon them.</i>’	“हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं” में गाइब के सीरो से हाज़िर के सीरो की तरफ़ इल्तिफ़ात (अस्लूब की तब्दीली) हुआ है। सूरत के आगाज़ से यहाँ तक अल्लाह तआला का ज़िक्र और उसकी हम्द व सना गाइब के सीरो में हो रही थी, जैसा कि अल्लाह की किताब में दूसरी जगहों पर भी ऐसा अस्लूब पाया जाता है। मिसाल के तौर पर: “उनका रब उन्हें पाकीज़ा मशरूब पिलाएगा” फिर उसके बाद फ़रमाया: “यह तुम्हारा बदला है।” इसी के बरअक्स एक और मिसाल यह है: “जब तुम में से कुछ लोग कश्ती में होते हैं जो खुशगवार हवा के साथ चल रही होती है” फिर अस्लूब बदल कर फ़रमाया: “और फिर उन पर एक सख़्त आँधी आ पहुँचती है।”
‘We worship’ means ‘We obey’. Worship is obedience and humility. A smooth (<i>muabbad</i>) road is one which is easy for travellers to travel on. Al-Harawi said, ‘When those subject to the Shariah say this they are acknowledging Allah’s	“हम इबादत करते हैं” का मतलब है: “हम इताअत करते हैं।” इबादत इताअत और आजिज़ी का नाम है। हमवार (मुअब्बद) रास्ता वह होता है जो मुसाफ़िरों के चलने के लिए आसान हो। अल-हरवी ने कहा: “जब अहल-ए-शरीअत ये कलिमात कहते हैं तो वह अल्लाह की रुबूबियत का

Lordship and affirming the worship of Allah alone since other people worship other than Him in the form of idols and other things.’ The meaning of ‘ask for help’ (<i>istaana</i>) is to seek aid, support and success. As-Sulami says in <i>al-Haqaiq</i>: ‘I heard Muhammad ibn Abdullah ibn Shadhan say that he heard Abu Hafs al-Farghani say, “Whoever recites ‘<i>You alone we worship and You alone we ask for help</i>’ cannot be considered guilty of espousing either the doctrine of fatalism or that of absolute free will.”’	इकरार करते हैं और सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत को साबित करते हैं, क्योंकि दूसरे लोग उसके सिवा बुतों और दूसरी चीज़ों की इबादत करते हैं।” “मदद मांगते हैं” (नस्तर्इन) का मतलब है: मदद, सहारा और कामयाबी तलब करना। अस-सुलामी ने “अल-हक्काइक़” में कहा: “मैंने मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन शाज़ान को कहते हुए सुना कि उन्होंने अबू हफ़्स अल-फ़रग़ानी को यह कहते हुए सुना: ‘जो शख्स “हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से मदद मांगते हैं” की तिलावत करता है, उसे न जबरिया के अकीदे का क़ाइल कहा जा सकता है और न ही मुतलक़ इख़्तियार के अकीदे का।’
If it is asked why the object is put before the verb, the answer is that it is put first because of its importance. The Arabs tend to put the most important thing first. It is mentioned that a Bedouin cursed another and so the cursed man turned away from him and the curser exclaimed, ‘You (<i>iybaka</i>) from me!’ And the other replied,	अगर यह सवाल किया जाए कि मफ़ऊल को फ़ेअल से पहले क्यों ज़िक्र किया गया है, तो उसका जवाब यह है कि उसकी अहमियत की वजह से उसे मुक़द्दम किया गया है। अरबों का तरीक़ा यह है कि वह ज़्यादा अहम चीज़ को पहले ज़िक्र करते हैं। ज़िक्र किया जाता है कि एक बदवी ने दूसरे को बददुआ दी, तो जिसे बददुआ दी गई थी वह उससे मुँह फेर कर चल दिया। इस

‘From you I turn.’ They put the object of emphasis first. It also ensures that the created slave and worship is not put before the object of worship. So it is not permitted to say ‘<i>nabu’duka</i>’ and ‘<i>nasta’ inuka</i>’, nor is it permitted to say ‘<i>na’budu iyyaka</i>’ and ‘<i>nasta’inu iyyaka</i>’, putting the verb first before the object. One follows the wording of the Quran.	पर बददुआ देने वाले ने कहा: “तुझी से (इय्याक) मेरी मुराद है!” दूसरे ने जवाब दिया: “मैं तुझ से मुँह मोड़ता हूँ।” उन्होंने ताकीद के लिए मफ़ऊल को पहले ज़िक्र किया। इसमें यह हिकमत भी है कि मखलूक बंदा और उसकी इबादत, मअबूद पर मुक़द्दम न हो। इसी लिए यह कहना दुरुस्त नहीं कि “नअबुदुका” और “नस्तईनुका”, और न ही यह कहना दुरुस्त है कि “नअबुदु इय्याक” और “नस्तईनु इय्याक”, यानी फ़ेअल को मफ़ऊल से पहले लाया जाए। बल्कि कुरआन-ए-मजीद के अल्फ़ाज़ की पैरवी की जाती है।
Most reciters and scholars double the <i>ya</i>’ in <i>iyyaka</i> in both places, although Amr ibn Fā’id recited it as <i>iyak</i>. That is because he disliked the doubling of the <i>ya</i> since it is heavy and because there is a <i>kasra</i> before it. One turns away from this reading. ‘<i>You alone we ask for help</i>’ is adding one sentence to a prior one. Yahya ibn Waththab and al-Amash recite ‘<i>nista in</i>’. That is the dialect of the tribes of Tamim, Asad, Qays and Rabiah.	अक्सर कुर्रा और उलमा “इय्याक” में दोनों जगह या को तश्दीद के साथ पढ़ते हैं, जबकि अम्र बिन फ़ाईद ने इसे “इयाक” पढ़ा है। इसका कारण यह है कि वह या की तश्दीद को नापसंद करते थे, क्योंकि वह भारी लगती है और उससे पहले कसरा भी होता है। लेकिन इस क़िराअत को छोड़ दिया जाता है। “और सिर्फ़ तुझ ही से हम मदद मांगते हैं” एक पहले जुमले पर दूसरे जुमले का इज़ाफ़ा है। यह्या बिन वस्साब और अल-अमश “निस्तईन” पढ़ते हैं। यह बनी तमीम, असद, क़ैस और रबीआ क़बीलों की

	बोली है।
Guide us on the Straight Path	"हमें सीधे रास्ते की हिदायत अता फ़रमा।"
The words 'guide us' are a supplication, implying that this is something desired by the speaker from their Lord. It means: 'Direct us to the Straight Path and guide us to it. Show us Your guidance which will lead us to intimacy with You and nearness to You.' Some scholars say that Allah made this surah a model for all supplication. Half of it comprises His praise and half comprises our needs. The supplication which is in the surah is the best which one can use for supplication because these are words spoken by the Lord of the worlds. When you use it you make supplication using His words which He spoke. We find in a hadith: 'There is nothing Allah considers more noble than supplication.'	"हमें हिदायत दे" के अल्फ़ाज़ एक दुआ हैं, जिसका मतलब यह है कि यह ऐसी चीज़ है जिसे बंदा अपने रब से तलब कर रहा है। इसका मअनी है: "हमें सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई अता फ़रमा और उस पर चला। हमें अपनी वह हिदायत दिखा जो हमें तेरे कुर्ब और तेरी मुहब्बत व उन्स तक पहुँचा दे।" बाज़ उलमा कहते हैं कि अल्लाह तआला ने इस सूरत को हर दुआ के लिए एक नमूना बना दिया है। इसका निस्फ़ हिस्सा अल्लाह की हम्द व सना पर मुश्तमिल है और निस्फ़ हिस्सा बंदों की हाजात पर। इस सूरत में जो दुआ मौजूद है, वह दुआ के लिए बेहतरीन अल्फ़ाज़ हैं, क्योंकि यह रब्बुल आलमीन के अपने इरशाद किए हुए कलिमात हैं। पस जब बंदा इनके ज़रिए दुआ करता है तो गोया वह अल्लाह ही के सिखाए हुए अल्फ़ाज़ के साथ दुआ करता है। एक हदीस में आता है: "अल्लाह तआला के नज़दीक दुआ से ज़्यादा कोई चीज़ इज़्ज़त वाली नहीं।"
It is said that it means: 'Guide	कहा गया है कि इसका मतलब यह

us to follow the Sunnah in performing all the obligations we owe you.’ It is said that the root of the word ‘guide’ is inclination towards something. That can be seen in the words of the Almighty: ‘<i>We have truly turned (hudna) to you</i>’, meaning ‘we have inclined towards You,’ and the Prophet ﷺ went out leaning (<i>yatahadda</i>) between two men. Another facet of its meaning can be gleaned from the word <i>hadiyyah</i> (gift) because it moves from one owner to another. Yet another aspect of its meaning can be inferred from the word <i>hady</i> which is the term used for an animal driven to the Haram. From all this we can see that the meaning is: ‘Incline our hearts to the Truth.’	है: “हमें इस बात की हिदायत दे कि हम तेरे तमाम फ़राइज़ की अदायगी में सुन्नत की पैरवी करें।” यह भी कहा गया है कि लफ़्ज़ “हिदायत” की अस्ल किसी चीज़ की तरफ़ माइल होने के मअनी में है। इसी मअनी की तरफ़ अल्लाह तआला के इस फ़रमान में इशारा है: “हम यक़ीनन तेरी तरफ़ रुजू कर चुके (हुद्रा) हैं”, यानी “हम तेरी तरफ़ माइल हो गए हैं।” इसी तरह नबी ﷺ दो आदमियों के दरमियान सहारा लिए हुए निकले, जिसके लिए “यतहादा” का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है। इसके एक और मअनी का पहलू लफ़्ज़ “हदिया” (तौहफ़ा) से समझा जा सकता है, क्योंकि वह एक मालिक से दूसरे मालिक की तरफ़ मुत्तक़िल होता है। इसी तरह लफ़्ज़ “हद्य” से भी इसके मअनी का एक पहलू मालूम होता है, जो उस जानवर के लिए बोला जाता है जिसे हरम की तरफ़ ले जाया जाता है। इन तमाम मअनी से वाज़ेह होता है कि इसका मफ़हूम यह है: “हमारे दिलों को हक़ की तरफ़ माइल फ़रमा।”
Al-Fuḍayl ibn Iyad said the the Straight Path is the path of the hajj. This is a very specific	फ़ुज़ैल बिन इयाज़ ने कहा कि “सिरात-ए-मुस्तक़ीम” से मुराद हज्ज का रास्ता है। यह एक बहुत ख़ास

meaning and a general meaning is far more likely. Muhammad ibn al-Hanafiyyah said about the words, ‘<i>Guide us to the Straight Path</i>’, that they mean to the <i>din</i> of Allah and that no other kind of worship is accepted. Asim al-Ahwal said that Abu-l-Aliyah said, ‘The Straight Path is the Messenger of Allah ﷺ and his two companions after him.’ Asim said, ‘I said to al-Husayn that Abu-l-Aliyah said that the Straight Path was the Messenger of Allah ﷺ and his two companions after him. He said, “He spoke the truth and was faithful.”’	मअनी है, जबकि ज़्यादा ज़ाहिर बात यह है कि इसका मअनी आम और वसीअ है। मुहम्मद बिन अल-हनफ़िय्या ने “हमें सीधे रास्ते की हिदायत दे” के बारे में फ़रमाया कि इससे मुराद अल्लाह का दीन है, और इसी के सिवा किसी और इबादत को क़बूल नहीं किया जाता। आसिम अल-अहवल ने रिवायत किया कि अबू अल-आलिया ने फ़रमाया: “सिरात-ए-मुस्तक़ीम अल्लाह के रसूल ﷺ और आपके बाद आपके दो साथी हैं।” आसिम कहते हैं: “मैंने हुसैन से कहा कि अबू अल-आलिया ने फ़रमाया है कि सिरात-ए-मुस्तक़ीम रसूल अल्लाह ﷺ और आपके बाद आपके दो साथी हैं। तो उन्होंने फ़रमाया: ‘उन्होंने सच कहा और दुरुस्त बात बयान की।’”
The root meaning of <i>sirat</i> (path) in Arabic is ‘a way’. Amir ibn at-Ṭufayl said: We chased through their land with horses until we left them more abased than the way (<i>sirat</i>).	अरबी ज़बान में “सिरात” का अस्ल मअनी “रास्ता” है। आमिर बिन अत-तुफ़ैल ने कहा: “हमने घोड़ों के साथ उनकी सरज़मीन में तआकुब किया, यहाँ तक कि हमने उन्हें रास्ते (सिरात) से भी ज़्यादा ज़लील छोड़ दिया।”
An-Naqqash said that <i>sirat</i> means road in Greek. Ibn Atiyyah said, ‘This is very	अन-नक्काश ने कहा कि “सिरात” यूनानी ज़बान में सड़क के मअनी में है। इब्न-ए-अतिय्या ने कहा: “यह

weak indeed.’ It is also sometimes recited with a <i>sin</i> rather than a <i>sad</i>, from <i>istirat</i>, meaning ‘swallowing’, implying the swallowing up of the Path by the one who travels on it, and it is enunciated between a <i>zay</i> and <i>sad</i>. It is also recited as a pure <i>zay</i>, but <i>sin</i> is the root. Salamah related that al-Farra said that <i>zirat</i> with a pure <i>zay</i> is the dialect of Udhrāh, Kalb and Banu al-Qayn. He mentioned that they say ‘<i>azdaq</i>’ instead of ‘<i>asdaq</i>’ as they say ‘<i>azad</i>’ instead of ‘<i>asad</i>’.	क़ौल निहायत कमज़ोर है।” कभी इसे “साद” के बजाय “सीन” के साथ भी पढ़ा जाता है, जो “इस्तिरात” से माखूज़ है, जिसका मअनी “निगल जाना” है, गोया रास्ता अपने चलने वाले को निगल लेता है। और कभी इसे “ज़ाय” और “साद” के दरमियान आवाज़ के साथ अदा किया जाता है। इसी तरह इसे ख़ालिस “ज़ाय” के साथ भी पढ़ा गया है, लेकिन अस्ल हरफ़ “सीन” ही है। सलमा ने रिवायत किया कि अल-फ़र्रा ने कहा: “ज़िरात” को ख़ालिस “ज़ाय” के साथ पढ़ना क़बीला उज़्रह, कल्ब और बनू अल-क़ैन की बोली है। उन्होंने ज़िक्र किया कि ये लोग “अज़दक़” कहते हैं “असदक़” के बजाय, जैसे वह “अज़द” कहते हैं “असद” के बदले।”
<i>Sirat</i> is in the accusative as a second object because the verb “guide” is transitive, taking a second object either with the particle <i>bi</i> or without the particle. ‘Straight’ is an adjective describing ‘Path’ and it is one which has no crookedness or deviation in it. We find it used in the words of the Almighty: ‘<i>This is My Path</i>	“सिरात” मंसूब है बतौर दूसरे मफ़ऊल के, क्योंकि फ़ेअल “हिदायत देना” मुतअद्दी है और अपने साथ दूसरे मफ़ऊल को कभी हरफ़-ए-“बा” के साथ और कभी बग़ैर हरफ़ के लेता है। “मुस्तक़ीम” सिरात की सिफ़त है, और इससे मुराद ऐसा रास्ता है जिसमें न कोई टेढ़ापन हो और न इनहिराफ़। इसी मअनी में अल्लाह तआला का यह फ़रमान है: “यह मेरा रास्ता है और यह सीधा है,

<i>and it is straight, so follow it.</i>	पस इसी की पैरवी करो।”
The Path of those whom You have blessed	“उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इनआम फ़रमाया।”
This ‘Path’ is the same as the first and the meaning is: ‘continue to guide us’. Someone may be guided to the path and then be prevented from going along it. It is also said that it is another path and means knowledge of Allah Almighty and recognition of Him. Jafar ibn Muḥammad said that.	यह “रास्ता” वही पहला रास्ता है, और इसका मतलब है: “हमें इसी पर क़ाइम रखते हुए मुसलसल हिदायत अता फ़रमा।” क्योंकि मुमकिन है कि किसी शख्स को रास्ता दिखा दिया जाए, फिर वह उस पर चलने से रोक दिया जाए। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद एक दूसरा रास्ता है, यानी अल्लाह तआला की मआरिफ़त और उसकी पहचान। यह क़ौल जाफ़र बिन मुहम्मद ने बयान किया है।
There are ten readings of the word normally recited as <i>alayhim</i> used in this phrase. Most recite it as <i>alayhum</i> . It can be recited as <i>alayhum</i> , <i>alayhim</i> , <i>alayhimi</i> , <i>alayhimu</i> , <i>alayhumi</i> , <i>alayhumu</i> . These are the six forms related from the imams among the reciters. There are four other possibilities transmitted from the Arabs, but not related from the reciters.	इस जुमले में जो लफ़्ज़ आम तौर पर “अलैहिम” पढ़ा जाता है, उसकी दस क़िराअतें हैं। अक्सर कुर्रा इसे “अलैहिम” ही पढ़ते हैं। इसे “अलैहुम”, “अलैहिम”, “अलैहिमी”, “अलैहिमू”, “अलैहुमी” और “अलैहुमू” भी पढ़ा जा सकता है। ये वह छह सूरतें हैं जो अइम्मा-ए-कुर्रा से मनकूल हैं। इसके अलावा चार और सूरतें भी अरबों से मनकूल हैं, लेकिन वह कुर्रा से रिवायत नहीं की गईं।
Umar ibn al-Khattab and Ibn az-Zubayr recited <i>sirata man</i>	उमर बिन ख़त्ताब और इब्न-ए-जुबैर ने

(the path of him who) instead of <i>sirata alladhina</i> (the path of those who). People disagree about the identity of those who are blessed. The majority of commentators say that it means the Prophets, the people of truth, the martyrs and the righteous. They deduce that from the ayah in <i>Surat an-Nisa</i> which says: <i>'Whoever obeys Allah and the Messenger will be with those whom Allah has blessed: the Prophets and the true, the martyrs and the righteous. What excellent company such people are!'</i> It is clear from this ayah that these are the people who have been blessed by Allah and therefore those who are referred to in the <i>Fātiḥah</i> as following the Straight Path. Everything that has been said on this subject boils down to this and so there is no sense in mentioning all the different positions, and Allah is the One whom we ask for success.	"सिरात मन्" (उस शख्स का रास्ता) पढ़ा है, "सिरात अल्लज़ीन" (उन लोगों का रास्ता) के बजाय। उन लोगों की तअय्युन के बारे में इख़्तिलाफ़ है जिन पर इनआम फ़रमाया गया। अक्सर मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि इससे मुराद अंबिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन हैं। वह इस बात पर सूरह-ए-निसा की इस आयत से इस्तिदलाल करते हैं: "और जो अल्लाह और रसूल की इताअत करेगा, वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह ने इनआम फ़रमाया: यानी अंबिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन। और ये लोग कितने अच्छे साथी हैं!" इस आयत से वाज़ेह होता है कि यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने इनआम फ़रमाया, और यही वह लोग हैं जिन्हें सूरह-ए-फ़ातिहा में सिरात-ए-मुस्तक़ीम पर चलने वाला क़रार दिया गया है। इस मौज़ू पर जो कुछ भी कहा गया है, उसका खुलासा यही है, लिहाज़ा तमाम मुख़्तलिफ़ अक़वाल को ज़िक़्र करने में कोई ख़ास फ़ायदा नहीं। और कामयाबी देने वाला अल्लाह ही है, जिससे हम मदद तलब करते हैं।
This yah becomes a refutation	यह आयत क़दरिया, मोतज़िला और

of the Qadariyyah, Mutazilites and Shiah because they all believe that the will of a human being alone is enough to initiate his actions, obedience or disobedience. They believe that man is the creator of his own actions and so he does not need his Lord to originate them. Allah refutes them in this ayah since in it we ask Him for guidance to the Straight Path. If the matter had really been theirs and not their Lord's, they would not need to ask Him for guidance and to repeat that request in every prayer. They also pray to Him to avert from them what is disliked which are those things contrary to guidance. They say, <i>'the path of those whom You have blessed, not of those with anger on them nor of the misguided.'</i> As they ask Him to guide them, they also ask Him not to misguide them. That is how they pray, saying, <i>'Our Lord, do not make our hearts swerve aside after You have guided us.'</i>	शिया के खिलाफ़ एक दलील बनती है, क्योंकि ये सब इस बात के क़ाइल हैं कि इंसान का अपना इरादा ही उसके आमाल, इताअत या नाफ़रमानी के सादिर होने के लिए काफ़ी है। उनका अकीदा है कि इंसान अपने आमाल का खुद ख़ालिक़ है, लिहाज़ा उसे अपने रब की तरफ़ से उन आमाल के पैदा किए जाने की ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआला इस आयत में उनकी तरदीद फ़रमाता है, क्योंकि इसमें हम उससे सिरात-ए-मुस्तक़ीम की हिदायत मांगते हैं। अगर मामला वाक़ई इंसान के अपने इख़्तियार में होता और उसके रब के इख़्तियार में न होता, तो फिर उसे अल्लाह से हिदायत मांगने और हर नमाज़ में बार-बार इस दुआ को दोहराने की हाजत न होती। वह अल्लाह से यह दुआ भी करते हैं कि वह उनसे नापसंदीदा चीज़ों को दूर रखे, यानी वह उमूर जो हिदायत के खिलाफ़ हैं। चुनाँचे वह कहते हैं: "उन लोगों के रास्ते की जिन पर तू ने इनआम फ़रमाया, न उन लोगों के रास्ते की जिन पर ग़ज़ब हुआ और न गुमराहों के रास्ते की।" जिस तरह वह अल्लाह से हिदायत तलब करते हैं, उसी तरह यह भी दुआ करते हैं कि
--	--

	वह उन्हें गुमराह न करे। इसी मअनी में वह यह दुआ करते हैं: "ऐ हमारे रब! हमें हिदायत देने के बाद हमारे दिलों को टेढ़ा न कर देना।"
not of those with anger on them nor of the misguided	"न उन लोगों के रास्ते की जिन पर ग़ज़ब हुआ, और न गुमराहों के रास्ते की।"
There is also disagreement about the identity of ' <i>those with anger on them</i> ' and the ' <i>misguided</i> '. The majority say that ' <i>those with anger on them</i> ' are the Jews and ' <i>the misguided</i> ' are the Christians. That was explained by the Prophet ﷺ in the hadith of Adi ibn Hatim and the story of how he became Muslim, transmitted by Abu Dawud at-Tayalisi in his <i>Musnad</i> and at-Tirmidhi in his <i>Collection</i> . That explanation is also attested to by the Almighty who says about the Jews: ' <i>They brought down anger from Allah on themselves</i> ' and He says: ' <i>Allah is angry with them.</i> ' He says about the Christians that they ' <i>were misguided previously and have misguided many</i>	"जिन पर ग़ज़ब हुआ" और "गुमराहों" की तअय्युन के बारे में भी इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। अक्सर उलमा कहते हैं कि "जिन पर ग़ज़ब हुआ" से मुराद यहूद हैं और "गुमराहों" से मुराद नसारा हैं। इसकी वज़ाहत नबी ﷺ ने अदी बिन हातिम की हदीस में फ़रमाई, जिसमें उनके इस्लाम क़बूल करने का वाक़िआ मज़कूर है। इस रिवायत को अबू दाऊद तयालिसी ने अपनी "मुसन्नद" में और तिरमिज़ी ने अपनी "जामे" में नक़ल किया है। इस तफ़्सीर की ताईद अल्लाह तआला के उन इरशादात से भी होती है जो यहूद के बारे में हैं: "उन्होंने अपने ऊपर अल्लाह का ग़ज़ब ले लिया", और एक और जगह फ़रमाया: "अल्लाह उन पर ग़ज़बनाक हुआ।" इसी तरह नसारा के बारे में फ़रमाया कि वह "पहले ख़ुद गुमराह हुए और बहुत से दूसरों को भी गुमराह किया, और सीधे रास्ते से बहुत दूर जा पड़े।"

<i>others, and are far from the right way.'</i>	
It is also said that <i>'those with anger on them'</i> are the idolaters and that the misguided are the hypocrites. It is said that those with anger on them are those who omit the obligation of reciting this surah in the prayer, and the misguided are those who lose the blessing of its recitation. In <i>al-Haqaiq</i>, as-Sulami said – as did al-Mawardi in his commentary – that this is nonsense. Al-Mawardi said that this view is rejected because reports contradict it and a different view about it is widespread. Therefore it is not permitted to apply this judgment to it. It is said that <i>'those with anger on them'</i> refers to people who follow innovations and that the misguided are those who lose the <i>sunnahs</i> of guidance.	यह भी कहा गया है कि "जिन पर ग़ज़ब हुआ" से मुराद मुश्रिकीन हैं और "गुमराहों" से मुराद मुनाफ़िकीन हैं। एक क़ौल यह भी है कि "जिन पर ग़ज़ब हुआ" वह लोग हैं जो नमाज़ में इस सूरत की क़िराअत के फ़र्ज़ होने को तर्क करते हैं, और "गुमराह" वह हैं जो इसकी तिलावत की बरकत से महरूम हो जाते हैं। अस-सुलामी ने "अल-हक्काइक़" में — और इसी तरह अल-मावर्दी ने अपनी तफ़सीर में — कहा है कि यह बात लगव और बे-अस्ल है। अल-मावर्दी ने कहा कि यह क़ौल मर्दूद है, क्योंकि रिवायतें इसके खिलाफ़ हैं और इस बारे में एक दूसरा क़ौल मशहूर व मारूफ़ है, लिहाज़ा इस आयत पर यह हुक्म लागू करना जायज़ नहीं। यह भी कहा गया है कि "जिन पर ग़ज़ब हुआ" से मुराद अहल-ए-बिदअत हैं, और "गुमराह" वह लोग हैं जो सुन्नत-ए-हिदायत से महरूम हो जाते हैं।
This is good. The explanation of the Messenger of Allah ﷺ is more appropriate, higher and better. <i>'On them'</i> is in the nominative because it means:	यह क़ौल अच्छा है, लेकिन रसूल अल्लाह ﷺ की बयान की हुई तफ़सीर ज़्यादा मुनासिब, बुलंदतर और बेहतर है।

‘anger is on them.’ Linguistically <i>ghadab</i> (anger) means intensity of feeling. A man who is described as <i>ghadub</i> has a harsh character. <i>Ghadub</i> is also a foul malignant because of its severity. <i>Ghadbah</i> is a shield made of camel-hide, one part which is folded over the other. It is called that because of its strength. The meaning of anger when it is attributed to Allah is the will to punish; it is an attribute of the Essence since the will of Allah is one of the attributes of the Essence. It is also said to mean the punishment itself. A corroboration of that view is the hadith: ‘Sadaqah extinguishes the anger of the Lord.’ It describes the action.	“अलैहिम” महल के एतिबार से मरफूअ है, क्योंकि इसका मअनी है: “उन पर गज़ब है।” लुगवी एतिबार से “गज़ब” शिद्दत-ए-एहसास को कहते हैं। जिस आदमी को “गज़ूब” कहा जाए, उसकी तबीयत सख्त और तुंद होती है। “गज़ूब” एक महलक और सख्त क्रिस्म के ज़ख्म या बीमारी को भी कहा जाता है, उसकी शिद्दत की वजह से। इसी तरह “गज़बह” ऊँट की खाल से बनी हुई ढाल को कहते हैं जिसका एक हिस्सा दूसरे पर तह किया गया हो, और उसे यह नाम उसकी मज़बूती की वजह से दिया गया है। जब गज़ब की निस्बत अल्लाह तआला की तरफ़ की जाए तो उससे मुराद सज़ा देने का इरादा होता है, और यह सिफ़ात-ए-ज़ात में से है, क्योंकि अल्लाह की मशीअत व इरादा सिफ़ात-ए-ज़ात में शामिल हैं। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद खुद सज़ा है। इस क़ौल की ताईद इस हदीस से होती है: “सदक़ा रब के गज़ब को बुझा देता है।” इसमें गज़ब से मुराद फ़ैअल यानी सज़ा को बयान किया गया है।
The word “misguidance” (<i>dalal</i>) in Arabic means ‘missing the target and straying	अरबी ज़बान में “ज़लाल” (गुमराही) का मअनी है: “निशाने से चूक जाना और राह-ए-हक़ से भटक जाना।”

from the path of Truth.' One way the word is used is to describe when milk dissolves (<i>dalla</i>) in water. It is also used in the ayah: '<i>When we have been absorbed (dalalna) into the earth</i>', i.e. we disappear by death and become dust. It is said: Did you not ask so that the houses inform you about where the disappeared (<i>mudallal</i>) has gone?	इस लफ़्ज़ का एक इस्तेमाल उस वक़्त होता है जब दूध पानी में घुल मिल जाए (ज़ल्ला)। इसी तरह यह अल्लाह तआला के इस फ़रमान में भी इस्तेमाल हुआ है: "जब हम ज़मीन में गुम हो जाएंगे (ज़लल्ला)" यानी हम मौत के बाद फ़ना होकर मिट्टी बन जाएंगे। एक शायर ने कहा: "क्या तुमने घरों से यह न पूछा कि वह गुमशुदा शख्स कहाँ चला गया?"
<i>Daldala</i> is a smooth stone which water has turned over again and again in a valley. Similarly <i>ghadbah</i> is a stone found in the mountains which has various colours.	"ज़लज़ला" उस हमवार पत्थर को कहते हैं जिसे पानी ने वादी में बार-बार उलट-पुलट कर नरम और चिकना बना दिया हो। इसी तरह "ग़ड़बह" उस पत्थर को कहा जाता है जो पहाड़ों में पाया जाता है और जिसमें मुख़लिफ़ रंग होते हैं।
Umar ibn al-Khattab and Ubayy ibn Kab inserted a second <i>ghayri</i> before <i>dallin</i>. It is related from the two of them with the <i>ra</i> in the accusative and genitive on both letters. If it is in the genitive, it is an appositive for 'those' or for '<i>hum</i>' in 'on them' or as an adjective of 'those' which is	उमर बिन ख़त्ताब और उबय्य बिन कअब ने "अद्वाल्लीन" से पहले एक दूसरा "ग़ैरि" भी पढ़ा है। इन दोनों से यह क़िराअत दोनों "रा" के साथ हालत-ए-नसब और जर दोनों सूरतों में मनकूल है। अगर यह जर के साथ हो तो यह "अल्लज़ीन" का बदल होगा, या "अलैहिम" में मौजूद ज़मीर "हुम" का बदल होगा, या फिर "अल्लज़ीन" की सिफ़त होगा,

definite. Definite nouns do not have indefinite adjectives just as indefinite nouns do not have definite adjectives. However, 'those' here can be undefined and general and so the words are like your words, 'I passed by someone like you and showed honour to him,' or it is because the word <i>ghayr</i> makes something definite because it can only be one of two things without any other possibility, as you say, 'The living is not (<i>ghayr</i>) the dead'; 'the one who is still is not (<i>ghayr</i>) the one who is moving'; and 'the one who is standing is not (<i>ghayr</i>) the one who is sitting.'	हालाँकि वह मारिफ़ा है। और उसूल यह है कि मारिफ़ा इस्म की सिफ़त नकरा नहीं आती, जैसे नकरा इस्म की सिफ़त मारिफ़ा नहीं आती। अलबत्ता यहाँ "अल्लज़ीन" को ग़ैर-मुअय्यन और आम माना जा सकता है, तो इस सूरत में कलाम ऐसा होगा जैसे तुम कहते हो: "मैं एक तुम जैसे शख्स के पास से गुज़रा और मैंने उसकी इज़्ज़त की।" या फिर इस लिए कि लफ़्ज़ "ग़ैर" अपने मुज़ाफ़ इलैह को एक खास पहचान दे देता है, क्योंकि वह दो चीज़ों में से एक ही हो सकती है और उसके अलावा कोई तीसरी सूरत नहीं होती। जैसे तुम कहते हो: "ज़िन्दा मुर्दा के ग़ैर है"; "साकिन मुतहर्रिक के ग़ैर है"; और "खड़ा बैठे हुए के ग़ैर है।"
There is disagreement about the <i>la</i> in 'nor (<i>wala</i>) of the misguided'. It is said that it is redundant as at-Tabari says. It is also said that it is for stress and is added so that no one will suppose that 'misguided' is added to 'those'. Makki and al-Mahdawi related it. The Kufans said that <i>la</i> means <i>ghayr</i> and that is the reading of Amr and	"वला अद्दाल्लीन" में मौजूद "ला" के बारे में इख़्तिलाफ़ है। तबरी कहते हैं कि यह ज़ाइद है। यह भी कहा गया है कि यह ताकीद के लिए लाया गया है, ताकि कोई यह गुमान न करे कि "अद्दाल्लीन" का अत्फ़ "अल्लज़ीन" पर है। यह क़ौल मक्की और अल-महदावी ने नक़ल किया है। कूफ़ियों ने कहा है कि यहाँ "ला" का मअनी "ग़ैर" है, और यही क़िराअत अम्र और उबय्य से मनकूल है। "अद्दाल्लीन"

Ubayy. The root of <i>dallin</i> is <i>Zalilin</i> and the vowel of the first <i>lam</i> has been elided and then the <i>lam</i> assimilated into the other <i>lam</i> .	की अस्ल "ज़ालिलीन" है। फिर पहले "लाम" की हरकत हज़फ़ कर दी गई, और उसके बाद एक "लाम" को दूसरी "लाम" में इदग़ाम कर दिया गया।
--	---